हिंदी

लोकवाणी

दसवीं कक्षा

शासन निर्णय क्रमांक : अभ्यास–२११६/(प्र.क्र.४३/१६) एसडी–४ दिनांक २५.४.२०१६ के अनुसार समन्वय समिति का गठन किया गया । दि. २९.१२.२०१७ को हुई इस समिति की बैठक में यह पाठ्यपुस्तक निर्धारित करने हेतु मान्यता प्रदान की गई ।

हिंदी
लोकवाणी
दसवीं कक्षा

मेरा नाम ________________ है ।

महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ, पुणे

CGFEGT

आपके स्मार्टफोन में 'DIKSHA App' द्वारा, पुस्तक के प्रथम पृष्ठ पर Q.R.Code के माध्यम से डिजिटल पाठ्यपुस्तक एवं प्रत्येक पाठ में अंतर्निहित Q.R.Code में अध्ययन–अध्यापन के लिए पाठ से संबंधित उपयुक्त दृक–श्राव्य सामग्री उपलब्ध कराई जाएगी ।

प्रथमावृत्ति : २०१८ © महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ, पुणे - ४११००४
इस पुस्तक का सर्वाधिकार महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ के अधीन सुरक्षित है। इस पुस्तक का कोई भी भाग महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ के संचालक की लिखित अनुमति के बिना प्रकाशित नहीं किया जा सकता।

हिंदी भाषा समिति

डॉ.हेमचंद्र वैद्य - अध्यक्ष
डॉ.छाया पाटील - सदस्य
प्रा.मैनोद्दीन मुल्ला - सदस्य
डॉ.दयानंद तिवारी - सदस्य
श्री रामहित यादव - सदस्य
श्री संतोष धोत्रे - सदस्य
डॉ.सुनिल कुलकर्णी - सदस्य
श्रीमती सीमा कांबळे - सदस्य
डॉ.अलका पोतदार - सदस्य - सचिव

हिंदी भाषा अभ्यासगट

डॉ. वर्षा पुनवटकर
सौ. वृंदा कुलकर्णी
सौ. रंजना पिंगळे
श्रीमती पूर्णिमा पांडेय
श्रीमती माया कोथळीकर
श्रीमती शारदा बियानी
श्री संजय भारद्वाज
डॉ. शुभदा मोघे
डॉ. प्रमोद शुक्ल
श्री धन्यकुमार बिराजदार
डॉ. रत्ना चौधरी
श्री सुमंत दळवी
श्रीमती रजनी म्हैसाळकर
डॉ. आशा वी. मिश्रा
श्रीमती मीना एस. अग्रवाल
श्रीमती भारती श्रीवास्तव
डॉ. शैला ललवाणी
डॉ. शोभा बेलखोडे
डॉ. बंडोपंत पाटील
श्री रामदास काटे
श्री सुधाकर गावंडे
श्रीमती गीता जोशी
श्रीमती अर्चना भुस्कुटे
डॉ. रीता सिंह
सौ. शशिकला सरगर
श्री एन. आर. जेवे
श्रीमती निशा बाहेकर

प्रकाशक :

श्री विवेक उत्तम गोसावी
नियंत्रक
पाठ्यपुस्तक निर्मिती मंडळ
प्रभादेवी, मुंबई-२५

निमंत्रित सदस्य

श्री ता. का. सूर्यवंशी
श्रीमती उमा ढेरे

संयोजन :

डॉ.अलका पोतदार, विशेषाधिकारी हिंदी भाषा, पाठ्यपुस्तक मंडळ, पुणे
सौ. संध्या विनय उपासनी, विषय सहायक हिंदी भाषा, पाठ्यपुस्तक मंडळ, पुणे

मुखपृष्ठ : मयूरा डफळ
चित्रांकन : श्री राजेश लवळेकर

निर्मिति :
श्री सच्चितानंद आफळे, मुख्य निर्मिति अधिकारी
श्री राजेंद्र चिंदरकर, निर्मिति अधिकारी
श्री राजेंद्र पांडलोसकर,सहायक निर्मिति अधिकारी

अक्षरांकन : भाषा विभाग,पाठ्यपुस्तक मंडळ, पुणे
कागज : ७० जीएसएम, क्रीमवोव
मुद्रणादेश : N/PB/2018-19/0.75
मुद्रक : M/s. Hitech Graphics, Panvel

भारत का संविधान

उद्देशिका

हम, **भारत के लोग,** भारत को एक **संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न समाजवादी पंथनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य** बनाने के लिए, तथा उसके समस्त नागरिकों को :

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक **न्याय,**

विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म

और उपासना की **स्वतंत्रता,**

प्रतिष्ठा और अवसर की **समता**

प्राप्त कराने के लिए,

तथा उन सब में

व्यक्ति की गरिमा और राष्ट्र की एकता

और अखंडता सुनिश्चित करने वाली **बंधुता**

बढ़ाने के लिए

दृढ़संकल्प होकर **अपनी इस संविधान सभा में** आज तारीख 26 नवंबर, 1949 ई. (मिति मार्गशीर्ष शुक्ला सप्तमी, संवत् दो हजार छह विक्रमी) **को एतद् द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं ।**

राष्ट्रगीत

जनगणमन – अधिनायक जय हे
भारत – भाग्यविधाता ।
पंजाब, सिंधु, गुजरात, मराठा,
द्राविड, उत्कल, बंग,
विंध्य, हिमाचल, यमुना, गंगा,
उच्छल जलधितरंग,
तव शुभ नामे जागे, तव शुभ आशिस मागे,
गाहे तव जयगाथा,
जनगण मंगलदायक जय हे,
भारत – भाग्यविधाता ।
जय हे, जय हे, जय हे,
जय जय जय, जय हे ।।

प्रतिज्ञा

भारत मेरा देश है । सभी भारतीय मेरे भाई–बहन हैं ।

मुझे अपने देश से प्यार है । अपने देश की समृद्ध तथा विविधताओं से विभूषित परंपराओं पर मुझे गर्व है ।

मैं हमेशा प्रयत्न करूँगा/करूँगी कि उन परंपराओं का सफल अनुयायी बनने की क्षमता मुझे प्राप्त हो ।

मैं अपने माता–पिता, गुरुजनों और बड़ों का सम्मान करूँगा/करूँगी और हर एक से सौजन्यपूर्ण व्यवहार करूँगा/करूँगी ।

मैं प्रतिज्ञा करता/करती हूँ कि मैं अपने देश और अपने देशवासियों के प्रति निष्ठा रखूँगा/रखूँगी । उनकी भलाई और समृद्धि में ही मेरा सुख निहित है ।

प्रस्तावना

प्रिय विद्यार्थियो,

आपकी उत्सुकता एवं अभिरुचि को ध्यान में रखते हुए नवनिर्मित लोकवाणी दसवीं कक्षा की पुस्तक को रंगीन, आकर्षक एवं वैविध्यपूर्ण स्वरूप प्रदान किया गया है । रंग-बिरंगी, मनमोहक, ज्ञानवर्धक एवं कृतिप्रधान यह पुस्तक आपके हाथों में सौंपते हुए हमें अत्यधिक हर्ष हो रहा है ।

हमें ज्ञात है कि आपको गाना सुनना-पढ़ना, गुनगुनाना प्रिय है । कथा-कहानियों की दुनिया में विचरण करना मनोरंजक लगता है । आपकी इन मनोनुकूल भावनाओं को दृष्टिगत रखते हुए इस पुस्तक में कविता, गीत, गजल, नई कविता, पद, बहुरंगी कहानियाँ, निबंध, हास्य-व्यंग्य, संस्मरण, साक्षात्कार, एकांकी आदि साहित्यिक विधाओं का समावेश किया गया है । यही नहीं, हिंदी की अत्याधुनिक विधा 'हाइकु' को भी प्रथमत: इस पुस्तक में स्थान दिया गया है । ये विधाएँ केवल मनोरंजक ही नहीं अपितु ज्ञानार्जन, भाषाई कौशलों-क्षमताओं के विकास के साथ-साथ चरित्र निर्माण, राष्ट्रीय भावना को सदृढ़ करने तथा सक्षम बनाने के लिए भी आवश्यक रूप से दी गई हैं । इन रचनाओं के चयन का आधार आयु, रुचि, मनोविज्ञान, सामाजिक स्तर आदि को बनाया गया है ।

बदलती दुनिया की नई सोच, वैज्ञानिक दृष्टि तथा अभ्यास को सहज एवं सरल बनाने के लिए इन्हें संजाल, प्रवाह तालिका, विश्लेषण आदि विविध कृतियों, उपयोजित लेखन, भाषाबिंदु आदि के माध्यम से पाठ्यपुस्तक में समाहित किया गया है । आपकी सर्जना और पहल को ध्यान में रखते हुए क्षमताधारित-श्रवणीय, संभाषणीय, पठनीय, लेखनीय द्‌वारा अध्ययन-अध्यापन को अधिक व्यापक और रोचक बनाया गया है । आपके ज्ञान में अभिवृद्‌धि के लिए 'ऐप' के माध्यम से 'क्यू. आर.कोड,' में अतिरिक्त दृक-श्राव्य सामग्री उपलब्ध कराई जाएगी । अध्ययन अनुभव हेतु इसका निश्चित ही उपयोग हो सकेगा ।

मार्गदर्शक के बिना लक्ष्य की प्राप्ति नहीं हो सकती । अत: आवश्यक उद्‌देश्यों की पूर्ति हेतु अभिभावकों, शिक्षकों का सहयोग तथा मार्गदर्शन आपके विद्‌यार्जन को सुकर एवं सफल बनाने में सहायक सिद्‌ध होगा । विश्वास है कि आप सब पाठ्यपुस्तक का कुशलतापूर्वक उपयोग करते हुए हिंदी विषय के प्रति विशेष अभिरुचि, आत्मीयता एवं उत्साह प्रदर्शित करेंगे ।

हार्दिक शुभकामनाएँ !

(डॉ. सुनिल मगर)
संचालक
महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व
अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ, पुणे-०४

पुणे
दिनांक : १८ मार्च २०१८, गुढ़ीपाड़वा
भारतीय सौर दिनांक : २७ फाल्गुन १९३९

✻ अनुक्रमणिका ✻

पहली इकाई

क्र.	पाठ का नाम	विधा	रचनाकार	पृष्ठ
१.	सोंधी सुगंध	गीत	डॉ. कृपाशंकर शर्मा 'अचूक'	१-२
२.	खोया हुआ आदमी	वर्णनात्मक कहानी	सुशांत सुप्रिय	३-७
३.	सफर का साथी सिरदर्द	हास्य-व्यंग्य निबंध	रामनारायण उपाध्याय	८-१३
४.	जिन ढूँढ़ा	दोहे	संत कबीर	१४-१५
५.	अनोखे राष्ट्रपति	संस्मरण	महादेवी वर्मा	१६-२१
६.	ऐसा भी होता है (पठनार्थ)	हाइकु	अभिषेक जैन	२२-२३
७.	दो लघुकथाएँ	लघुकथा	संतोष सुपेकर	२४-२६
८.	कर्मवीर	प्रेरक कविता	अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'	२७-२८

दूसरी इकाई

क्र.	पाठ का नाम	विधा	रचनाकार	पृष्ठ
१.	मातृभूमि	कविता	मैथिलीशरण गुप्त	२९-३०
२.	कलाकार	संवादात्मक कहानी	राजेंद्र यादव	३१-३५
३.	मुकदमा : हवा-पानी का	एकांकी	गोविंद शर्मा	३६-४१
४.	दो गजलें	गजल	राजेश रेड्डी	४२-४४
५.	चार हाथ चाँदना (पठनार्थ)	साक्षात्कार	अमृता प्रीतम	४५-४८
६.	अति सोहत स्याम जू	सवैया	रसखान	४९-५०
७.	प्रकृति संवाद	ललित निबंध	रामदरश मिश्र	५१-५४
८.	ऐसा वसंत कब आएगा ?	गीत	जगन्नाथ प्रसाद 'मिलिंद'	५५-५७
	व्याकरण एवं रचना विभाग तथा भावार्थ			५८-६२

भाषा विषयक क्षमता

यह अपेक्षा है कि दसवीं कक्षा के अंत तक विद्‌यार्थियों में भाषा संबंधी निम्नलिखित क्षमताएँ विकसित हों ।

अ.क्र.	क्षमता	क्षमता विस्तार
१.	श्रवण	१. गद्‌य-पद्‌य की रसानुभूति एवं आकलन करते हुए सुनना/सुनाना । २. विविध माध्यमों के कार्यक्रमों का आकलन करते हुए सुनना तथा विश्लेषण करना । ३. प्राप्त वैश्विक जानकारी सुनकर तर्कसहित सुनाना ।
२.	भाषण-संभाषण	१. विविध कार्यक्रमों में सहभागी होकर संबंधित विषयों पर अपने विचार प्रकट करना । २. विभिन्न विषयों पर आत्मविश्वासपूर्वक, निर्भीकता के साथ मंतव्य प्रकट करना । ३. अंतरराष्ट्रीय विषयों पर विचार-विमर्श चर्चा करना । ४. दैनिक व्यवहार में शुद्‌ध और मानक ध्वनियों के साथ स्वमत व्यक्त करना ।
३.	वाचन	१. आरोह-अवरोहयुक्त विरामचिह्नों के सही प्रयोग के साथ प्रभावोत्पादक प्रकट वाचन करना । २. गद्‌य-पद्‌य साहित्यिक विधाओं का विश्लेषण करते हुए अर्थपूर्ण वाचन करना । ३. हिंदीतर रचनाकारों की हिंदी रचनाओं का भाव एवं अर्थपूर्ण वाचन करना । ४. देश-विदेश के अनूदित लोकसाहित्य के संदर्भ में तुलनात्मक वाचन करना । ५. आकलन सहित गति के साथ मौन वाचन करना । अनुवाचन, मुखरवाचन, मौन वाचन का अभ्यास ।
४.	लेखन	१. स्वयंप्रेरणा से विराम चिह्नों सहित शुद्‌ध लेखन करना । स्वयंप्रेरणा से विविध प्रकार के सुडौल, सुपाठ्‌य, शुद्‌ध लेखन करना । २. अनुलेखन, सुवाच्य लेखन, सुलेखन, शुद्‌ध लेखन, स्वयंस्फूर्त लेखन का क्रमशः अभ्यास करना । ३. स्वयंस्फूर्त भाव से रूपरेखा एवं शब्द संकेतों के आधार पर कहानी, निबंध, पत्र, विज्ञापन आदि का स्वतंत्र लेखन करना । ४. अपठित गद्‌यांशों, पद्‌यांशों पर आधारित प्रश्न निर्मिति करना ।
५.	भाषा अध्ययन (व्याकरण)	❋ छठी से दसवीं कक्षा के विद्‌यार्थियों के लिए भाषा अध्ययन के मुख्य घटक नीचे दिए गए हैं : प्रत्येक कक्षा के पाठ्‌यांशों पर आधारित चुने हुए घटकों को प्रसंगानुसार श्रेणीबद्‌ध रूप में समाविष्ट किया है । घटकों का चयन करते समय विद्‌यार्थियों की आयुसीमा, रुचि और पुनरावर्तन का अभ्यास आदि मुद्‌दों को ध्यान में रखा गया है । प्रत्येक कक्षा के लिए समाविष्ट किए गए घटकों की सूची संबंधित कक्षा की पाठ्‌यपुस्तक में समाविष्ट की गई है । अपेक्षा है कि विद्‌यार्थियों में दसवीं कक्षा के अंत तक सभी घटकों की सर्वसामान्य समझ निर्माण होगी । समानार्थी, विलोम शब्द, लिंग, वचन, शब्दयुग्म, उपसर्ग, प्रत्यय, हिंदी-मराठी समोच्चारित भिन्नार्थक शब्द, संज्ञा भेद, सर्वनाम भेद, विशेषण भेद, क्रिया भेद, अव्यय भेद, काल भेद, कारक, कारक चिह्न, उद्‌देश्य-विधेय और वाक्य परिवर्तन, विरामचिह्न, मुहावरे, कहावतें, वर्ण विच्छेद, वर्णमेल, संधि भेद, शब्द, वाक्य शुद्‌धीकरण, रचना के अनुसार तथा अर्थ के अनुसार वाक्य भेद, कृदंत, तद्‌धित, शब्द समूह के लिए एक शब्द ।
६.	अध्ययन कौशल	१. सुवचन, उद्‌धरण, सुभाषित, मुहावरे, कहावतें आदि का संकलन करते हुए प्रयोग । २. विभिन्न स्रोतों से जानकारी का संकलन, टिप्पणी तैयार करना । ३. आकृति, आलेख, चित्र का स्पष्टीकरण करने हेतु मुद्‌दों का लेखन, प्रश्न निर्मिति करना । ४. विभिन्न विषयों पर स्फूर्तभाव से लिखित-मौखिक अभिव्यक्ति ।

शिक्षकों के लिए मार्गदर्शक बातें ....

अध्ययनअनुभव देने से पहले क्षमता विधान, प्रस्तावना, परिशिष्ट, आवश्यक रचनाएँ एवं समग्र रूप से पाठ्यपुस्तक का अध्ययन आवश्यक है। किसी भी गद्य-पद्य के प्रारंभ के साथ ही कवि/लेखक परिचय, उनकी प्रमुख कृतियों और गद्य/पद्य के संदर्भ में विद्यार्थियों से चर्चा करना आवश्यक है। प्रत्येक पाठ की प्रस्तुति के उपरांत उसके आशय/भाव के दृढ़ीकरण हेतु प्रत्येक पाठ में 'शब्द संसार', विविध 'कृतियाँ', 'उपयोजित लेखन' अभिव्यक्ति, 'भाषा बिंदु', 'श्रवणीय', 'संभाषणीय', 'पठनीय', 'लेखनीय' आदि कृतियाँ भी दी गई हैं। इनका सतत अभ्यास कराएँ।

सूचनानुसार कृतियों में संजाल, कृति पूर्ण करना, भाव/अर्थ/केंद्रीय भाव लेखन, पद्य विश्लेषण, कारण लेखन, प्रवाह तालिका, उचित घटनाक्रम लगाना, सूची तैयार करना, उपसर्ग/प्रत्यय, समोच्चारित-भिन्नार्थी शब्दों के अर्थ लिखना आदि विविध कृतियाँ दी गई हैं। ये सभी कृतियाँ संबंधित पाठ पर ही आधारित हैं। इनका सतत अभ्यास करवाने का उत्तरदायित्व आपके ही सबल कंधों पर है।

पाठों में 'श्रवणीय', 'संभाषणीय', 'पठनीय', 'लेखनीय' के अंतर्गत दी गई अध्ययन सामग्री भी क्षमता विधान पर ही आधारित है। ये सभी कृतियाँ पाठ के आशय को आधार बनाकर विद्यार्थियों को पाठ और पुस्तक से बाहरी दुनिया में विचरण करने का अवसर प्रदान करती हैं। अतः शिक्षक/अभिभावक अपने निरीक्षण में इन कृतियों का अभ्यास अवश्य कराएँ। परीक्षा में इनपर प्रश्न पूछना आवश्यक नहीं है। विद्यार्थियों के कल्पना पल्लवन, मौलिक सृजन एवं स्वयंस्फूर्त लेखन हेतु 'उपयोजित लेखन' दिया गया है। इसके अंतर्गत प्रसंग/ विषय दिए गए हैं। इनके द्वारा विद्यार्थियों को रचनात्मक विकास का अवसर प्रदान करना आवश्यक है।

विद्यार्थियों की भावभूमि को ध्यान में रखकर पुस्तक में मध्यकालीन कवियों के पद, दोहे, सवैया साथ ही कविता, गीत, गजल, बहुविध कहानियाँ, हास्य-व्यंग्य, निबंध, संस्मरण, साक्षात्कार, एकांकी आदि साहित्यिक विधाओं का विचारपूर्वक समावेश किया गया है। इतना ही नहीं अत्याधुनिक विधा 'हाइकु' को भी प्रथमतः पुस्तक में स्थान दिया गया है। इसके साथ-साथ व्याकरण एवं रचना विभाग तथा मध्यकालीन काव्य के भावार्थ पाठ्यपुस्तक के अंत में दिए गए हैं। जिससे अध्ययन-अध्यापन में सरलता होगी।

पाठों में दिए गए 'भाषा बिंदु' व्याकरण से संबंधित हैं। यहाँ पाठ, पाठ्यपुस्तक एवं पाठ्यपुस्तकेतर भी प्रश्न पूछे गए हैं। व्याकरण पारंपरिक रूप से न पढ़ाकर कृतियों और उदाहरणों द्वारा संकल्पना को विद्यार्थियों तक पहुँचाया जाए। 'पठनार्थ' सामग्री कहीं न कहीं पाठों को ही पोषित करती है। यह विद्यार्थियों की रुचि एवं उनमें पठन संस्कृति को बढ़ावा देती है। अतः इसका वाचन अवश्य करवाएँ। उपरोक्त सभी अभ्यास करवाते समय 'परिशिष्ट' में दिए गए सभी विषयों को ध्यान में रखना अपेक्षित है। पाठ के अंत में दिए गए संदर्भों से विद्यार्थियों को स्वयं अध्ययन हेतु प्रेरित करें।

आवश्यकतानुसार पाठ्येतर कृतियों, भाषाई खेलों, संदर्भों-प्रसंगों का भी समावेश अपेक्षित है। आप सब पाठ्यपुस्तक के माध्यम से नैतिक मूल्यों, जीवन कौशलों, केंद्रीय तत्त्वों, संवैधानिक मूल्यों के विकास के अवसर विद्यार्थियों को अवश्य प्रदान करें। पाठ्यपुस्तक में अंतर्निहित प्रत्येक संदर्भ का सतत मूल्यमापन अपेक्षित है। आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि आप सभी शिक्षक इस पुस्तक का सहर्ष स्वागत करेंगे।

१. सोंधी सुगंध

– डॉ. कृपाशंकर शर्मा 'अचूक'

सोंधी-सोंधी-सी सुगंध, माटी से बोली,
बादल बरस गया, धरती ने आँखें खोलीं ।

चारों ओर हुई हरियाली कहे मयूरा,
सदियों का जो सपना है हो जाए पूरा ।
एक यहाँ पर नहीं अकेला, होगी टोली,
सोंधी-सोंधी-सी सुगंध, माटी से बोली ।।

बाग-बगीचे, ताल-तलैया सब मुस्काएँ,
झूम-झूमकर मस्ती में तरु गीत सुनाएँ ।
मस्त पवन ने अब खोली है अपनी झोली,
सोंधी-सोंधी-सी सुगंध, माटी से बोली ।।

सागर का जो था मंसूबा सफल हो गया,
खुशियों की दुनिया में आकर स्वयं खो गया ।
धरती ने श्रृंगार किया, फिर माथे रोली,
सोंधी-सोंधी-सी सुगंध, माटी से बोली ।।

पावस का मधुमास आस-विश्वास बढ़ाता,
नत मस्तक होकर 'अचूक' पद पुष्प चढ़ाता ।
सदा-सदा से चलती आई हँसी-ठिठोली,
सोंधी-सोंधी-सी सुगंध, माटी से बोली ।।

('नदी उफान भरे' गीत संग्रह से)

— ० —

परिचय

जन्म : १९४९, एटा (उ.प्र.)

परिचय : डॉ. कृपाशंकर शर्मा 'अचूक' जी हिंदी साहित्य की विविध विधाओं में लिखते रहे हैं । आपने गीत, गजल, कविताएँ, दोहे एवं समीक्षाएँ लिखी हैं । इनके साथ-ही-साथ आपने बालगीत तथा बाल कहानियों में भी उल्लेखनीय लेखन किया है ।

प्रमुख कृतियाँ : 'फिर भी कहना शेष रह गया', 'नदी उफान भरे' (गीत संग्रह), 'गीत खुशी के गाओ तुम' (बालगीत संग्रह) आदि ।

पद्य संबंधी

प्रस्तुत गीत में कवि ने वर्षा ऋतु का वर्णन किया है । वर्षा में प्रकृति के विविध रूपों, पेड़-पौधों, नदी-तालाबों आदि में होने वाले परिवर्तनों का यहाँ सजीव एवं मनोहारी वर्णन किया गया है ।

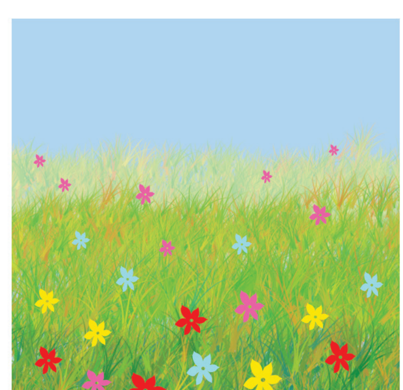

शब्द संसार

सोंधी वि.(दे.) = सुगंधित

मंसूबा पुं. सं.(अ.) = विचार, इरादा

रोली स्त्री.सं(हिं) = हल्दी-चूने का चूर्ण

मधुमास पुं.सं.(सं) = वसंत ऋतु

स्वाध्याय

* सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :-

(१) कृति पूर्ण कीजिए :

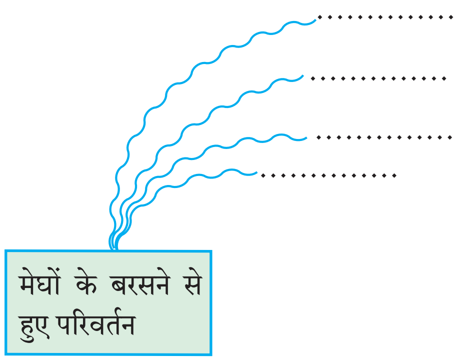

(२) कृति पूर्ण कीजिए :

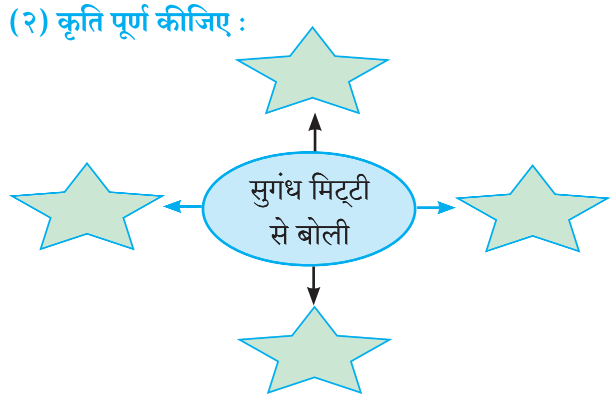

(३) गीत में प्रयुक्त क्रियारूप लिखिए :

१. बाग-बगीचे, ताल-तलैया ---------

२. झूम-झूमकर मस्ती में तरु गीत ---------

३. मधुमास आस-विश्वास ---------

४. धरती ने ---------

(४) उपसर्ग-प्रत्यय लगाकर शब्द लिखिए :

अभिव्यक्ति प्रस्तुत गीत की प्रथम चार पंक्तियों का भावार्थ लिखिए ।

भाषा बिंदु वर्तनी के अनुसार शुद्ध शब्द छाँटकर लिखिए :

१. विश्वास/विशवास/विसवास ----------

२. मसतक/मस्थक/मस्तक ----------

३. पथ्थर/पत्तर/पत्थर ----------

४. कुरीति/कूरिति/कुरिती ----------

५. चिन्ह/चीह्न/चिह्न ----------

६. इकठठा/इकठ्ठा/इकट्‌ठा ----------

७. खुबसुरत/खूबसुरत/खूबसूरत ----------

८. विद्यापीठ/विद्‌यापीठ/विद्यापिठ ----------

९. बुद्धी/बुध्दी/बुद्धि ----------

१०. परिक्षार्थि/परीक्षार्थि/परीक्षार्थी ----------

उपयोजित लेखन निम्नलिखित सुवचन पर आधारित कहानी लिखिए :

'स्वास्थ्य ही संपदा है ।'

२. खोया हुआ आदमी

– सुशांत सुप्रिय

कई वर्षों की बात है । एक पुराना गाँव था । एक आदमी न जाने कहाँ से भटकता हुआ दूर-दराज के उस गाँव में आ पहुँचा था । गाँव के कुत्तों ने जब चीथड़ों में लिपटे उस अजीब आदमी को देखा तो उन्हें वह कोई पागल लगा । वे उसपर बेतहाशा भौंकने लगे । गाँव के बच्चे खेल रहे थे । कुत्तों की देखा-देखी गाँव के बच्चे भी पूरी दोपहर उसे छेड़ते और तंग करते रहे । आश्चर्य की बात यह थी कि वह आदमी उन बच्चों को कुछ बोल नहीं रहा था । संयोग से किसी भले आदमी ने गाँव के बच्चों को उसपर पत्थर फेंकते हुए देख लिया । जब वह भला आदमी उस आदमी के करीब गया तो उसके चेहरे पर मौजूद खोएपन के भाव के बावजूद उसे उस में गरिमा के चिह्न दिखे । 'यह आदमी पागल नहीं हो सकता'-उसने सोचा । गाँव के उस आगंतुक भले व्यक्ति ने उस आदमी से उसका नाम-पता पूछा, पर वह कोई उत्तर नहीं दे सका । वह केवल इतना बोल पाया, ''शायद मैं खो गया हूँ !'' यह सुनते ही गाँव के उस भले व्यक्ति ने निश्चय किया कि वे सब उसे 'खोया हुआ आदमी' कहकर बुलाएँगे ।

खोया हुआ आदमी इतना खोया था, इतना खोया था कि उसकी पूरी स्मृति का लोप हो चुका था । उसके जहन से उसका नाम और पता पूरी तरह खो चुके थे । न उसे अपनी जाति पता थी, न अपना धर्म । लेकिन अपने खोएपन में भी उसमें परिचित-जैसा कुछ था, जो उसे अपना-सा बना रहा था । लिहाजा जब उसे गाँव के अन्य लोगों के पास ले जाया गया तो उसे देखते ही सभी एक स्वर में बोल उठे, ''अरे, यह खोया हुआ आदमी तो बेहद अपना-सा लग रहा है ।'' उन्होंने उसे अपने ही गाँव में रख लेने का फैसला किया । वह आदमी भी उस गाँव में रहने के लिए तैयार हो गया ।

खोए हुए आदमी की आवाज बहुत मधुर थी । कभी-कभी वह अपनी सुरीली आवाज में कोई पुराना गीत गाता था । उस गाँव की गाय-भैंसें उसके गीत की स्वर-लहरियों से मंत्रमुग्ध होकर ज्यादा दूध देने लगतीं । गाँव के बच्चे उसका गीत सुनकर उसकी ओर खिंचे चले आते । गाँव के बड़े-बुजुर्गों को भी उसके गीत उनकी युवावस्था के सुंदर अतीत की याद दिलाते । गाँव के लोगों ने पाया कि जब से वह खोया हुआ आदमी वहाँ आया था, गाँव के फूल और सुंदर लगने लगे थे, गाँव की तितलियाँ ज्यादा मोहक लगने लगी थीं, गाँव के जुगनूँ ज्यादा रोशन लगने लगे थे । गाँव के बच्चे भी अब ज्यादा खुश रहने लगे थे क्योंकि बच्चों को वह सम्मोहित कर देने वाले कमाल के गीत सुनाता था । गाँव के कुत्ते अब उसके सगे हो

परिचय

जन्म : १९६८, पटना (बिहार)
परिचय : रचनाधर्मिता सुशांत सुप्रिय जी के जीवन का अभिन्न अंग है । आपकी रचनाएँ जीवन की सच्चाइयों और विडंबनाओं का सीधे-सीधे साक्षात्कार करवाती हैं । आपने हिंदी के अतिरिक्त अंग्रेजी और पंजाबी में भी लेखन कार्य किया है । आपकी लगभग ५०० रचनाएँ विविध प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई हैं ।
प्रमुख कृतियाँ : 'एक बूँद यह भी' (कविता संग्रह), 'हत्यारे तथा हे राम' (कथा संग्रह), 'इन गांधीजीज कंट्री' (अंग्रेजी कविता संग्रह) आदि ।

गद्‌य संबंधी

प्रस्तुत वर्णनात्मक कहानी में 'खोया हुआ आदमी' के माध्यम से लेखक ने समाज में व्याप्त ऊँच-नीच, अमीर-गरीब, जाति-पाँति आदि कुरीतियों को भुला देने के लिए प्रेरित किया है । इस कहानी से यह ज्ञात होता है कि अपने अच्छे कार्यों से कोई भी आदमी पशु-पक्षी, मानव सबसे आदर प्राप्त कर सकता है । यहाँ लेखक ने सभी को सौहार्द से रहने की सीख प्रदान की है और लोगों को अपनी ऊर्जा सकारात्मक काम में लगाने को कहा है ।

गए थे । वे उसके आस-पास ऐसे चलते जैसे उसे 'गार्ड ऑफ ऑनर' दे रहे हों ।

उन्हीं दिनों गाँव की एक वृद्धा को सपना आया कि वह खोया हुआ आदमी दरअसल उसका ही बेटा था जो बचपन में कहीं खो गया था । वह एक गरीब स्त्री थी, जो घास काटकर, उपले थापकर और पेड़-पौधों की लकड़ियाँ इकट्ठा कर अपना जीवन चलाती थी । उसने खोए हुए आदमी को अपने सपने के बारे में बताया । खोए हुए आदमी ने खुशी-खुशी उस वृद्धा को अपनी माँ मान लिया और उसके साथ रहने लगा । खोए हुए आदमी ने अपनी 'माँ' की इतनी सेवा की कि वृद्धा को लगा कि उसका जीवन धन्य हो गया ।

धीरे-धीरे गाँववालों को खोए हुए आदमी के कई गुणों के बारे में पता चलने लगा । वह पशु-पक्षियों से बातें करता प्रतीत होता । लगता था जैसे वह पशु-पक्षियों की भाषा जानता हो । वह आँधी, तूफान, चक्रवात आने, ओले पड़ने या टिड्डियों के हमले के बारे में गाँववालों को पहले ही आगाह कर देता । उसकी भविष्यवाणी के कारण गाँववाले मुसीबतों से बच जाते । जब एक बार गाँव में सूखे की स्थिति उत्पन्न हो गई तो खोए हुए आदमी ने आकाश की ओर देखकर न जाने किस भाषा में किस देवता से प्रार्थना की । कुछ ही समय बाद गाँव में मूसलाधार बारिश होने लगी । सूखी-प्यासी मिट्टी तृप्त हो गई । बच्चे-बड़े सभी इस झमाझम बारिश में भीगने का भरपूर आनंद लेने लगे । उस दिन से खोया हुआ आदमी गाँव में सबका चहेता हो गया ।

गाँव के किनारे कुछ घर दलितों के थे और कुछ मुसलमानों के । गाँव की कुछ जाति के लोग उनसे अलग रहते थे । खोए हुए आदमी ने दलितों और मुसलमानों से भी मित्रता कर ली । वह दैनिक कामों में उनकी मदद कर देता । उनके कर्तव्य समझाता । उन्हें उनके अधिकारों के बारे में बताता । देखते-ही-देखते गाँव के दलित अपने हक की माँग करने लगे । उधर गाँव के बड़े-बूढ़ों पर भी खोए हुए आदमी के समझाने का असर हुआ । धीरे-धीरे दलितों का शोषण बंद हो गया । आपसी भाईचारा बढ़ने लगा । गाँव के सभी जाति-धर्म के लोग, हिंदू और मुसलमान मिल-जुलकर ईद और होली-दीवाली मनाने लगे । इस तरह गाँव में सांप्रदायिकता और जातिवाद को दूर करने में खोए हुए आदमी ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई । सभी प्रकार के झगड़े-टंटे समाप्त हो गए । यदि कोई विवाद होता भी तो बैठकर वे आपस में निपटा लेते ।

उसके आने से गाँव में एक और बदलाव आया । पहले गाँव में स्त्रियों की दशा ठीक नहीं थी । खोए हुए आदमी ने स्त्रियों को अपने अधिकारों के

संभाषणीय

'सांप्रदायिक सौहार्द' पर अध्यापक के साथ चर्चा कीजिए ।

लेखनीय

'प्रतिभा जन्मजात होती है परंतु उसके पल्लवन हेतु उचित वातावरण की आवश्यकता होती है' विषय पर भाषण का नमूना तैयार कीजिए ।

लिए लड़ना सिखाया। गाँव की सभी स्त्रियाँ, पुरुषों की ज्यादतियों के खिलाफ एकजुट हो गईं । खोए हुए आदमी के समझाने का असर भी हुआ । धीरे-धीरे स्त्रियों के विरुद्ध अत्याचार समाप्त हो गए । उन्हें भी सम्मान मिलने लगा । वे भी बड़ों की बातों को महत्त्व देने लगीं ।

इस गाँव से करीबी कस्बे की दूरी तीन दिन की थी । गाँव में खेती की जमीन तो थी पर कभी अच्छा बीज नहीं मिलता तो कभी खाद नहीं मिलती । खोए हुए आदमी ने गाँववालों को प्रेरित किया कि वे गाँव में ही अच्छे बीज और जैविक खाद की दूकान खोल लें । वह खुद लोगों के खेत में मेहनत करता, खेती-बाड़ी में उनकी मदद करता । गाँववाले भी खूब परिश्रम करने लगे । उसकी मदद गाँववालों के लिए खुशहाली ले आई । गाँव का तालाब मछलियों से भर गया । गाँव के पेड़ फलों से लद गए । खेतों में फसलें लहलहाने लगीं । मौसम अच्छा बना रहा । गाँववालों ने इन सबका श्रेय खोए हुए आदमी को दिया। उन्हें लगा जैसे उसकी उपस्थिति में बरकत थी। धीरे-धीरे वह पूरे इलाके में लोकप्रिय हो गया । पड़ोस के अन्य गाँवों के लोग भी उसके प्रशंसक बन गए ।

शुरू-शुरू में कुछ लोग उसे प्रश्नवाचक निगाहों से देखते थे पर खोए हुए आदमी का चेहरा इतना विश्वसनीय और उसका व्यवहार इतना सरल और सहज था कि धीरे-धीरे उसके आलोचक भी उसके प्रशंसकों में बदल गए । लोगों को लगता था कि उसके पास कोई जादुई शक्ति है जिससे वह आसानी से समस्याओं के हल ढूँढ़ लेता है । हालाँकि खोए हुए आदमी ने हमेशा इस बात का खंडन किया । वह हर सफलता को गाँववालों के कठिन परिश्रम का परिणाम बताता था ।

वह लोगों से कहता-''आप सबके पास भी वही शक्तियाँ हैं, खुद को पहचानो । अपनी ऊर्जा को रचनात्मक और सकारात्मक कामों में लगाओ । जुड़ो और जोड़ो ।'' इस तरह खोए हुए आदमी ने इलाके के लोगों में नया विश्वास भर दिया । लोगों में नया जोश, नया उत्साह आ गया ।

पर अंत में वह दिन भी आ पहुँचा । एक रात मौसम बेहद खराब हो गया । बादलों की भीषण गड़गड़ाहट के साथ आकाश में बिजली कड़कने लगी । तभी कई सूर्यों के चौंधिया देने वाले प्रकाश ने रात में दिन का भ्रम उत्पन्न कर दिया ।

फिर वज्रपात जैसी भयावह गड़गड़ाहट के साथ गाँव में कहीं बिजली गिरी । लोग अपनी साँसों की धुक-धुकी के बीच अपने-अपने घरों में दुबके हुए थे । सारी रात मौसम बौराया रहा । लोगों का कहना है कि उस रात गंधक की तेज गंध पूरे गाँव में फैल गई थी और मकानों की खिड़कियों-दरवाजों की झिर्रियों में से घुसकर यह सभी घरों में समा गई

पठनीय

'सरकारी ग्राम विकास योजना' की जानकारी पढ़िए तथा इसके मुख्य मुद्दे बताइए ।

श्रवणीय

विविध अवसरों पर गाए जाने वाले लोकगीत सुनिए । अपनी मातृभाषा का एक लोकगीत सुनाइए ।

थी । बाद में पता चला कि यह शहर के कारखानों से गैस रिसाव एवं विस्फोट का दुष्परिणाम था ।

सुबह जब मौसम साफ हुआ तब गाँववालों ने पाया कि वह खोया हुआ आदमी अब उनके बीच नहीं था । वह गायब हो चुका था । गाँववालों ने उसे बहुत ढूँढ़ा पर उसका कोई पता नहीं चला । न जाने उसे जमीन निगल गई थी या आसमान खा गया था । उसकी तलाश में आस-पास के गाँवों में गए सभी लोग खाली हाथ लौट आए । गाँव की गलियाँ उसके बिना सूनी लगने लगीं । पशु-पक्षी उसके बिना उदास हो गए । गाँव के बच्चे उसके बिना बेचैन लगे । गाँव के कुत्तों की आँखों में भी आँसू थे ।

दुखी गाँववालों ने खोए हुए आदमी की याद में उसकी एक मूर्ति बनाकर गाँव के बीचोबीच स्थापित कर दी । पंचायत की सभी बैठकें अब इसी मूर्ति के पास हुआ करतीं । गाँववालों ने प्रण लिया कि वे उस खोए हुए आदमी के दिखाए मार्ग पर चलेंगे । आज भी यदि आप उस गाँव में जाएँगे तो आपको उस खोए हुए आदमी की वहाँ स्थापित मूर्ति दिख जाएगी ।

लेकिन आपको असली बात बताना तो मैं भूल ही गया । खोए हुए आदमी के गायब होने के कुछ समय बाद जब जनगणना अधिकारी जनगणना के काम से इस गाँव में पहुँचे तो किसी को भी न तो अपनी जाति याद थी, न अपना धर्म याद था । धर्म और जाति के बारे में उनकी स्मृतियाँ उस खोए हुए आदमी के साथ ही जैसे सदा के लिए खो चुकी थीं । काश, अपने गाँव-शहर में हमें भी ऐसा 'खोया हुआ आदमी' मिल जाता !

('पिता के नाम' संग्रह से)

—— ० ——

शब्द संसार

बेतहाशा क्रि. वि. (फा.) = बड़ी तेजी से, बहुत घबरा कर और बिना सोचे-समझे

गरिमा स्त्री. सं.(सं.) = गौरव

लोप पुं. सं. (सं.) = नाश, क्षय

फैसला पुं.सं.(अ.) = निर्णय, निपटारा

ज्यादतियाँ स्त्री. सं.(सं.)= अन्याय, परेशान करने की वृत्ति

बरकत स्त्री. सं.(अ.)= समृद्धि, संपन्नता

वज्रपात पुं.सं.(सं.) = सहसा होने वाला बहुत बड़ा अनिष्ट, आघात

मुहावरे

आगाह कर देना = सचेत करना

खाली हाथ लौटना = कुछ भी न पाना

जमीन का निगल जाना, **आसमान का खा जाना** } = लापता हो जाना

स्वाध्याय

✲ सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :-

(१) कृति पूर्ण कीजिए :

खोए हुए आदमी के गीत से प्रभावित होने वाले :

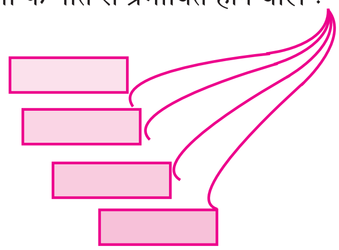

(२) उत्तर लिखिए :

खोए हुए आदमी के आने से गाँव की बदली हुई स्थिति

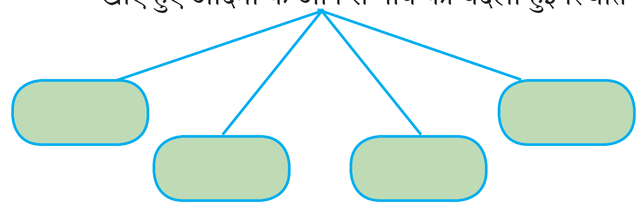

(३) ऐसे प्रश्न तैयार कीजिए जिनके उत्तर निम्नलिखित शब्द हों :

भविष्यवाणी, झमाझम बारिश, खुशहाली , गंधक

(४) दिए गए निर्देश के अनुसार परिवर्तन कीजिए :

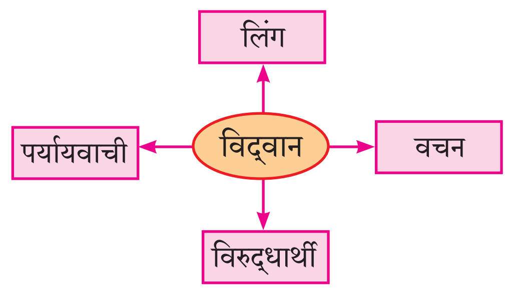

अभिव्यक्ति

'मानवता ही सच्चा धर्म है' पर अपने विचार लिखिए ।

भाषा बिंदु

(१) निम्नलिखित वाक्यों में आए हुए अव्ययों को रेखांकित करते हुए उनके भेद लिखिए :

१. उसके जहन से उसका नाम और पता पूरी तरह खो चुके थे । ------------------

२. ओह ! दिव्या मैं ठीक हूँ । ------------------

३. उसकी भविष्यवाणी के कारण गाँववाले मुसीबतों से बच जाते । ------------------

४. वहाँ से तुलसीनगर पास पड़ता है । ------------------

५. काश, अपने गाँव-शहर में हमें भी 'खोया हुआ आदमी' मिल जाता ! ------------------

६. कभी-कभी मेरा मन उच्चाकाश में उड़ने वाले पक्षियों के साथ अनंत के ओर-छोर नापना चाहता है । ------------------

७. ब्लडप्रेशर भी ज्यादा है पर चिंता की कोई बात नहीं । ------------------

८. इतनी जल्दी लौट जाते हैं । ------------------

(२) निम्नलिखित अव्ययों का सार्थक वाक्यों में प्रयोग कीजिए :

१. परंतु	२. अरे !	३. के समान	४. धीरे-धीरे
५. इसलिए	६. छि !	७. ऊपर	८. के अलावा

CGY6K4

उपयोजित लेखन

'विश्वबंधुता वर्तमान युग की माँग' विषय पर अस्सी से सौ शब्दों में निबंध लिखिए ।

३. सफर का साथी और सिरदर्द

-रामनारायण उपाध्याय

मुझे अकेले यात्रा करने में आनंद आता है । इससे चलती रेल में से पैरों के नीचे से निकल जाने वाली नदी में कल्पना में डुबकी लगाने, जो पास लगते हैं उन वृक्षों के निरंतर पीछे छूटते चले जाने और जो दूर हैं उन भागते वृक्षों का साथ निभाने में बड़ा मजा आता है ।

यात्रा में अगर कोई साथी मिल जाए तो ऐसा लगता है मानो वह मेरी निगाह चुरा रहा हो । मैं किसकी ओर एकटक निहारता हूँ, किसे देखकर नाक-भौं सिकोड़ता हूँ और कौन मेरे एकांत क्षणों का अंतरंग साथी है, इन सब बातों पर कोई निगाह रखे, यह मुझे कतई पसंद नहीं ।

कभी-कभी जब रेल की खिड़की से बाहर झाँककर दूर के दृश्य, किसी प्राकृतिक मनोरम दृश्य को देखना चाहता हूँ, जैसे सूर्योदय और सूर्यास्त तभी मेरी दृष्टि उचटकर किसी वृक्ष की डाली पर पाँव टिकाए बच्चों को देखने में जा उलझती है तब कैमरे के हिल जाने की तरह सारा दृश्य गायब हो जाता है और मैं सोचता ही रह जाता हूँ कि आखिर मैं देख क्या रहा था ?

कभी-कभी मेरी दृष्टि नदी किनारे के सौंदर्य को निहारना चाहती है । इसी बीच जैसे आँख में कंकरी गिर जाए, ऐसे रास्ते में पहाड़ी के आ जाने से सारा दृश्य चौपट हो जाता है।

कभी-कभी मेरा मन उच्चाकाश में उड़ने वाले पक्षियों के साथ अनंत के ओर-छोर नापना चाहता है । इसी बीच रेल किसी गुफा में प्रवेश कर जाती है, और तब लाचार मन को भी, मन मारकर सुरंग की उस पतली लकीर में से निकलने को बाध्य होना पड़ता है ।

वैसे मुझे बस की यात्रा कतई पसंद नहीं । उसमें यह भी जरूरी नहीं कि बगल में बैठने वाला आदमी हमारा मनपसंद ही हो । अनेक बार तो ऐसे व्यक्ति से पाला पड़ता है जो रूठी हुई पत्नी की तरह लाख मनाने पर भी सीधे मुँह बात नहीं करता और अगर उससे प्रश्नों के जरिये छेड़खानी की जाए तो हाँ-हूँ में जवाब देकर खिड़की से बाहर मुँह लटका लेता है । कभी-कभी ऐसा भी साथी मिल जाता है कि आप चाहे सुनें या न सुनें, वह अपनी बात तब तक सुनाता रहेगा, जब तक दो में से एक उतर न जाए ।

मुझे सुपरफास्ट ट्रेन के बजाय एक्सप्रेस से यात्रा करना ज्यादा पसंद है। कारण सुपरफास्ट ट्रेन का स्वभाव उस विशिष्ट व्यक्ति की तरह होता है जो रास्ते में मिलने वाले बराबरीवालों की उपेक्षा कर, बड़ों से मिलने दौड़ा जाता है । उसे आदमी से अधिक अपनी चाल पर नाज होता है जब कि एक्सप्रेस

परिचय

जन्म : १९१८, खंडवा(म.प्र.)
परिचय : पं. रामनारायण उपाध्याय स्वतंत्रतापूर्व के लघुकथाकार हैं । आपकी भाषा शैली सरल, सहज और प्रभावशाली है । आपकी व्यंग्य, ललित निबंध, रूपक, रिपोर्ताज, लघुकथाएँ, संस्मरण आदि विधाओं में ३० से अधिक पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं । आपने हिंदी भाषा के साथ-साथ लोकभाषा एवं विभिन्न बोलियों के संवर्धन के लिए उल्लेखनीय कार्य किया है ।
प्रमुख कृतियाँ : 'बख्शीशनामा', 'धुँधले काँच की दीवार', 'नाक का सवाल', 'मुस्कराती फाइलें' (व्यंग्य संग्रह) 'मृग के छौने' (निबंध संग्रह), 'हम तो बाबुल तेरे बाग की चिड़ियाँ'(लोकसाहित्य), 'जिन्हें भूल न सका' (संस्मरण) आदि ।

गद्य संबंधी

प्रस्तुत हास्य-व्यंग्य निबंध में व्यंग्यकार ने रेलयात्रा में माँगकर अखबार पढ़ने वालों, अनावश्यक बात करने वालों, बिन माँगे सलाह देने वालों पर करारा व्यंग्य किया है । लेखक का तात्पर्य यह है कि हमें इन बुराइयों से बचना चाहिए ।

एक दोस्त की तरह दूर से स्टेशन देखकर अपनी चाल धीमी कर देती है, सबको अपने हृदय में स्थान देती है और जब चलती है तो इस कदर धीरे जैसे कोई एक मित्र दूसरे से विदा ले रहा हो ।

अपने को तो भाई साहब, रेल की खिड़की से दुनिया देखने में बड़ा मजा आता है, ऐसे लगता है जैसे शीशे में से डिब्बेवाला बाइस्कोप देख रहे हों ।

लेकिन कोई देखने दे तब तो ! जैसे ही आपने पाँव रखा और अपनी सीट पर बैठे कि सामने की सीट पर बैठा यात्री आपके झोले में से झाँकते अखबार की ओर देखकर पूछेगा, ''क्या मैं इसे ले सकता हूँ ?''

भले ही आपने उसे अभी-अभी खरीदा हो और उसे खोलकर पढ़ना तो दूर पन्ने पलटकर भी न देखा हो; लेकिन आपके उत्तर की प्रतीक्षा किए बिना अखबार सामने वाले के हाथों में होगा । अब आपकी स्थिति माँगने वालों की हो जाएगी और आप उत्सुकता से राह देखेंगे कि समाचारपत्र अब लौटे कि तब । तभी वे सज्जन एक जम्हाई लेकर उसे बेतरतीबी से मोड़ते हुए किसी दूसरे माँगने वाले की ओर इस तरह शान से बढ़ा देंगे मानो समाचारपत्र आपका नहीं; उनकी निजी संपत्ति हो । देखते-देखते समाचारपत्र के पन्ने एक-दूसरे से जुदा होकर पूरे डिब्बे के चक्कर काटने लगेंगे । मजे की बात यह है कि एक समाचारपत्र के कितने उपयोग हो सकते हैं, इसका अंदाज रेल की यात्रा करते समय ही लगाया जा सकता है । कोई ललित निबंध के तो कोई संपादकीय पन्ने से अपनी सीट झाड़ता नजर आएगा । कोई समाचारपत्र फैलाकर उसपर भोजन करता दिखाई पड़ेगा । बेचारे समाचारपत्रवाले ने भी कभी सोचा नहीं होगा कि उसके पत्र के इतने उपयोग हो सकते हैं ।

इन सबसे परेशान होकर जब आप पीछे की ओर सिर टिकाकर कुछ क्षण आराम करना चाहेंगे, इसी बीच सामने से प्रश्न उछलेगा- ''कहाँ तक चल रहे हैं ?''

आप अनमने मन से कहेंगे- ''भोपाल तक ।''

पूछेंगे- ''भोपाल गाड़ी कितने बजे तक पहुँचती है ?''

कहेंगे- ''सवा तीन बजे ।''

उनका तर्क होगा- ''पहले तो चार बजे पहुँचती थी ।''

कहा- ''टाइम बदल गया ।''

बोले- ''गाड़ी में तो कई जगह चेन पुलिंग होती होगी । आज की तारीख में पहुँच जाएँ, यही गनीमत है ।'' आप सोचेंगे चर्चा का अंत हुआ । तभी तीर की तरह प्रश्न उछलेगा, ''आप हबीबगंज उतरेंगे या भोपाल ।'' कहा- ''हबीबगंज ।'' पूछा- ''हबीबगंज क्यों ?'' कहा- ''वहाँ से तुलसीनगर पास पड़ता है ।''

परिच्छेद पर आधारित कृतियाँ :-

✲ भले ही आपने उसे ...... उपयोग हो सकते हैं ।

(१) प्रवाह तालिका पूर्ण कीजिए :

सफर में समाचारपत्र की स्थिति → [ ] → [ ] → [ ] → [ ]

(२) लिखिए :

सफर में समाचारपत्र से होने वाले उपयोग → [ ] ; [ ]

(३) सूचना के अनुसार लिखिए :

१. परिच्छेद में प्रयुक्त समोच्चारित भिन्नार्थक शब्द ढूँढ़कर लिखिए ।

२. परिच्छेद में प्रयुक्त 'शब्दयुग्म' ढूँढ़कर लिखिए ।

(४) समाचारपत्र की आवश्यकता के बारे में अपने विचार लिखिए ।

वे चिढ़कर कहेंगे– ''खाक पास पड़ता है । ऑटोवाले पाँच–सात रुपये ऐंठ लेंगे । इससे तो अच्छा है आप भोपाल स्टेशन उतरते, वहाँ से चार कदम चलने पर टेंपो मिल जाता है, जो पचास पैसे में टी.टी. नगर और फिर पचास पैसे में तुलसीनगर तो क्या, अरोरा कॉलोनी उतार देता है ।''

सोचा, 'कहीं यह पुनः हबीबगंज स्टेशन ले जाकर वहाँ से वापस ट्रेन में न बैठा दें,' अतएव चुप्पी साधकर निश्चल बैठ गया ।

अगर आप यात्रा पर हैं तो आपको सहयात्री के प्रश्नों का जवाब देना ही होगा ।

पूछा– ''भोपाल में क्या करते हैं ?''

कहा– ''मीटिंग में जा रहा हूँ ।'' वे कहना शुरू कर देते हैं– ''अपन तो वल्लभ भवन के एकाउंट सेक्शन में हैं । लोगों के बिल बनाते–बनाते अपना भी वेतन निकल जाता है । रहने को ठाठ से सरकारी क्वार्टर मिला है । बीवी और दो बच्चे हैं ।

अगर ट्रेन में रेलवे कर्मचारी का साथ हो जाए तो सारे रास्ते गाड़ियों के शंटिंग करने की आवाज सुनाई देगी । कोई कहेगा, ''एट अप से आ रहा हूँ, सेवन डाउन से लौटना है । अगर स्टेशन मास्टर ने सिग्नल नहीं दिया और गाड़ी आउटर पर आकर खड़ी हो गई तो रात वापस घर लौटना मुश्किल है । आजकल तो 'मेल' को रोककर 'माल' को पास करना पड़ता है । कारण मालगाड़ी में भरे माल के बिगड़ने का डर रहता है, जबकि मेल में बैठा आदमी बिगड़ता नहीं । अरे, नाराज भी तो नहीं होता ! क्या खाकर नाराज होगा । अगर शिकायत करना चाहे तो शिकायत पुस्तिका माँगे, जब तक शिकायत पुस्तिका आएगी, तब तक रेल चली जाएगी ।''

दूसरे ने कहा– ''मैं 'पूछताछ विभाग' में काम करता हूँ । लोग–बाग भी कैसे–कैसे सवाल पूछते हैं ? कोई पूछता है, 'दस बजे वाली रेल कब आएगी, कोई पूछता है, छोटी लाइन वाली गाड़ी कहाँ पर खड़ी होगी ?' मानो उसके बड़ी लाइन पर खड़ी होने का अंदेशा हो । एक दिन एक आदमी ने तो कमाल कर दिया । पूछा– ''क्यों भाई साहब, बिना टिकिटवालों के लिए बाहर जाने का रास्ता किधर से है ?''

मैंने कहा– ''मेरे पास बैठ जाओ । मैं भी एक दिन इसी तरह रास्ता पूछते–पूछते यहाँ आया था, अब लोगों को बाहर जाने का रास्ता बताने का काम कर रहा हूँ ।''

एक बार एक सहयात्री ने पूछा– ''क्यों भाई साहब, क्या आप यात्रा पर जाने से पहले आरक्षण करा लेते हैं ?''

मैंने कहा– ''यह तो सहज बात है। आजकल बिना आरक्षण के यात्रा करना सिरदर्द मोल लेना है ।''

लेखनीय

यात्रा के लिए आरक्षण करने की प्रक्रिया की जानकारी प्राप्त कीजिए तथा आरक्षण का नमूना फॉर्म भरकर अपनी कॉपी में चिपकाइए ।

पठनीय

'बढ़ती जनसंख्या का असर रेलयात्रा पर भी दिखाई दे रहा है,' इससे संबंधित निबंध पढ़िए ।

वे बोले- ''आप भी अजीब आदमी हैं। सिरदर्द तो आरक्षण कराने में है। हफ्तों चक्कर काटते हैं तब कहीं एक सीट मिलती है। आप शान से टिकिट जेब में रखते हैं, अकड़कर डिब्बे में प्रवेश करते हैं और जब कंडक्टर को आरक्षण का टिकिट दिखाते हैं तो वह हिकारत भरी निगाह से कहता है, ''जब टिकिट है तो क्या देखना ? नहीं होता तो देख लेता ।'' वह दूसरे यात्री के पास जाता है । उसके पास न टिकिट है न आरक्षण । इशारे-इशारे में कुछ बात होती है और उसे, वह जहाँ से चाहता है, जहाँ तक के लिए चाहता है वहाँ तक के लिए सीट मिल जाती है । देखा नहीं आपने, रेल के हर डिब्बे पर लिखा है- 'भारतीय रेल जनता की संपत्ति है, इसे सुरक्षित रखिए' लेकिन इसके पीछे एक अलिखित इबारत भी होती है, 'भारतीय रेल कंडक्टर की संपत्ति है .....।'

साँझ हो चली थी, डिब्बे की बत्तियाँ जलने लगी थीं, लोगों ने अपने-अपने होल्डॉल बिछाने शुरू कर दिए । मैंने भी थककर चूर हो जाने के कारण सिरदर्द की एक गोली खाई और लेटना चाहा ।

सहयात्री ने देखा तो पूछा- ''क्या आपको सिरदर्द हो रहा है?''

मैंने कहा- ''जी हाँ ।''

बोले- ''आप ऐसी-वैसी गोलियाँ क्यों खाते हैं, इससे रिएक्शन हो सकता है । फिर पूछा- ''कल क्या खाया था । रास्ते में कहीं पूरी-कचौड़ी तो नहीं खा ली ? अरे ! ये रेलवे ठेकेदार कल की बासी पूरी-कचौड़ी को उबलती कड़ाही में डालकर ताजा के नाम पर बेचते हैं । कहेंगे हाथ लगाकर देख लो, गरम है कि नहीं । उन्हें तो अपनी जेब गरम करनी है ।''

''मैं तो घर से पराँठे लेकर चलता हूँ । रास्ते में कोई और पराँठेवाला मिल जाता है तो दो और दो-चार मिलाकर खाने में मजा आ जाता है ।''

फिर पूछा- ''आपको सिरदर्द कितने समय से है ? क्या यह पैतृक बीमारी है या केवल आपको ही है ?''

मैंने कहा- ''मेरे परिवार में सभी के सिर हैं, अतएव सबको सिरदर्द होना स्वाभाविक है ।''

वे बोले- ''क्या आप भी बिना सिर-पैर की बातें करते हैं । जिनके पाँव में शनि होता है उन्हें भी सिरदर्द होता है, जिनके पेट में गैस होती है उन्हें भी सिरदर्द होता है ।''

मैंने कहा- ''आप बजा फरमाते हैं । जब मैं घर से चला तो भला-चंगा था, ट्रेन में बैठा तब भी कोई शिकायत नहीं थी, किताब पढ़नी चाही तब भी मन आनंद से हिलोरें ले रहा था, लेकिन जब से हमसफर सहयात्रियों ने सिर खाना शुरू किया तो बेचारा सिर, दर्द नहीं करे तो क्या करे? सच कहता हूँ, भाई साहब ! मैं सिर दर्द से नहीं, हमसफर यात्रियों के दर्द-ए-सिर से परेशान हूँ ।''

०

जीवन में स्वच्छंदता कैसे हानिकारक हो सकती है, इसके बारे में सुनिए और बताइए ।

कचरा बीनने वाले से संवाद कीजिए और मुख्य मुद्दे बताइए ।

शब्द संसार

कंकरी स्त्री.सं.(दे.) = छोटा कंकड़
सुरंग स्त्री.सं.(सं.) = जमीन खोदकर उसके नीचे बनाया हुआ मार्ग
नाज पुं.सं.(फा.) = गर्व
अंदेशा पुं.सं.(फा.) = आशंका, पूर्वानुमान
हिकारत स्त्री.सं.(अ.) = घृणा, नफरत
इबारत स्त्री.सं.(अ.) = लिखा हुआ, अक्षर विन्यास
बजा वि.(फा.) = उचित, ठीक

मुहावरे

नाक-भौं सिकोड़ना = अप्रसन्नता, घृणा प्रकट करना
चौपट हो जाना = नष्ट होना, बरबाद होना
मन मारना = इच्छा को दबाना
चक्कर काटना = गोलाकार घूमना, फेरे लगाना
बिना सिर-पैर की बात करना = निराधार बात करना, व्यर्थ की बात करना

स्वाध्याय

* सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :-

(१) असत्य विधान को सत्य करके लिखिए :

(क) लेखक को सुपरफास्ट ट्रेन के बजाय एक्सप्रेस से यात्रा करना ज्यादा पसंद नहीं है ।
(ख) लेखक को पेटदर्द हो रहा था ।
(ग) लेखक को भागते वृक्षों का साथ निभाने में कम मजा आता था ।
(घ) सभी सिरवालों को सिरदर्द होना अस्वाभाविक है ।

(२) लिखिए :

पाठ में प्रयुक्त खाद्य व्यंजन

(३) पाठ में प्रयुक्त रेल विभाग से संबंधित शब्दों की सूची बनाइए :

____

____

____

____

(४) कारण लिखिए :

१. कभी-कभी 'मेल' को रोककर 'माल' को पास करना पड़ता है ।
२. लेखक को सिरदर्द की गोली लेनी पड़ी ।

(५) दिए गए शब्दों से तद्धित तथा कृदंत शब्द बनाइए :

लाचार, लिखना, दौड़ना, झाँकना, सज्जन, परेशान

तद्धित	कृदंत
------	------
------	------
------	------
------	------

अभिव्यक्ति 'मेक इन इंडिया' नीति पर अपने विचार लिखिए ।

भाषा बिंदु

(१) निम्नलिखित वाक्यों के काल पहचानकर कोष्ठक में लिखिए :

१. उनकी वेशभूषा की ग्रामीणता तो और भी दृष्टि को उलझा लेती थी । (-------------)

२. किसी दूसरे माँगने वालों की ओर इस तरह शान से बढ़ा देंगे । (-------------)

३. कहाँ तक चल रहे हैं ? (-------------)

४. लोगों के बिल बनाते-बनाते अपना भी वेतन निकल जाता है । (-------------)

५. कल क्या खाया था ? (-------------)

६. बासी पूरी-कचौड़ी को उबलती कड़ाही में डालकर ताजा के नाम पर बेचते थे । (-------------)

७. तभी तीर की तरह शब्द उछलेगा । (-------------)

(२) सूचना के अनुसार काल परिवर्तन कीजिए :

१. किसी प्राकृतिक मनोरम दृश्य को देखना चाहता हूँ । (अपूर्ण भूतकाल)

----

२. एक-दूसरे से जुदा होकर पूरे डिब्बे के चक्कर काटने लगेंगे । (सामान्य वर्तमानकाल)

----

३. मुझे अभिवादन का ध्यान आया । (पूर्ण भूतकाल)

----

४. मानो वे किसी हड़बड़ी में चलते-चलते कपड़े पहनकर आए हैं । (सामान्य भूतकाल)

----

५. पानी अब निर्मल नहीं रहा है । (सामान्य भविष्यकाल)

----

६. मुझे देखते ही चाय हाजिर कर देती है । (पूर्ण वर्तमानकाल)

----

७. वह तुम्हे हमेशा बुरा-भला ही कहती है । (अपूर्ण वर्तमानकाल)

उपयोजित लेखन

निम्नलिखित जानकारी के आधार पर विज्ञापन तैयार कीजिए :

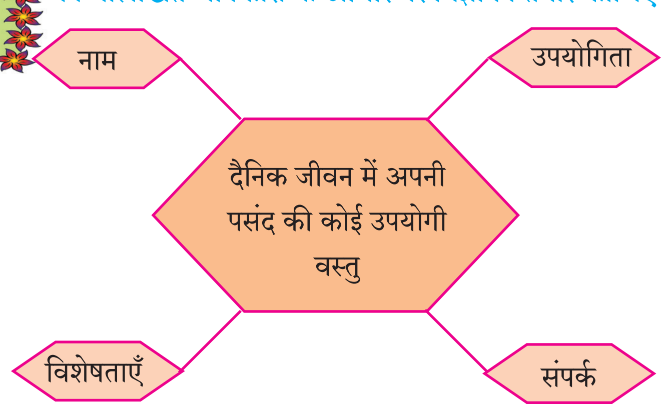

४. जिन ढूँढ़ा

– संत कबीर

बड़ा हुआ तो क्या हुआ, जैसे पेड़ खजूर ।
पंथी को छाया नहीं, फल लागें अति दूर ।।

सिष को ऐसा चाहिए, गुरु को सब कुछ देय ।
गुरु को ऐसा चाहिए, सिष से कुछ नहिं लेय ।।

कबिरा संगत साधु की, ज्यों गंधी की बास ।
जो कुछ गंधी दे नहीं, तौ भी बास सुबास ।।

दुर्बल को न सताइए, जाकी मोटी हाय ।
बिना जीव की स्वाँस से, लोह भसम ह्‌वै जाय ।।

गुरु कुम्हार सिष कुंभ है, गढ़-गढ़ काढ़ै खोट ।
अंतर हाथ सहार दै, बाहर बाहै चोट ।।

जाको राखै साइयाँ, मारि न सक्कै कोय ।
बाल न बाँका करि सकै, जो जग बैरी होय ।।

नैनों अंतर आव तूँ, नैन झाँपि तोहिं लेवँ ।
ना मैं देखौं और को, ना तोहि देखन देवँ ।।

लाली मेरे लाल की, जित देखों तित लाल ।
लाली देखन मैं गई, मैं भी हो गई लाल ।।

कस्तूरी कुंडल बसै, मृग ढूँढ़ै बन माहिं ।
ऐसे घट में पीव है, दुनिया जानै नाहिं ।।

जिन ढूँढ़ा तिन पाइयाँ, गहिरे पानी पैठ ।
जो बौरा डूबन डरा, रहा किनारे बैठ ।।

जो तोको काँटा बुवै, ताहि बोउ तू फूल ।
तोहि फूल को फूल है, बाको है तिरसूल ।।

(‘बीजक’ से)

— ० —

परिचय

जन्म : लगभग १३९८, वाराणसी (उ.प्र.)
मृत्यु : लगभग १५१८, मगहर (उ.प्र.)
परिचय : भक्तिकालीन निर्गुण काव्यधारा के संतकवि कबीरदास मानवता एवं समता के प्रबल समर्थक थे । आपकी रचनाओं में धार्मिक आडंबर और सामाजिक रूढ़ियों के प्रति विद्रोह दिखाई देता है । मानवता ही आपका धर्म है । आपने किसी भी बाह्‌य आडंबर, कर्मकांड, की अपेक्षा पवित्र, नैतिक और सादगीभरे जीवन को अपनाया । आपकी भाषा सहज, सरल और सुबोध है । आपकी उलटबांसियाँ और रहस्यवाद प्रसिद्‌ध हैं ।

प्रमुख कृतियाँ : ‘साखी’, ‘सबद, ‘रमैनी’ इन तीनों का संग्रह ‘बीजक’ नामक ग्रंथ में किया गया है ।

पद्‌य संबंधी

यहाँ संत कबीरदास के नीति संबंधी दोहे दिए गए हैं । इन दोहों में संत कबीर ने गुरु के महत्त्व, गुरु-शिष्य संबंध, सद्‌व्यवहार, परोपकार, सहानुभूति आदि के बारे में अपने विचार व्यक्त किए हैं । जीव, आत्मा-परमात्मा के बारे में भी आपके विचार महनीय चिंतन को प्रेरित करते हैं ।

शब्द संसार

सिष पुं.सं.(दे.) = शिष्य
गंधी पुं.सं.(दे.) = इत्र विक्रेता
सुबास पुं.सं.(दे.) = सुगंध
हाय अव्यय(सं.) = दुख सूचक शब्द
खोट स्त्री.सं.(हिं.) = दोष
बौरा पुं.सं.(दे.) = पागल, बावला

स्वाध्याय

* सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :–

(१) प्रवाह तालिका पूर्ण कीजिए :

↓
↓
↓
↓

(२) उचित जोड़ियाँ मिलाइए :

अ	उत्तर	आ
गुरु		कुंभ
पंथी		छाया
फूल		सिष
कुम्हार		बौरा
		काँटा

(३) शब्दसमूह के लिए एक शब्द लिखिए :

१. कस्तूरी की खोज करने वाला →
२. किनारे पर बैठा रहने वाला →
३. तीन नोकों वाला अस्त्र →
४. जो बलहीन है →

(४) दोहों में आए सुवचन :

१. ________________
२. ________________

(५) निम्नलिखित अर्थ के शब्द दोहों से ढूँढ़कर लिखिए :

१. पुत्र -------
२. इत्र विक्रेता -------
३. परमात्मा -------
४. खुद -------

(६) दोहों में प्रयुक्त निम्न शब्दों के दो–दो अर्थ लिखिए :

१. मृग ----------, ----------
२. कुंभ ----------, ----------
३. फल ----------, ----------
४. बाल ----------, ----------

(७) अपनी पसंद के किसी एक दोहे के भावार्थ से प्राप्त प्रेरणा लिखिए ।

CHGXNE

उपयोजित लेखन

शब्दों के आधार पर कहानी लिखिए :
थैली, जल, तस्वीर, अँगूठी

५.अनोखे राष्ट्रपति

– महादेवी वर्मा

राजेंद्र बाबू को मैंने पहले-पहले एक सर्वथा गद्‍यात्मक वातावरण में ही देखा था परंतु उस गद्‍य ने कितने भावात्मक क्षणों की अटूट माला गूँथी है, यह बताना कठिन है ।

मैं प्रयाग में बी.ए. की विद्‍यार्थी थी और शीतावकाश में घर भागलपुर जा रही थी । पटना में भाई के मिलने की बात थी, अतः स्टेशन पर ही प्रतीक्षा के कुछ घंटे व्यतीत करने पड़े ।

स्टेशन के एक ओर तीन पैरोंवाली बेंच पर देहातियों की वेशभूषा में कुछ नागरिकों से घिरे सज्जन जो विराजमान थे, उनकी ओर मेरी विहंगम दृष्टि जाकर लौट आई । वास्तव में भाई से यह जानने के उपरांत कि उक्त सज्जन ही राजेंद्र बाबू हैं, मुझे अभिवादन का ध्यान आया ।

पहली दृष्टि में ही जो आकृति स्मृति में अंकित हो गई थी, उसमें इतने वर्षों ने न कोई नई रेखा जोड़ी है और न कोई नया रंग भरा है ।

सत्य में से जैसे कुछ घटाना या जोड़ना संभव नहीं रहता वैसे ही सच्चे व्यक्तित्व में भी कुछ जोड़ना-घटाना संभव नहीं है ।

काले घने पर छोटे कटे हुए बाल, चौड़ा मुख, चौड़ा माथा, घनी भृकुटियों के नीचे बड़ी आँखें, मुख के अनुपात में कुछ भारी नाक, कुछ गोलाई लिए चौड़ी ठुड्‍डी, कुछ मोटे पर सुडौल ओंठ, श्यामल झाँई देता हुआ गेहुआँ वर्ण, बड़ी-बड़ी ग्रामीणों जैसी मूँछें जो ऊपर के ओंठ को ही नहीं ढँक लेती थीं, नीचे के ओंठ पर भी रोमिल आवरण डाले हुए थीं । हाथ, पैर, शरीर सबमें लंबाई की ऐसी विशेषता थी जो दृष्टि को अनायास आकर्षित कर लेती थी ।

उनकी वेशभूषा की ग्रामीणता तो और भी दृष्टि को उलझा लेती थी । खादी की मोटी धोती ऐसा फेंटा देकर बाँधी गई थी कि एक ओर दाहिने पैर पर घुटना छूती थी और दूसरी ओर बाएँ पैर की पिंडली । मोटे, खुरदुरे, काले बंद गले के कोट में ऊपर का भाग, बटन टूट जाने के कारण खुला था और घुटने के नीचे का बटनों से बंद था । सर्दी के दिनों के कारण पैरों में मोजे जूते तो थे, परंतु कोट और धोती के समान उनमें भी विचित्र स्वच्छंदतावाद था । मिट्‍टी की परत से न जूतों के रंग का पता चलता था, न रूप का । गांधी टोपी की स्थिति तो और भी विचित्र थी । उसकी आगे की नोक बाईं भौंह पर खिसक आई थी और टोपी की कोर माथे पर पट्‍टी की तरह लिपटी हुई थी । देखकर लगता था मानो वे किसी हड़बड़ी में

परिचय

जन्म : १९०७, फर्रुखाबाद (उ.प्र.)

मृत्यु : १९८७, इलाहाबाद (उ.प्र.)

परिचय : महादेवी वर्मा जी प्रतिभावान साहित्यकार थीं । आप छायावाद के चार प्रमुख स्तंभों में से एक मानी जाती हैं । आपकी रचनाएँ समाज के प्रत्येक वर्ग को प्रभावित और प्रेरित करती हैं । आपको आधुनिक 'मीरा' और हिंदी के विशाल मंदिर की 'सरस्वती' कहा जाता है ।

प्रमुख कृतियाँ : 'नीहार', 'रश्मि', 'सांध्यगीत' (कविता संग्रह), 'संकल्पिता', 'शृंखला की कड़ियाँ' (निबंध), 'पथ के साथी', 'मेरा परिवार' 'अतीत के चलचित्र' (रेखाचित्र) आदि ।

गद्‍य संबंधी

महादेवी वर्मा जी द्‍वारा लिखित प्रस्तुत संस्मरण भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद जी के बारे में है । पाठ में डॉ. राजेंद्र प्रसाद जी की सादगी, सरलता, सहज स्वभाव के बारे में प्रकाश डाला गया है । यहाँ लेखिका ने स्पष्ट किया है कि भारत के महामहिम पद पर पहुँचकर भी डॉ. राजेंद्र प्रसाद में अहं लेशमात्र भी नहीं था ।

चलते-चलते कपड़े पहनते आए हैं, अतः जो जहाँ जिस स्थिति में अटक गया, वह वहीं उसी स्थिति में लटका रह गया ।

उनकी मुखाकृति देखकर अनुभव होता था मानो इन्हें पहले कहीं देखा है । अनेक व्यक्तियों ने भी उन्हें प्रथम बार देखकर ऐसा ही अनुभव किया। बहुत सोचने के उपरांत ही उस प्रकार की अनुभूति का कारण समझ में आ सका ।

राजेंद्र बाबू की मुखाकृति ही नहीं, उनके शरीर के संपूर्ण गठन में एक सामान्य भारतीय जन की आकृति और गठन की छाया थी, अतः उन्हें देखने वाले को कोई न कोई आकृति या व्यक्ति स्मरण हो आता था और वह अनुभव करने लगता था कि इस प्रकार के व्यक्ति को पहले भी कहीं देखा है । आकृति तथा वेशभूषा के समान ही वे अपने स्वभाव और रहन-सहन में सामान्य भारतीय या भारतीय कृषक का ही प्रतिनिधित्व करते थे । प्रतिभा और बुद्धि की विशिष्टता के साथ-साथ उन्हें जो गंभीर संवेदना प्राप्त हुई थी, वही उनकी सामान्यता को गरिमा प्रदान करती थी । व्यापकता ही सामान्यता की शपथ है परंतु व्यापकता, संवेदना की गहराई में स्थिति बनाए रखती है ।

उनकी वेशभूषा की अस्त-व्यस्तता के साथ उनके निजी सचिव और सहचर भाई चक्रधर जी का स्मरण अनायास हो आता है । जब मोजों में से पाँचों उँगलियाँ बाहर निकलने लगतीं, जब जूते के तले पैर के तलवों के गवाक्ष बनने लगते, जब धोती, कुरते, कोट आदि का खद्दर अपने मूल ताने-बाने में बदलने लगता, तब चक्रधर इस पुरातन सज्जा को अपने लिए सहेज लेते । उन्होंने वर्षों तक इसी प्रकार राजेंद्र बाबू के पुराने परिधान से अपने आपको प्रसाधित कर कृतार्थता का अनुभव किया था । मैंने ऐसे गुरु-शिष्य या स्वामी-सेवक अब तक नहीं देखे ।

राजेंद्र बाबू के निकट संपर्क में आने का अवसर मुझे सन १९३७ में मिला जब वे काँग्रेस के अध्यक्ष के रूप में महिला विद्यापीठ महाविद्यालय के भवन का शिलान्यास करने प्रयाग आए। उनसे ज्ञात हुआ कि उनके संयुक्त परिवार में पंद्रह-सोलह पौत्रियाँ हैं जिनकी पढ़ाई की व्यवस्था नहीं हो पाई है । मैं यदि अपने छात्रावास में रखकर उन्हें विद्यापीठ की परीक्षाओं में बैठा सकूँ तो उन्हें कुछ विद्या प्राप्त हो सकेगी ।

पहले बड़ी फिर छोटी, फिर उनसे छोटी के क्रम से बालिकाएँ मेरे संरक्षण में आ गईं । उन्हें देखने प्रायः उनकी दादी और कभी-कभी दादा भी प्रयाग आते रहे । तभी राजेंद्र बाबू की सहधर्मिणी के निकट संपर्क में आने का अवसर मिला । वे सच्चे अर्थ में धरती की पुत्री थीं । वे साध्वी, सरल, क्षमामयी, सबके प्रति ममतालु और असंख्य संबंधों की सूत्रधारिणी थीं ।

गणतंत्र दिवस की पूर्व संध्या पर राष्ट्रपति का संदेश सुनिए ।

महाराष्ट्र के पर्यटन विभाग से पर्यटन संबंधी जानकारी प्राप्त करने के लिए प्रश्नावली तैयार कीजिए ।

ससुराल में उन्होंने बालिकावधू के रूप में पदार्पण किया था । संभ्रांत जमींदार परिवार की परंपरा के अनुसार उन्हें घंटों सिर नीचा करके एकासन बैठना पड़ता था, परिणामतः उनकी रीढ़ की हड्‌डी इस प्रकार झुक गई कि युवती होकर भी वे सीधी खड़ी नहीं हो पाती थीं ।

बालिकाओं के संबंध में राजेंद्र बाबू का स्पष्ट निर्देश था कि वे सामान्य बालिकाओं के समान बहुत सादगी और संयम से रहें । वे खादी के कपड़े पहनती थीं, जिन्हें वे स्वयं ही धो लेती थीं । उनके साबुन-तेल आदि का व्यय भी सीमित था । कमरे की सफाई, झाड़-पोंछ, गुरुजनों की सेवा आदि भी उनके अध्ययन के आवश्यक अंग थे ।

उस समय स्वतंत्रता संघर्ष के सैनिकों का गंतव्य जेल ही रहता था, अतः प्रायः किसी की पत्नी, किसी की बहिन, किसी की बेटी विद्‌यापीठ के छात्रावास में आ उपस्थित होती थीं । देश स्वतंत्र होने के उपरांत उनमें से कुछ दिल्ली चली गईं और कुछ विशेष योग्यता प्राप्त करने के लिए अंग्रेजी विद्‌यालयों में भर्ती हो गईं । केवल राजेंद्र बाबू अपवाद रहे । उनके भारत के प्रथम राष्ट्रपति हो जाने के उपरांत मुझे स्वयं उनकी पौत्रियों के संबंध में चिंता हुई । उनका स्पष्ट उत्तर मिला, ''महादेवी बहन, दिल्ली मेरी नहीं है, राष्ट्रपति भवन मेरा नहीं है । अहंकार से मेरी पौत्रियों का दिमाग खराब न हो जाए, तुम केवल इसकी चिंता करो । वे जैसे रहती आई हैं, उसी प्रकार रहेंगी । कर्तव्य, विलास नहीं कर्मनिष्ठा है ।''

उनकी सहधर्मिणी में भी किसी प्रकार का परिवर्तन नहीं हुआ । जब राष्ट्रपति भवन में उनके कमरे से संलग्न रसोईघर बन गया तब वे दिल्ली गईं और अंत तक स्वयं भोजन बनाकर सामान्य भारतीय गृहिणी के समान पति, परिवार तथा परिजनों को खिलाने के उपरांत स्वयं अन्न ग्रहण करती थीं ।

उस विशाल भवन में यदि अपने अद्‌भुत आतिथ्य की बात न कहूँ तो कथा अधूरी रह जाएगी । बालिकाओं की दादी ने मुझे दिल्ली आने का विशेष निमंत्रण तो दिया ही, साथ ही प्रयाग से सिरकी से बने एक दरजन सूप लाने का भी आदेश दिया । उन्होंने बार-बार आग्रह किया कि मैं उनके लिए इतना कष्ट अवश्य उठाऊँ क्योंकि फटकने-पछोरने के लिए सिरकी के सूप बहुत अच्छे होते हैं पर कोई उन्हें लाने वाला ही नहीं मिलता ।

प्रथम श्रेणी के डिब्बे में बारह सूपों के टाँगने पर जो दृश्य उपस्थित हुआ उससे भी अधिक विचित्र दृश्य तब प्रत्यक्ष हुआ; जब राष्ट्रपति भवन से आई बड़ी कार पर यह उपहार लादा गया । राष्ट्रपति भवन के हर द्‌वार पर सलाम ठोंकने वाले सिपाहियों की आँखें विस्मय से खुली रह गईं । ऐसी भेंट लेकर कोई अतिथि न कभी वहाँ पहुँचा था, न पहुँचेगा पर भवन की तत्कालीन स्वामिनी ने मुझे अंक में भर लिया ।

संभाषणीय

'सामाजिक स्तर का आधार वेशभूषा है' इस बात से आप कितने सहमत हैं, आपस में चर्चा कीजिए ।

राजेंद्र बाबू तथा उनकी सहधर्मिणी सप्ताह में एक दिन अन्न नहीं ग्रहण करते थे । संयोग से मैं उनके उपवास के दिन ही पहुँची, अतः उनकी यह जिज्ञासा स्वाभाविक थी कि मैं कैसा भोजन पसंद करूँगी । उपवास में भी आतिथेय का साथ देना उचित समझकर मैंने निरन्न भोजन की ही इच्छा प्रकट की । फलाहार के साथ उत्तम खाद्‌य पदार्थों की कल्पना स्वाभाविक रहती है । सामान्यतः हमारा उपवास अन्य दिनों के भोजन की अपेक्षा अधिक व्ययसाध्य हो जाता है क्योंकि उस दिन हम भाँति-भाँति के फल, मेवे, मिष्ठान्न आदि एकत्र कर लेते हैं ।

मुझे आज भी वह संध्या नहीं भूलती जब भारत के प्रथम राष्ट्रपति को मैंने सामान्य आसन पर बैठकर दिन भर के उपवास के उपरांत केवल कुछ उबले आलू खाकर पारायण करते देखा । मुझे भी वही खाते देखकर उनकी दृष्टि में संतोष और ओठों पर बालकों जैसी सरल हँसी छलक उठी ।

जीवन मूल्यों की परख करने वाली दृष्टि के कारण उन्हें देशरत्न की उपाधि मिली और मन की सरल स्वच्छता ने उन्हें अजातशत्रु बना दिया । अनेक बार प्रश्न उठता है, ''क्या वह साँचा टूट गया जिसमें ऐसे कठिन कोमल चरित्र ढलते थे ?''

('संस्मरण राजेंद्र बाबू' से)

— ० —

पठनीय

भारतरत्न डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम लिखित किसी एक पुस्तक का अंश पढ़िए । उसमें निहित प्रमुख बातें अपने मित्रों को सुनाइए ।

शब्द संसार

भृकुटी स्त्री.सं.(सं.) = भौंह
ठुड्डी स्त्री.सं.(दे.) = ठोढ़ी
रोमिल वि.(सं.) = रोयेंदार
निर्देश पुं.सं.(सं.) = सूचना
सिरकी स्त्री.सं.(हिं.) = सरकंडे या सरई
पछोरना क्रि.(हिं.दे.) = अनाज सूप में रखकर फटककर साफ करना
निरन्न वि.(सं.) = निराहार, अन्नरहित
व्ययसाध्य वि.(सं.) = महँगा

मुहावरा

आँखें खुली रह जाना = आश्चर्य चकित होना
अंक में भरना = गले लगाना

✲ सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :–

(१) संजाल पूर्ण कीजिए :

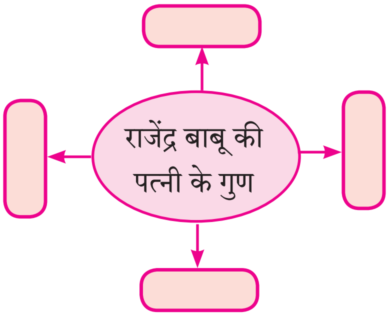

(२) कृति में जानकारी लिखिए :

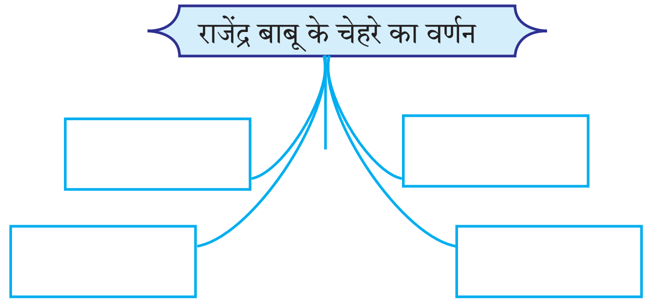

(३) उत्तर लिखिए :

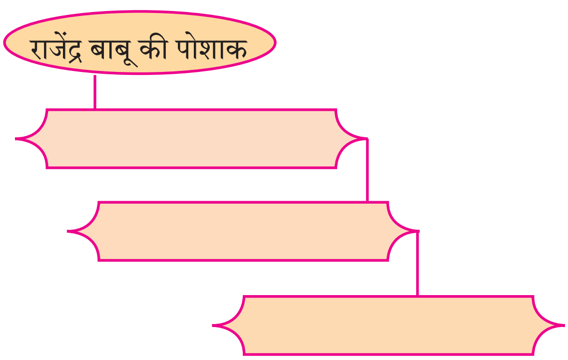

(४) निम्नलिखित शब्दों के प्रत्यय और मूलशब्द अलग करके लिखिए :

प्रत्यय साधित शब्द	प्रत्यय	मूलशब्द
बुद्धिमान		
पारिवारिक		
रोमिल		
ममतालु		

(५) उपसर्ग तथा प्रत्यययुक्त शब्द बनाकर लिखिए :

	उपसर्गयुक्त शब्द	मूल शब्द	प्रत्यययुक्त शब्द
१.	-------	आवश्यक	-------
२.	-------	कर्म	-------
३.	-------	समय	-------
४.	-------	हृदय	-------
५.	-------	सफल	-------
६.	-------	चंचल	-------

अभिव्यक्ति ‘सादा जीवन, उच्च विचार’ विषय पर अपने विचार लिखिए ।

भाषा बिंदु

(१) निम्नलिखित संधि विच्छेद की संधि कीजिए और भेद लिखिए :

अनु.	संधि विच्छेद	संधि शब्द	संधि भेद
१.	दु:+लभ	--------	--------
२.	महा+आत्मा	--------	--------
३.	अन्+आसक्त	--------	--------
४.	अंत:+चेतना	--------	--------
५.	सम्+तोष	--------	--------
६.	सदा+एव	--------	--------

(२) निम्नलिखित शब्दों का संधि विच्छेद कीजिए और भेद लिखिए :

अनु.	शब्द	संधि विच्छेद	संधि भेद
१.	सज्जन	+	
२.	नमस्ते	+	
३.	स्वागत	+	
४.	दिग्दर्शक	+	
५.	यद्यपि	+	
६.	दुस्साहस	+	

(३) निम्नलिखित शब्दों का विच्छेद कीजिए और संधि भेद लिखिए :

दिग्गज
सप्ताह
निश्चल
भानूदय
निस्संदेह
सूर्यास्त

विच्छेद | भेद

________ + ________ ( )
________ + ________ ( )
________ + ________ ( )
________ + ________ ( )
________ + ________ ( )
________ + ________ ( )
________ + ________ ( )
________ + ________ ( )

(४) पाठों में आए संधि शब्द छाँटकर उनका विच्छेद कीजिए और संधि का भेद लिखिए ।

उपयोजित लेखन

'यदि मैं शिक्षा मंत्री होता ------' विषय पर लगभग सौ शब्दों में निबंध लिखिए ।

CHQTQ2

६. ऐसा भी होता है

(पठनार्थ)

– अभिषेक जैन

गरजे मेघ
सहमकर काँपी
कच्ची दीवार ।

रवि चढ़ाए
निर्मल किरणों से
धरा को अर्घ्य ।

आ के पसरी
थकी हारी किरण
धरा की गोद ।

खुली आँखों ने
जीवन भर देखे
बंद सपने ।

कटते तरु
उजड़ा आशियाना
रोए पखेरू ।

बच्चे पतंग
माँ–बाप थामें डोर
छूते गगन ।

तन माटी का
फिर कैसा गुमान
कद काठी का ।

उड़ा पखेरू
देखता रह गया
ठगा–सा तरु ।

डाकिया चला
बाँटने सुख–दुख
भर के झोला ।

मैया की आई
वृद्‌धाश्रम से चिट्‌ठी
कैसे हो बेटा ।

हो गई चोरी
संस्कारों की तिजोरी
लुट गया मैं ।

— ० —

परिचय

अभिषेक जैन जी ने कविता, कहानी, निबंध आदि विविध विधाओं में लेखन किया है । अनुभवों पर आधारित आपकी रचनाएँ विविध पत्र–पत्रिकाओं में नियमित छपती रहती हैं ।

पद्‌य संबंधी

हाइकु : मूलतः जापान की लोकप्रिय विधा है । इसे विश्व की सबसे छोटी कविता कहा जाता है । पाँचवें दशक से हिंदी साहित्य ने खुले मन से हाइकु को स्वीकार किया है। हाइकु कविता ५+७+५=१७ वर्ण के ढाँचे में लिखी जाती है ।

प्रस्तुत विभिन्न हाइकुओं के माध्यम से कवि ने गरीबी, थकान, वृक्षों के कटने के दुष्परिणाम, अनावश्यक अहं, वृद्‌धाश्रम के दर्द, संस्कारों के अभाव आदि विविध विषयों पर प्रकाश डाला है ।

शब्द संसार

तरु पुं.सं.(सं.)= वृक्ष, पेड़
आशियाना पुं.सं.(फा.)= घोंसला
पखेरू पुं.सं.(सं.) = पंछी, पक्षी
गुमान पुं.सं.(फा.)= अभिमान, गर्व, घमंड

स्वाध्याय

सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए ।

(१) कृति पूर्ण कीजिए –

पद्य में आए प्राकृतिक घटक

(२) उचित शब्द लिखिए :

१. सहमकर काँपने वाली –
२. घोंसला उजड़ने पर रोने वाला –
३. सुख-दुख बाँटने वाला –
४. वृद्धाश्रम से चिट्ठी भेजने वाली –

(३) 'किरण' शब्द की दो विशेषताएँ :

भाषा बिंदु

आकृति में दिए गए वाक्य का काल पहचानकर निर्देशानुसार काल परिवर्तन कीजिए :

गाँव वाले भी खूब परिश्रम कर रहे थे । ---- काल

सामान्य वर्तमानकाल ------------------------

सामान्य भविष्यकाल ------------------------, अपूर्ण भविष्यकाल ------------------------

पूर्ण वर्तमानकाल ------------------------

सामान्य भूतकाल ------------------------

अपूर्ण वर्तमानकाल ------------------------

पूर्ण भविष्यकाल ------------------------

पूर्ण भूतकाल ------------------------

उपयोजित लेखन

'मेरा प्रिय त्योहार' विषय पर अस्सी से सौ शब्दों में निबंध लिखिए ।

CHZPRP

७. दो लघुकथाएँ

– *संतोष सुपेकर*

अर्जी

हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी राघवेंद्र पत्नी-बच्चों सहित अपने पैतृक कस्बे में आया हुआ है। नौकरी से छुट्टियाँ न मिल पाने की मजबूरी के चलते वह चाहकर भी हफ्ता-दस दिन से ज्यादा यहाँ नहीं रुक पाता है लेकिन उसकी इच्छा रहती है कि अम्मा-बाबू जी पूरे साल नहीं तो साल में दो-तीन महीने तो उसके साथ मुंबई में जरूर रहें। बच्चों को संयुक्त परिवार मिले, दादा-दादी का भरपूर प्यार मिले । अनिता, उसकी पत्नी भी यही चाहती है । यही सोचकर उन्होंने पाँच कमरों का फ्लैट खरीदा है पर न जाने क्यों अम्मा-बाबू जी वहाँ बहुत कम जाते हैं । साल भर में एकाध बार, वह भी चंद दिनों के लिए ।

''बाबू जी, आप और अम्मा चार-छह दिनों के लिए नहीं, चार-छह महीनों के लिए आया कीजिए । इतनी जल्दी लौट जाते हैं तो मन कचोटने-सा लगता है ।'' उसने पिछली बार उनसे जब यह कहा तो वे बोले थे, ''बेटा, मैं कितनी बार कहूँ तुझसे कि वह छोटा-सा कस्बा ही हमारी जन्म और कर्मभूमि रहा है । हमें वहाँ के अलावा और कहीं ज्यादा अच्छा नहीं लगता । महानगर के तेरे इस बड़े-से फ्लैट में हम चार-आठ दिनों से ज्यादा नहीं रह सकते।''

आज शाम, वह बचपन के अपने कमरे में घुसा । लाइट ऑन की और कोने में रखे बक्से की ओर बढ़ गया । उसके बचपन का साथी-उसका प्यार, लकड़ी का बड़ा-सा बक्सा। वह जब भी यहाँ आता है, एक बार इस बक्से को जरूर खोलकर देखता है । सहज उत्सुकतावश उसने उसे खोला । छठी-सातवीं-आठवीं कक्षा के कोर्स की कुछ पुरानी किताबें, ज्योमेट्री बॉक्स, कीलवाले तलवों के फुटबॉल शूज, एन.सी.सी. की एक्स्ट्रा ड्रेस, पुराना फोटो एलबम... और भी जाने क्या-क्या । बार-बार देखने पर भी इन चीजों को देखने आने की इच्छा मरती नहीं है । तभी उसकी नजर एकाएक पॉलीथिन की एक थैली पर पड़ी । अरे, इसमें क्या है, अब से पहले तो इसपर नजर कभी पड़ी नहीं थी । उसने उसे उठाकर खोला । अंदर पीली पड़ चुकी कागज की छोटी-छोटी-सी पर्चियाँ मिलीं । वह एक-एक की इबारत को पढ़ने लगा –''बाबू जी, आज मेरे लिए जलेबी लेते आना...। बाबू जी, आज शाम को कंपास बॉक्स चाहिए ...। बाबू जी, शाम को दो पेंसिल खरीद लाना ...। बाबू जी... बाबू जी... बाबू जी...।'' बचपन में बाबू जी से की गई फरमाइशों का पुलिंदा था वह । पढ़ते-पढ़ते उसकी आँखों में आँसू आ

परिचय

जन्म : १९६७ उज्जैन (म.प्र.)

परिचय : संतोष सुपेकर पत्रकारिता एवं जनसंचार क्षेत्र में सुपरिचित नाम है । आपके पत्र, कविता, लघुकथा, कहानी, समीक्षा, व्यंग्यलेख, विविध पत्र-पत्रिकाओं में नियमित प्रकाशित होते रहते हैं ।

प्रमुख कृतियाँ : 'साथ चलते हुए', 'हाशिए का आदमी', 'बंद आँखों का समाज', 'हँसी की चीखें' (लघुकथा संग्रह), 'चेहरों के आरपार', 'यथार्थ के यक्ष प्रश्न' (काव्य संग्रह) आदि ।

गद्‍य संबंधी

यहाँ दो लघुकथाएँ दी गई हैं । प्रथम लघुकथा में बेटे का अपने माता-पिता के प्रति प्रेम, लगाव तथा माता-पिता का बच्चों की माँगों की पूर्ति तथा उनके जन्मभूमि से जुड़ाव दर्शाया है ।

दूसरी लघुकथा में 'संस्कार' कैसे किए जाते हैं, इसे बड़े ही सुंदर ढंग से लेखक ने दिखाया है ।

गए । बाबू जी का लाड़ला राघवेंद्र, राघव । कोई भी वस्तु चाहिए होती तो वह मुँह से नहीं कह पाता था । बस इच्छित वस्तु की पर्ची बनाकर बाबू जी की जेब में डाल देता था और ऐसा कभी हुआ नहीं कि बाबू जी उसकी माँगी कोई वस्तु लाना भूल गए हों या उसकी इच्छा पूरी न की हो... सोच में डूबे राघवेंद्र की आँसू भरी आँखों में एकाएक चमक आ गई । पर्चियों को पॉलीथिन की थैली में रखकर उसने बक्से को बंद कर दिया । झटपट, कागज की एक पर्ची बनाई और उसपर लिखा, ''बाबू जी, मैं दिल से चाहता हूँ कि आप और अम्मा मेरे साथ चलकर मुंबई में रहें । हर साल कम से कम दो-तीन महीनों के लिए । आपको कोई तकलीफ नहीं होगी ।''

आपका राघव

बाबू जी के कुर्ते की जेब में उस पर्ची को डालते हुए उसके हाथ अतिरिक्त रोमांच से काँप रहे थे पर मन आश्वस्त था कि उसकी यह अर्जी खारिज नहीं होगी ।

×× ××

इन्वेस्टमेंट

''यार सुरेश ?'' अशोक ने अपने पारिवारिक मित्र से बड़े अचरज से पूछा, ''मैं हमेशा देखता हूँ, तुम अपनी सौतेली माँ की दिन-रात सेवा करते रहते हो, लेकिन वह तुम्हें हमेशा बुरा-भला ही कहती है । बड़ी अजीब बात है, हमारे तो बस का काम नहीं है इतना सुनना, तुम कैसे कर लेते हो इतना सब्र ?''

''करना पड़ता है भाई ।'' सुरेश ने फीकी मुस्कान से कहा, ''इन्वेस्टमेंट सेंटर चलाता हूँ न, बाहर पैसे का इन्वेस्टमेंट करवाता हूँ और घर में संस्कारों का इन्वेस्टमेंट कर रहा हूँ ।''

''संस्कारों का इन्वेस्टमेंट, वह कैसे ?''

''बचपन में मैंने परिजनों को बुजुर्गों की सेवा करते देखा । इसी भाव का इन्वेस्टमेंट अब अपने बच्चों में कर रहा हूँ । अरे भाई, बच्चे जब मुझे माँ की सेवा करते देखते हैं तो एक ईमानदार इन्वेस्टर की तरह मुझे उम्मीद है कि उनके अंदर भी भारतीय संस्कार विकसित होकर रहेंगे ।''

('हँसी की चीखें' लघुकथा संग्रह से)

—— ० ——

शब्द संसार

आश्वस्त वि.(सं.)=जिसे आश्वासन मिला हो, जिसे तसल्ली दी गई हो ।

खारिज वि.(अ.) = अस्वीकृत, बहिष्कृत

* सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :-

(१) संजाल पूर्ण कीजिए :

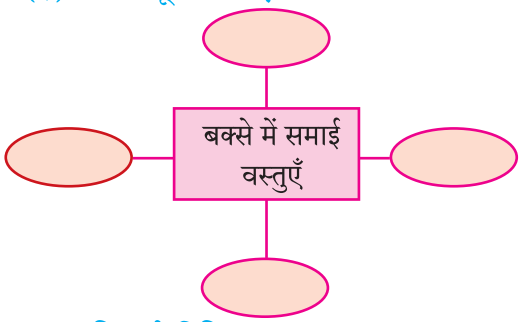

(३) कृति पूर्ण कीजिए :

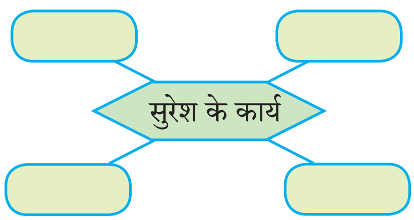

(२) घटनाक्रम के अनुसार वाक्य लिखिए :

१. बचपन में बाबू जी से की फरमाइशों का पुलिंदा था ।

२. आज शाम वह बचपन के अपने कमरे में घुसा ।

३. झटपट कागज की एक पर्ची बनाई ।

४. वह एक-एक इबारत पढ़ने लगा ।

(४) रिश्ते लिखिए :

१. अनिता- राघवेंद्र = -----------

२. अम्मा- अनिता = -----------

३. बच्चे- बाबू जी = -----------

४. बाबू जी- अनिता = -----------

(५) पाठ में प्रयुक्त एकवचन और बहुवचन शब्दों की सूची बनाइए -

एकवचन		बहुवचन	
१.		१.	
२.		२.	
३.		३.	
४.		४.	

अभिव्यक्ति 'व्यवहार से संस्कार छलकते हैं', इस विधान को सोदाहरण स्पष्ट कीजिए ।

उपयोजित लेखन निम्नलिखित परिच्छेद पढ़कर इसपर आधारित ऐसे चार प्रश्न तैयार कीजिए जिनके उत्तर एक-एक वाक्य में हों :

''कोई काम छोटा नहीं । कोई काम गंदा नहीं । कोई भी काम नीचा नहीं । कोई काम असंभव भी नहीं कि व्यक्ति ठान ले और ईश्वर उसकी मदद न करे । शर्त यही है कि वह काम, काम का हो । किसी भी काम के लिए 'असंभव', 'गंदा' या 'नीचा' शब्द मेरे शब्दकोश में नहीं है ।'' ऐसी वाणी बोलने वाली मदर टेरेसा को कोढ़ियों की सेवा करते देखकर एक बार एक अमेरिकी महिला ने कहा, ''मैं यह कभी नहीं करती ।'' मदर टेरेसा के उपरोक्त संक्षिप्त उत्तर से वह महिला शर्म से सिकुड़ गई थी । सचमुच ऐसे कार्य का मूल्य क्या धन से आँका जा सकता है या पैसे देकर किसी की लगन खरीदी जा सकती है ? यह काम तो वही कर सकता है, जो ईश्वरीय आदेश समझकर अपनी लगन इस ओर लगाए हो । जो गरीबों, वंचितों, जरूरतमंदों में ईश्वरीय उपासना का मार्ग देखता हो और दुखी मानवता में उसके दर्शन करता हो । ईसा, गांधी, टेरेसा जैसे परदुखकातर, निर्मल हृदयवाले लोग ही कोढ़ियों और मरणासन्न बीमारों की सेवा कर सकते हैं और 'निर्मल हृदय' जैसी संस्थाओं की स्थापना करते हैं ।

प्रश्नः १. --

२. --

३. --

४. --

CI9KTC

८. कर्मवीर

– *अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'*

देखकर जो विघ्न-बाधाओं को घबराते नहीं,
रह भरोसे भाग्य के दुख भोग पछताते नहीं,
काम कितना ही कठिन हो किंतु उकताते नहीं,
भीड़ में चंचल बनें जो वीर दिखलाते नहीं ।

मानते जी की हैं, सुनते हैं सदा सबकी कही,
जो मदद करते हैं अपनी इस जगत में आप ही,
भूलकर वे दूसरे का मुँह कभी तकते नहीं,
कौन ऐसा काम है वे कर जिसे सकते नहीं ।

जो कभी अपने समय को यों बिताते हैं नहीं,
काम करने की जगह बातें बनाते हैं नहीं,
आज-कल करते हुए जो दिन गँवाते हैं नहीं,
यत्न करने में कभी जो जी चुराते हैं नहीं ।

काम को आरंभ करके यों नहीं जो छोड़ते,
सामना करके, नहीं जो भूलकर मुँह मोड़ते,
जो गगन के फूल बातों से वृथा नहिं तोड़ते,
संपदा मन से करोड़ों की नहीं जो जोड़ते ।

कार्य थल को वे कभी नहिं पूछते 'वह है कहाँ',
कर दिखाते हैं असंभव को वही संभव यहाँ,
उलझनें आकर उन्हें पड़ती हैं जितनी ही जहाँ,
वे दिखाते हैं नया उत्साह उतना ही वहाँ ।

सब तरह से आज जितने देश हैं फूले-फले,
बुद्‌धि-विद्‌या, धन-विभव के हैं जहाँ डेरे डले,
वे बनाने से उन्हीं के बन गए इतने भले,
वे सभी हैं हाथ से ऐसे सपूतों के पले ।

—— ० ——

परिचय

जन्म : १८३५, आजमगढ़ (उ.प्र.)
मृत्यु : १९४७, आजमगढ़ (उ.प्र.)
परिचय : खड़ी बोली हिंदी साहित्य के विकास में 'हरिऔध' जी की भूमिका नींव के पत्थर के समान है । भाषा पर आपको अद्‌भुत अधिकार प्राप्त था । आपकी रचनाओं में संस्कृत के तत्सम, फारसी-उर्दू शब्दों का प्रयोग बहुत ही आकर्षक है ।
प्रमुख कृतियाँ : 'वैदेही वनवास', 'प्रिय-प्रवास' (महाकाव्य) 'ठाठ', 'अधखिला फूल' (उपन्यास), 'रुक्मणी परिणय', 'विजय व्यायोग' (नाटक) आदि ।

पद्‌य संबंधी

प्रस्तुत प्रेरक कविता में 'हरिऔध' जी ने बताया है कि सपूतों में कौन-कौन-से गुण होते हैं । इन गुणों से संपन्न कर्मवीर ही देश और समाज को उन्नति के मार्ग पर ले जाते हैं ।

शब्द संसार

विघ्न पुं.सं.(सं.) = संकट, बाधा
उकताना क्रि.(हिं.) = ऊबना
यत्न पुं.सं.(सं.) = कोशिश, प्रयास
वृथा वि.(सं) = व्यर्थ, नाहक
संपदा स्त्री.सं.(सं.) = धन, दौलत,

स्वाध्याय

✻ सूचनानुसार कृतियाँ कीजिए :–

(१) संजाल पूर्ण कीजिए :

कर्मवीर इनमें परिवर्तन करते हैं

(२) कृति पूर्ण कीजिए :

कर्मवीर नहीं करते

(३) विशेषताएँ लिखिए :

कर्मवीर काम करते समय

(४) कविता में इस अर्थ में आए शब्द लिखिए :

कर्मभूमि – ____________
अकारण – ____________
आकाश – ____________
विश्वास – ____________

(५) कविता की अपनी पसंदीदा चार पंक्तियों का सरल अर्थ लिखिए ।

उपयोजित लेखन

मुद्दों के आधार पर कहानी लेखन कीजिए :

एक हंस और एक कौए में मित्रता — हंस का कौए के साथ उड़ते जाना — कौए का दधिपात्र लेकर जाने वाले ग्वाले को देखना — ललचाना — कौए का दही खाने का आग्रह — हंस का इनकार — कौए का घसीटकर ले जाना — कौए का चोंच नचा-नचाकर दही खाना — हंस का बिलकुल न खाना — आहट पाकर कौए का उड़ जाना — हंस का पकड़ा जाना — परिणाम — शीर्षक ।

CIIGUZ

१. मातृभूमि

– मैथिलीशरण गुप्त

नीलांबर परिधान हरित पट पर सुंदर है,
सूर्य-चंद्र युग मुकुट, मेखला रत्नाकर है ।
नदियाँ प्रेम प्रवाह, फूल तारे मंडल हैं,
बंदीजन खग वृंद, शेष फन सिंहासन है ।

करते अभिषेक पयोद हैं, बलिहारी इस देश की ।
हे मातृभूमि, तू सत्य ही, सगुण मूर्ति सर्वेश की ।।

निर्मल तेरा नीर अमृत के सम उत्तम है,
शीतल-मंद-सुगंध पवन हर लेता श्रम है ।
षड्ऋतुओं का विविध दृश्ययुत अद्‌भुत क्रम है,
हरियाली का फर्श नहीं मखमल से कम है ।

शुचि सुधा सींचता रात में, तुझपर चंद्र प्रकाश है ।
हे मातृभूमि! दिन में तरणि, करता तम का नाश है ।।

सुरभित, सुंदर, सुखद सुमन तुझपर खिलते हैं,
भाँति-भाँति के सरस, सुधोपन फल मिलते हैं ।
औषधियाँ हैं प्राप्त एक-से-एक निराली,
खानें शोभित कहीं धातु वर रत्नोंवाली ।

जो आवश्यक होते हमें, मिलते सभी पदार्थ हैं ।
हे मातृभूमि वसुधा-धरा, तेरे नाम यथार्थ हैं ।।

क्षमामयी, तू दयामयी है, क्षेममयी है,
सुधामयी, वात्सल्यमयी, तू प्रेममयी है ।
विभवशालिनी, विश्वपालिनी, दुखहर्ती है,
भयनिवारिणी, शांतिकारिणी, सुखकर्ती है ।

हे शरणदायिनी देवी तू, करती सबका त्राण है ।
हे मातृभूमि संतान हम, तू जननी, तू प्राण है ।।

—— ० ——

परिचय

जन्म : १८८६, झाँसी (उ.प्र.)
मृत्यु : १९६४
परिचय : मैथिलीशरण गुप्त जी खड़ी बोली साहित्य में मील के पत्थर माने जाते हैं । आपकी रचनाओं में राष्ट्रीयता, भारत के गौरवशाली इतिहास और संस्कृति के दर्शन होते हैं। आपने अपनी कृतियों में इतिहास की उपेक्षित नारी पात्रों का गौरव बढ़ाया है ।
प्रमुख कृतियाँ : 'साकेत' (महाकाव्य), 'यशोधरा', 'जयद्रथ वध', 'पंचवटी, 'भारत-भारती '(खंडकाव्य), 'रंग में भंग', 'राजा-प्रजा' (नाटक) आदि।

पद्‌य संबंधी

प्रस्तुत कविता में मैथिलीशरण गुप्त जी ने हम सबकी मातृभूमि भारतमाता का गौरवगान किया है । यहाँ आपने भारतभूमि की हरीतिमा, नदी-सागर, फल-फूल, चाँदनी-प्रकाश आदि का सुंदर वर्णन किया है । साथ ही जन्मभूमि की विशेषताओं को भी दर्शाया है ।

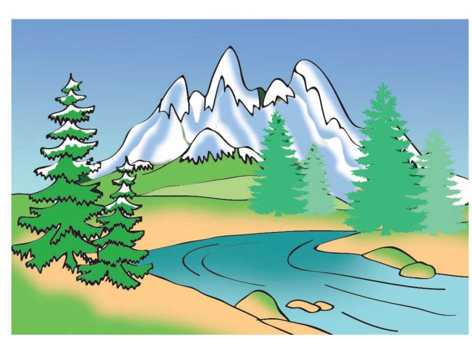

शब्द संसार

पयोद पुं.सं.(सं.) = बादल, मेघ
नीर पुं.सं.(सं.) = पानी, जल
शुचि वि.(सं.) = पवित्र, शुद्ध
सुधा स्त्री.सं.(सं.) = अमृत, जल

तम पुं.सं.(सं.) = अंधकार, अँधेरा
परिधान पुं.सं.(सं.) = वस्त्र, कपड़ा
सुरभित वि.(सं.) = सुगंधित, सौरभित
विभव पुं.सं.(सं.) = संपन्नता, बहुतायत

स्वाध्याय

✲ सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :–

(१) कृति पूर्ण कीजिए :

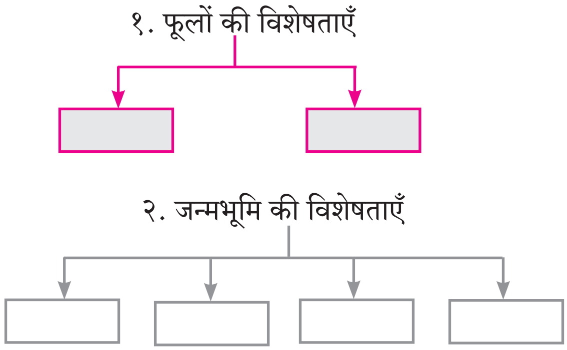

(२) इन शब्द–शब्द समूहों के लिए कविता में प्रयुक्त शब्द लिखिए :

शब्द/शब्द समूह	शब्द
पक्षियों के समूह	--------------
शेषनाग के फन	--------------
समुद्र	--------------
सूरज और चाँद	--------------

(३) कृति पूर्ण कीजिए :

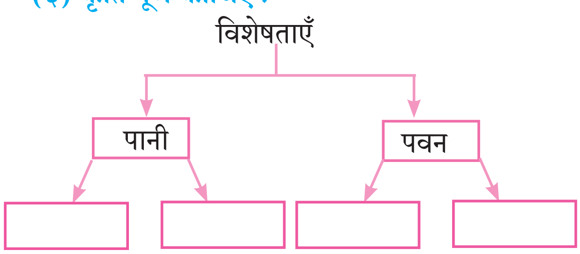

(४) संजाल पूर्ण कीजिए :

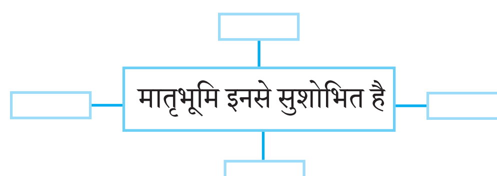

(५) एक शब्द के लिए शब्द समूह लिखिए :

✲ विश्वपालिनी = --------------
✲ भयनिवारिणी = --------------

(६) चौखट में प्रयुक्त शब्दों को सूचना के अनुसार परिवर्तन करके लिखिए :

	विलोम शब्द	शब्द	पर्यायवाची शब्द
१.	________	सत्य	________
२.	________	शीतल	________
३.	________	रात	________
४.	________	निर्मल	________

(६) 'हे शरणदायिनी देवी तू, करती सबका त्राण है' पंक्ति से प्रकट होने वाला भाव लिखिए ।

उपयोजित लेखन

'मैं पंछी बोल रहा हूँ ...' विषय पर निबंध लिखिए ।

CISCHH

२. कलाकार

– राजेंद्र यादव

बहुरूपियों के बारे में हम सब जानते हैं । इन लोगों का पेशा अब समाप्त होता जा रहा है, किसी समय रईसों और अमीरों का मनोरंजन करने वाले बहुरूपिये प्रायः हर नगर में पाए जाते थे । ये कभी धोबी का रूप लेकर आते थे, कभी डाकिए का । हू-बू-हू उसी तरह का व्यवहार करके ये प्रायः लोगों को भ्रम में डाल देते थे । इनकी इसी सफलता से धोखा खा जाने वाला रईस इन्हें इनाम देता था । उसी तरह के बहुरूपिये का एक रूप मैंने राजस्थानी लोककथाओं में सुना था और मुझे वह अभी भी अच्छी तरह याद है । लगता है कि हम सब के भीतर कहीं न कहीं उसी तरह का एक बहुरूपिया बैठा है ।

एक बार एक बहुरूपिये ने साधु का रूप बनाया – सिर पर जटाएँ, नंगे शरीर पर भस्म, माथे पर त्रिपुंड, कमर में लँगोटी । उसके रूप में कहीं कोई कसर नहीं थी और वह संसारत्यागी साधु ही लगता था । उसने नगर से बाहर बड़े-से पेड़ के नीचे अपनी झोंपड़ी तैयार की, बगीचा लगाया और बैठकर तपस्या करने लगा । धीरे-धीरे सारे नगर में यह समाचार फैलने लगा कि बाहर एक बहुत पहुँचे हुए महात्मा ने आकर डेरा लगाया है । लोग उसके दर्शनों को आने लगे और धीरे-धीरे चारों तरफ साधु का यश फैल गया । सारे दिन उसके यहाँ भीड़ लगी रहती थी । लोग कहते थे कि महात्मा जी के उपदेशों में जादू है और उनके आशीर्वाद से संसार के बड़े से बड़े कष्ट दूर हो जाते हैं । अपनी इस कीर्ति से साधु को कभी-कभी बड़ा आश्चर्य होता और मन-ही-मन वह अपनी सफलता पर मुसकराया करता ।

नगर के सबसे बड़े सेठ से जब किसी ने साधु का जिक्र किया, तो वह अविश्वास से हँस पड़ा । बोला, ''ऐसे ढोंगी जाने यहाँ कितने आते रहते हैं !'' और वह अपने कारोबार में लग गया । साधु का नाम चारों ओर फैलता जा रहा था । साधु भी कभी-कभी सोचता कि अब फिर बहुरूपिया जीवन में लौटने में क्या रखा है, क्यों न इसी जीवन में अपनी जिंदगी लगा दी जाए । फिर उसका मन धिक्कारने लगता कि वह जिंदगी भर साधु बना रहा, तो अपने असली पेशे के साथ बेईमानी करेगा । इसी सोच-विचार में उसके दिन निकलने लगे ।

एक बार सेठ की पत्नी बहुत बीमार हो गई । दुनिया भर के इलाज कराए गए, वैद्य-डॉक्टर बुलाए, लेकिन सेठानी की तबीयत ठीक ही नहीं हुई । उसे लगता था कि वह अब नहीं बचेगी । मित्रों और शुभचिंतकों ने सलाह दी कि एक बार उस साधु को दिखा देने में क्या हानि है । हारकर सेठ तैयार हो गया । साधु ने जब दूर से सेठ को आते देखा, तो बहुत प्रसन्न हो

परिचय

जन्म : १९२९, आगरा (उ.प्र.)
मृत्यू : २०१३ दिल्ली
परिचय : राजेंद्र यादव जी साठोत्तरी पीढ़ी के जाने-माने उपन्यासकार एवं साहित्यकार हैं ।
नई कहानी के नाम से हिंदी साहित्य में आपने नई विधा का सूत्रपात किया । उपन्यासकार मुंशी प्रेमचंद द्वारा १९३० में प्रकाशित साहित्यिक पत्रिका 'हंस' का पुनर्प्रकाशन आपने प्रेमचंद की जयंती के दिन ३१ जुलाई १९८६ को प्रारंभ किया और अपने अंतिम समय तक पूरे २७ वर्ष तक जारी रखा ।

प्रमुख कृतियाँ : 'जहाँ लक्ष्मी कैद हैं', 'छोटे-छोटे ताजमहल', 'किनारे से किनारे तक' (कहानी संग्रह), 'सारा आकाश', 'शह और मात' तथा 'उखड़े हुए लोग (उपन्यास) आदि ।

गद्य संबंधी

'कलाकार' कहानी का नायक बहुरूपिया एक श्रेष्ठ कलाकार है । वह अंत तक अपनी कला के प्रति ईमानदार रहता है । ढोंगी साधु का वेश धारण करने पर बहुरूपिया अपने उस रूप और वेश से ऐसा प्रभावित हुआ कि उसका मन भी एक त्यागी और बैरागी संन्यासी के समान सोचने लगता है । इस कहानी से प्रेरणा मिलती है कि हमें अपने व्यवसाय के प्रति ईमानदार होना चाहिए ।

गया । नगर का सबसे बड़ा करोड़पति उसके यहाँ आ रहा था । आगे-आगे सेठ और फिर डोली में बीमार सेठानी । उसने जाकर साधु के चरण पकड़ लिए - ''महाराज, जैसे भी हो सेठानी को जीवनदान दीजिए । यह मेरे घर की लक्ष्मी है । इसी के कारण यह करोड़ों की संपत्ति आई है । जिस दिन से इसने मेरे यहाँ पाँव रखा है, मैंने जिस काम में हाथ लगाया, उसमें लाभ ही हुआ है । अगर इसे कुछ हो गया तो मैं किसी काम का नहीं रहूँगा ।''

साधु ने गंभीर चेहरा बनाकर डोली का परदा उठाया । सेठानी बीमारी में बेहोश पड़ी थी । ''भगवान ने चाहा तो सेठानी सात दिन में ठीक हो जाएगी ।'' उसने धूनी की चुटकी भर राख उसके ऊपर डाल दी । फिर रोज आने को कहकर अपनी आँखें मूँदकर समाधि में लग गया ।

सेठानी रोज आने लगी । संयोग की बात, धीरे-धीरे उसकी तबियत भी सुधरने लगी । सात-आठ दिनों में उसकी बीमारी समाप्त होने लगी । सेठ को साधु पर घनघोर विश्वास हो गया और वह रोज उसके पास आने लगा । सेठानी ठीक हो गई, लेकिन सेठ रोज आता रहा ।

साधु उसे रोज उपदेश दिया करता, ''यह संसार माया है । धन का लोभ आदमी को आदमी नहीं रहने देता । जितना धन बढ़ता जाता है, लोभ भी उतना ही बढ़ता जाता है । सच्चा सुख धन का त्याग करने में है, इस माया-मोह से उठकर भगवान के चरणों में ध्यान लगाने में ही सच्चासुख है । सोना तो मिट्टी है और मिट्टी का मोह पालकर आज तक किसी ने शांति नहीं पाई ।'' धीरे-धीरे साधु के उपदेशों का प्रभाव सेठ पर पड़ने लगा ।

एक दिन साधु ने देखा कि घोड़ों-ऊँटों और बैलगाड़ियों का झुंड उसकी कुटी की तरफ चलता आ रहा है । मन में संदेह हुआ कि लोगों को उसकी असलियत का पता तो नहीं चल गया और ये सरकार के आदमी उसे पकड़ने चले आ रहे हैं । वह अभी यहीं सब सोच ही रहा था कि देखा, उस झुंड के आगे-आगे वही सेठ है । सेठ पास आया । उसने साधु को प्रणाम किया । गाड़ियों, घोड़ों, ऊँटों से, सोने-चाँदी के गहनों, मुहरों और जवाहरों से भरे कलसे उतारें गए । देखते-देखते कुटी के सामने ढेर लग गया । सेठ ने साधु के चरण पकड़कर कहा - ''महाराज, आपके उपदेशों से मुझे सच्चा ज्ञान प्राप्त हो गया है और इस संसार से मेरा मन फिर गया है । झूठ-कपट से मैंने जो धन कमाया है, वह सब मैं आपके चरणों में रख रहा हूँ । इसका जो भी आप चाहें, करें-गरीबों में बाँट दें या मंदिर बनवा दें । मुझे अपना शिष्य बना लें ।''

गंभीर होकर साधु ने उत्तर दिया - ''जिस धन को मैं तुझे त्यागने का उपदेश देता रहा हूँ, तू उसकी माया में मुझे क्यों फँसाता है ? जो तेरे लिए मिट्टी है, वह मेरे लिए मिट्टी तो और भी पहले है । मैं इसमें हाथ नहीं लगा सकता ।'' और सचमुच उसने धन नहीं लिया । समझा-बुझाकर सेठ को लौटा दिया । महात्मा की इस महानता से सेठ की आँखों में आँसू आ गए ।

श्रवणीय

सार्वजनिक अस्पताल में जाकर किसी मरीज से उसके अनुभव सुनिए और अपने शब्दों में सुनाइए ।

संभाषणीय

यू ट्यूब पर लोकसंगीत सुनिए और किसी कार्यक्रम में प्रस्तुत कीजिए ।

अगले दिन जब सेठ आया तो उसने देखा कि साधु का कहीं पता नहीं है । इधर-उधर खोजा, कहीं भी कोई नहीं था । इतने में ही किसी ने आकर उसके चरण पकड़ लिए – ‘‘सेठ, मेरा इनाम दें ।’’

‘‘कैसा इनाम? तू कौन है ?’’ सेठ ने आश्चर्य से उस व्यक्ति को देखकर पूछा ।

‘‘कसूर माफ करना सेठ जी, मैं वही कलवाला महात्मा हूँ । मैं साधु-वाधु कुछ नहीं, आपका सेवक बहुरूपिया हूँ । जब आप जैसे चतुर आदमी को मैंने धोखा दे दिया, तो मुझे अपनी कला का बहुत बड़ा इनाम मिलना चाहिए ।’’ अपराधी भाव से बहुरूपिया सिर झुकाए खड़ा था ।

सेठ आश्चर्य के मारे आसमान से गिरा । फिर सँभलकर बोला – ‘‘इनाम तो मैं तुझे दूँगा । सचमुच तूने अपने काम में कमाल कर दिया । लेकिन एक बात बता, कल जब मैं अपनी सारी संपत्ति तेरे पास ले आया था, तो तूने उसे क्यों नहीं स्वीकार किया ? अगर तू उसे ले लेता, तो आज तू सेठ होता । तुझे इस तरह इनाम माँगने की जरूरत नहीं रहती ?’’

बहुरूपिया नम्रता से बोला – ‘‘सेठजी, यह बात मेरे मन में भी आई थी । इस समय सारी संपत्ति लेकर आज मैं कहीं का कहीं जा सकता था । फिर मेरे मन ने कहा कि यह गलत है । मैं संसारत्यागी महात्मा का रूप धारण किए हुए हूँ । अगर ऐसा काम करूँगा तो रूप में खोट आ जाएगी । रूप को सच्चा रखने के लिए यही उचित है कि मैं इस संपत्ति को त्याग दूँ । सो सच्चे महात्मा की तरह मैंने उसे त्याग दिया, तो लगा कि अब मेरा काम पूरा हो गया । अब आप जो इनाम मुझे देंगे, खुशी से ले लूँगा ।’’

‘‘और मेरी सेठानी की बीमारी ?’’ सेठ ने पूछा ।

‘‘उसमें भी मेरा कुछ नहीं है । वह तो आपका और सेठानी का विश्वास और संयोग था ।’’

सेठ की समझ में सचमुच नहीं आ रहा था कि कैसा यह बहुरूपिया है, जो करोड़ों की संपत्ति छोड़कर दो-चार अशर्फियों के इनाम पर इतना प्रसन्न और संतुष्ट है ।

पठनीय

अपनी रुचि की कोई सामाजिक ई-बुक पढ़िए ।

लेखनीय

किसी सामाजिक परंपरा के बारे में घर के बुजुर्गों से जानकारी प्राप्त कीजिए । वह परंपरा उचित है या अनुचित, इसपर अपना मत शब्दांकित कीजिए ।

शब्द संसार

बहुरूपिया पुं.सं. (हिं.) = तरह-तरह के रूप धारण करने वाला

जिक्र पुं.सं.(अ.)= चर्चा

धिक्कारना क्रि.(हिं.)= झिड़कना

पेशा पुं.सं.(फा.) = उद्‌यम, व्यवसाय

शुभचिंतक पुं.सं.(सं.) = किसी कार्य/व्यक्ति के बारे में अच्छा सोचने वाला

धूनी स्त्री.सं.(हिं.)= साधुओं द्‌वारा बनाया गया अग्निकुंड

अशर्फी स्त्री.सं.(फा.) = मूल्यवान धातु के सिक्के ।

खोट स्त्री.सं(हिं.)= दोष, बुराई

कहावत

डेरा लगाना = निवास के लिए जम जाना

स्वाध्याय

* सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :

(१) संजाल पूर्ण कीजिए :

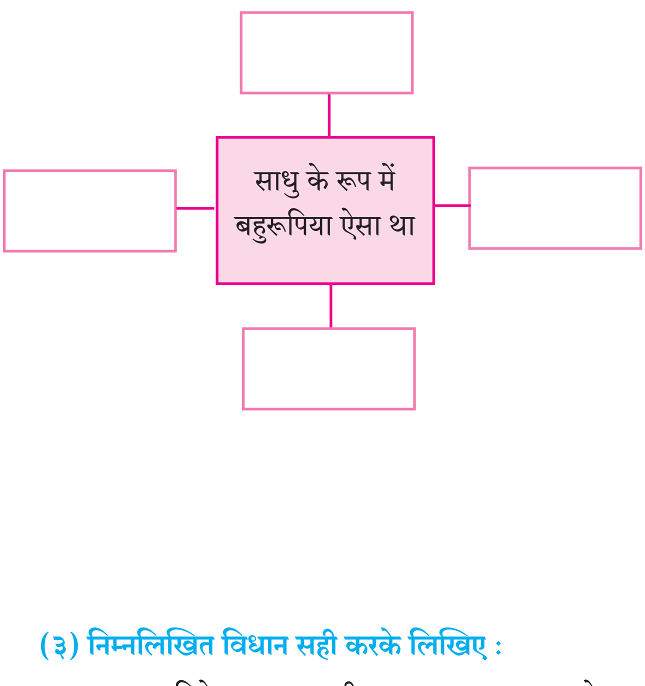

(२) परिणाम लिखिए :

१. बीमार सेठानी पर धूनी की चुटकी भर राख का -

२. बहुरूपिये की वास्तविकता जानने के उपरांत सेठ जी की स्थिति -

(४) प्रवाह तालिका पूर्ण कीजिए :

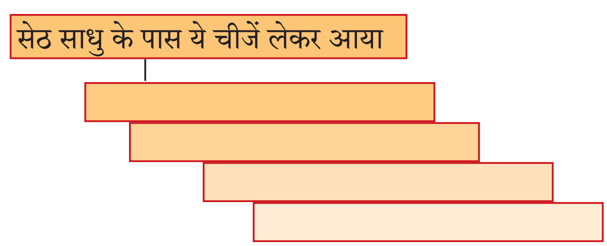

(३) निम्नलिखित विधान सही करके लिखिए :

१. बहुरूपिये हू-ब-हू उसी तरह का व्यवहार करके प्राय: लोगों को भ्रम में नहीं डालते थे ।

२. एक बार सेठ जी बीमार हो गए ।

३. सेठानी कभी-कभी आने लगी ।

४. साधु ने झगड़ा करके सेठ को लौटा दिया ।

(५) निम्नलिखित वाक्यों को घटनाक्रम के अनुसार लिखिए :

१. सेठ जी द्‌वारा सेठानी को साधु के पास ले जाना ।

२. बहुरूपिये का साधु का रूप लेना ।

३. सेठानी का बीमार होना ।

४. धीरे-धीरे सेठानी की तबियत सुधरना ।

(६) इन कृदंत शब्दों की मूल क्रियाएँ लिखिए :

१. झुकाव = ☐
२. सोच = ☐
३. बनावट = ☐
४. लगाव = ☐

(७) 'कला के प्रति ईमानदारी ही सच्चे कलाकार की पहचान है ।' इस सुवचन पर अपने विचार लिखिए ।

अभिव्यक्ति

'सहयोग से कठिन कार्य की पूर्ति होती है' विषय पर अपने विचार शब्दांकित कीजिए ।

भाषा बिंदु

पाठ में प्रयुक्त तीन-तीन क्रियाविशेषण अव्यय और संबंधसूचक अव्यय ढूँढ़कर उनका स्वतंत्र वाक्यों में प्रयोग कीजिए :

................., ..., ...
................., ..., ...
................., ..., ...

उपयोजित लेखन

आपके विद्यालय की सैर का वर्णन करने वाला पत्र अपनी सहेली/अपने मित्र को लिखिए : (पत्र निम्न प्रारूप में हो ।)

दिनांक : ....
संबोधन : ....,
अभिवादन : ....
विषय विवेचन : -----------------------------------

तुम्हारा/तुम्हारी :
....
नाम : ....
पता : ....
ई-मेल आईडी : ....

CJ28YA

३. मुकदमा

– *गोविंद शर्मा*

पात्र : महाराज, मंत्री, हवा, पानी और कुछ लोग । **(महाराज का दरबार । महाराज सिंहासन पर बैठे हैं । एक तरफ मंत्री व दरबारीगण बैठे हैं, सामने अन्य लोग बैठे हैं ।)**

महाराज : मंत्री जी ! शिकायत करने वाले लोग आ गए हैं ?

मंत्री : **(खड़े होते हुए)** हाँ, महाराज !

महाराज : जिनके बारे में शिकायत आई है, क्या उन लोगों को भी यहाँ बुला लिया गया है ?

मंत्री : हाँ, महाराज ! आज सब शिकायतें हवा और पानी के बारे में हैं । वे पास के कमरे में बैठे हैं ।

महाराज : ठीक है, मुकदमे की कार्यवाही शुरू करें । पहले पानी को बुलाया जाए । **(मंत्री इशारा करते हैं । भीगे कपड़े पहने एक लड़का हाजिर होता है । उसके कपड़ों के भीतर छिपे टेपरिकॉर्डर से पानी के बहने की कलकल आवाज सुनाई दे रही है ।)**

पानी : महाराज की जय हो ।

महाराज : पानी ! तुमसे इन लोगों की शिकायत है । यदि शिकायत सच साबित हो गई तो तुम्हें राज्य के कानून के अनुसार दंडित किया जाएगा ।

पानी : महाराज, मुझे नहीं मालूम कि ये लोग मुझसे क्यों नाराज हैं । मैं एकदम निर्मल हूँ महाराज !

मंत्री : महाराज, लोगों की पहली शिकायत यही है कि पानी अब निर्मल नहीं रहा है । यह नदियों और गह्वरों में बहते समय गंदगी और बीमारियाँ अपने साथ बहाकर सब जगह पहुँचा देता है ।

पानी : महाराज, ये लोग पहले की तरह पानी की रखवाली नहीं करते हैं । पशुओं को जोहड़ के भीतर तैरने छोड़ जाते हैं । पशु अपनी गंदगी तालाब में छोड़ जाते हैं । गाँव की दूसरी गंदगी भी तालाब में फेंक दी जाती हैं । नदियों में कारखानों की गंदगी व शहर के गंदे नाले का पानी छोड़ा जाता है । महाराज, मैं अपने आप गंदा नहीं होता । मुझसे शिकायत करने वाले ही गंदा और दूषित करते हैं ।

परिचय

जन्म : १९४६, संगरिया (राजस्थान)
परिचय : गोविंद शर्मा जी ने बाल कहानी, बाल उपन्यास, नाटक, व्यंग्य, जीवनी, लघुकथा आदि सभी विधाओं में लेखन किया है ।
प्रमुख कृतियाँ : 'दीपू और मोती', 'डोबी और राजकुमार' (बाल उपन्यास) 'हमें हमारा घर दो', 'मेहनत का मंत्र' (कहानी संग्रह), 'नया बाल दिवस' (नाटक संग्रह) 'कुछ नहीं बदला', 'जहाज के नये पंछी' (व्यंग्य संग्रह) 'रामदीन का चिराग' (लघुकहानी संग्रह) आदि ।

गद्य संबंधी

प्रस्तुत एकांकी में नाटककार ने जल एवं वायु प्रदूषण पर प्रकाश डाला है । लोग प्रदूषण के मूल कारण का पता नहीं लगाते । वे केवल दूसरों पर दोषारोपण करते हैं। लेखक का कहना है कि प्रदूषण का मूल कारण मानव ही है । अतः हमें प्रदूषण को समाप्त करने हेतु आवश्यक कदम उठाने चाहिए ।

महाराज : भाइयो, आपके पास इसका क्या जवाब है ?**(लोग आपस में फुसफुसाकर बातें करते हैं, फिर उनमें से एक बोलता है ।)**

एक : महाराज, यह तो मान लिया पर कहीं बरसना, कहीं नहीं बरसना, यह तो इस पानी की मनमानी है।

पानी : नहीं, महाराज, मुझ पानी की मर्जी कहाँ चलती है । जिधर ढलान हो, जहाँ का माहौल अनुकूल हो, वहाँ मुझे जाना ही पड़ता है । इन लोगों ने पहाड़ियों को काटकर वहाँ मैदान बना दिए हैं । पेड़ काट डाले हैं । वन नष्ट कर दिए हैं । ऐसी जगह बरसात कैसे हो सकती है? वर्षा न होने के लिए भी यही लोग जिम्मेदार हैं।

दूसरा : अधिक वर्षा के लिए कौन जिम्मेदार है ?

पानी : जो बादल बना है, वह तो बरसेगा ही । फिर जहाँ वर्षा का पानी बहना चाहिए, जहाँ नदी बहनी चाहिए, जहाँ मेरे सुस्ताने की पुरानी जगह होगी, वहाँ तो मैं जाऊँगा ही । लोगों ने ऐसी जगहों पर घर बना लिए हैं । ऐसे घर तो डूबेंगे ही । मैं इनकी बनाई गलियों-नालियों में घूमता रहूँ, यह कैसे संभव है ? **(लोग फिर आपस में बात करते हैं ।)**

तीसरा : महाराज, हमारा गाँव सदियों से ऊँची जगह पर बसा हुआ है। हमने नीची जगहों पर कोई घर नहीं बनाया है फिर भी इस बार हमारा गाँव बाढ़ का शिकार हुआ है । महाराज, पानी पागल हाथी की तरह चलता है । आँख मूँदकर चलता है ।

पानी : नहीं महाराज, मैं देखकर चलता हूँ तभी तो ढलान की तरफ जाता हूँ। कभी ऊँची जगह पर चढ़ने की कोशिश नहीं करता हूँ। ये लोग जानते हैं कि इनके गाँव के पास एक पहाड़ है । पहले उसपर बहुत से वृक्ष होते थे । पहाड़ से उतरते समय मैं वृक्षों के बीच में से होकर धीरे-धीरे आता था और सीधे पानी के रास्ते यानी नदी, नाले में बहता था । अब लोगों ने पहाड़ के वृक्ष साफ कर दिए हैं । मैं वहाँ से उतरता नहीं हूँ बल्कि लुढ़कता हुआ नीचे आता हूँ। मुझे खुद पता नहीं चलता कि नीचे मैं कहाँ गिरूँगा ? अगर वृक्ष होते तो ऐसा नहीं होता । इस बात के लिए ये गाँववाले ही जिम्मेदार हैं ।

महाराज : कोई और शिकायत ? **(कोई नहीं बोलता)** तुम्हारी चुप्पी इस बात की गवाह है कि तुमने भी इन कारणों को मान लिया है। तुम्हारा भला इसी में है कि अपनी गलतियाँ सुधारो और पानी को निर्मल तथा उपयोगी रहने दो ।

श्रवणीय

अस्पताल में अपने किसी बीमार रिश्तेदार से मिलकर उनके अनुभव सुनिए ।

पठनीय

असंतुलित आहार, जंक फूड से स्वास्थ्य की होने वाली हानि की जानकारी पढ़िए और चार्ट बनाइए ।

(दूसरा दृश्य)

(वैसा ही दरबार । इस बार पानी की जगह हवा है । हवा बनी लड़की के पंख उड़ रहे हैं । परदे के पीछे रखे पंखे की हवा सीधे उसपर पड़ रही है । साँय-साँय की हल्की आवाज आ रही है ।)

महाराज : मंत्री जी, हवा के प्रति लोगों की क्या शिकायतें हैं ?

(एक आदमी आगे आता है)

आदमी : महाराज की जय हो, महाराज आज-कल हवा में खुशबू नहीं होती । यह हर समय हमारे यहाँ बदबू फैलाती है । इसकी बदबू के कारण रहना मुश्किल हो गया है ।

हवा : महाराज, यह आरोप झूठा है । बदबू के कारण तो मेरा जीना कठिन हो गया है । अपने-आपमें मेरे पास न तो खुशबू है न बदबू । पहले ऐसा नहीं होता था । आज-कल ये लोग मरे हुए पशु-पक्षियों को यहाँ-वहाँ डाल देते हैं । उनके कारण मैं बदबूवाली हो जाती हूँ । इनके कारखानों से निकली गंदगी और गैसें मुझमें घुल जाती हैं और यह बदबू दूर तक फैलती रहती है । मुझे याद है कि एक बार भोपाल के एक कारखाने से निकली जहरीली गैस मुझपर सवार होकर दूर-दूर तक फैल गई थी और कितने ही लोग रात में सोए हुए ही मौत के मुँह में चले गए थे । इन लोगों से कहिए कि ये गंदगी के ढेर न लगाएँ, सफाई रखें । कचरे से कंपोस्ट खाद बनाएँ ।

आदमी : लेकिन तुम अचानक चलकर हमारी आँखों में मिट्टी डाल देती हो, सब कुछ तबाह कर देती हो, क्या इसका हमने तुम्हें न्योता दिया था ?

हवा : मैं किसी के निमंत्रण का इंतजार नहीं करती । चलना मेरा काम है । आप कहते हो तो लो, मैंने चलना बंद किया । **(हवा का चलना बंद हो जाता है । सभी घुटन महसूस करते हैं ।)**

मंत्री : अरे हवा रानी ! नाराज मत हो । धीरे-धीरे तो चलो, साँस लेना मुश्किल हो रहा है । तुम चलोगी नहीं तो लोग जिंदा कैसे रहेंगे ? **(हवा बहने लगती है ।)**

महाराज : हवा के बारे में कोई और शिकायत ?

औरत : महाराज, हम अपने घर साफ-सुथरे रखते हैं पर हवा आँधी बनकर आती है और हमारे घर रेत और कूड़े से भर देती है । हवा तो बहे पर आँधी क्यों ?

हवा : महाराज, आँधी से इनका मतलब मेरे तेज चलने से है । वैसे तो मैं हर समय बहती रहती हूँ, पर इन्हें जब गरमी लगती है

लेखनीय

इस पाठ के आशय से संबंधित उपयुक्त जानकारी का संकलन करके लिखिए ।

तो पंखा चलाकर मेरी गति बढ़ा लेते हैं । उसी तरह जहाँ भी हवा कम होती है, मैं तेजी से वहाँ जाती हूँ । जब मैं तेजी से चलती हूँ तो रेत, मिट्‌टी, कूड़ा आदि जो भी हल्की चीजें रास्ते में होती हैं, मेरे साथ उड़ने लगती हैं । ये अपने घर और दूकान साफ करके कूड़ा घर के आस-पास गली में या सड़क पर डाल देते हैं । कई बार गाँव के बाहर कूड़े के ढेर लगा देते हैं । इनका फेंका कूड़ा ही वापस इनके घरों में जाता है । महाराज ! लोग अपने गाँव या शहर में पॉलिथिन की थैलियाँ सड़कों पर फेंकते हैं । वे मेरे साथ उड़कर खेतों में फैल जाती हैं और फसलों को नुकसान पहुँचाती हैं । जैसी करनी वैसी भरनी । इसमें मैं क्या कर सकती हूँ । इससे मेरा भी मन बड़ा दुखी होता है ।

महाराज : मैंने सबकी बात सुनी है । लोग हवा-पानी से दुखी तो हैं पर कसूर इनका नहीं है । लोगों को सफाई की आदत अपनानी होगी तभी ये दूषित होने से बचेंगे । हमें चाहिए कि हम हवा और पानी को अपना दोस्त मानकर उन्हें नुकसान न पहुँचाएँ और इन्हें प्रदूषण से बचाने के उपाय खोजें, उचित कार्यवाही करें । इसमें ही हमारा भला और बचाव है । **(लोग हवा, पानी के प्रति दोस्ती का भाव दिखाते हुए चले जाते हैं ।)**

('मुकदमा : हवा पानी का' संग्रह से)

—— ० ——

संभाषणीय

'पर्यावरण की शुद्‌धता : मेरी जिम्मेदारी' विषय पर चर्चा में अपनी मौखिक अभिव्यक्ति दीजिए ।

शब्द संसार

गहवर पुं.सं.(सं.) = गड्‌ढा
जोहड़ पुं.सं.(दे.) = छोटा प्राकृतिक तालाब
सदियों स्त्री.सं.(अ.)= सौ वर्ष का समय, शताब्दियों
निर्मल वि.(सं.) = स्वच्छ

मुहावरे

आँख मूँदकर चलना = बिना सोचे-विचारे चलना
मौत के मुँह में चले जाना = जान-बूझकर खतरा मोल लेना

कहावत

जैसी करनी, वैसी भरनी = कर्म के अनुसार ही फल का मिलना

स्वाध्याय

✻ सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :–

(१) कृति पूर्ण कीजिए :

१.पानी की मनमानी

२. पानी यहाँ बरसता है

(२) उचित विकल्प चुनकर विधान पूर्ण कीजिए :

१. हवा बदबूदार होने का कारण है कि --------
(अ) हवा बहती नहीं है ।
(आ) हवा में कारखानों की गंदगी और गैसें होती हैं ।
(इ) हवा दूर-दूर से आती है ।

२. हवा पर आरोप लगाया गया था कि --------
(अ) हवा में शुद्‌धता नहीं होती ।
(आ) हवा में नमी नहीं होती ।
(इ) हवा में खुशबू नहीं होती ।

(३) कारण लिखिए :

१. पानी अशुद्‌ध होने के कारण –
१.
२.
३.
४.

(४) ऐसे प्रश्न तैयार कीजिए जिनके उत्तर निम्न शब्द हों :

१. जोहड़   २. साफ-सुथरे

(५) (अ) वृत्त में दिए शब्दों के लिंग तथा वचन के अनुसार वर्गीकरण कीजिए :

लिंग
पंखा, नदी, फसल, कूड़ा, सड़क, गाँव, नाली, वृक्ष

वचन
शिकायतें, गवाहें बीमारी, सदियाँ, कारखाने, आँख, आदत, मुकदमा

स्त्रीलिंग	पुलिंग	एकवचन	बहुवचन
______	______	______	______
______	______	______	______
______	______	______	______
______	______	______	______
______	______	______	______
______	______	______	______
______	______	______	______
______	______	______	______

(६) (ब) शब्द-युग्म बनाइए :

कूड़ा – ...., इधर – ...., गाँव – ...., ... – द्‌वार, हवा – ....,
सीधा – ...., साफ – ...., झाड़ – ....

अभिव्यक्ति 'बढ़ते हुए प्रदूषण को रोकने के उपाय' पर अपने विचार लिखिए ।

भाषा बिंदु

इन शब्दों से बने मुहावरे तथा उनके अर्थ लिखकर स्वतंत्र वाक्यों में प्रयोग कीजिए :

मुहावरा : --------------------	← कान →	मुहावरा : --------------------
अर्थ : --------------------		अर्थ : --------------------
वाक्य : --------------------		वाक्य : --------------------
मुहावरा : --------------------	← नाक →	मुहावरा : --------------------
अर्थ : --------------------		अर्थ : --------------------
वाक्य : --------------------		वाक्य : --------------------
मुहावरा : --------------------	← सिर →	मुहावरा : --------------------
अर्थ : --------------------		अर्थ : --------------------
वाक्य : --------------------		वाक्य : --------------------

उपयोजित लेखन

अपने ग्राम/नगर/महानगर के संबंधित अधिकारी को बच्चों के खेलने के लिए बगीचा बनवाने हेतु पत्र लिखिए। (पत्र निम्न प्रारूप में हो)

दिनांक : ....

प्रति,

विषय : ------------------------------------

विषय विवेचन :

भवदीय/भवदीया,

नाम : ---------------

पता : ---------------

ई-मेल आईडी : ---------------

CJB4ZX

४. दो गजलें

– *राजेश रेड्डी*

पहले इक आसमान पैदा कर,
फिर परों में उड़ान पैदा कर ।

अपनी आँखों से जिंदगी को पढ़,
अपने अनुभव से ज्ञान पैदा कर ।

सब्र के पेड़ पर लगेंगे फल,
सोच में इतमीनान पैदा कर ।

ऐ खुदा ! जिसमें जी सके इन्साँ,
कोई ऐसा जहान पैदा कर ।

तूने बख्शी है जिंदगी, तू ही,
जिंदगी में जान पैदा कर ।

छोड़ दुनिया से छाँव की उम्मीद,
खुद में इक सायबान पैदा कर ।

दिल से निकले दिलों में बस जाए,
ऐसी आसाँ जुबान पैदा कर ।

× × × ×

यहाँ हर शख्स हर पल हादिसा होने से डरता है,
खिलौना है जो मिट्‌टी का, फना होने से डरता है ।

मेरे दिल के किसी कोने में इक मासूम-सा बच्चा,
बड़ों की देखकर दुनिया बड़ा होने से डरता है ।

न बस में जिंदगी इसके, न काबू मौत पर इसका,
मगर इन्सान फिर भी कब खुदा होने से डरता है ।

अजब ये जिंदगी की कैद है, दुनिया का हर इन्साँ,
रिहाई माँगता है और रिहा होने से डरता है ।

('उड़ान' गजल संग्रह से)

— ० —

परिचय

जन्म : १९५२, नागपुर (महाराष्ट्र)
परिचय : राजेश रेड्डी जी मूलतः हैदराबाद के हैं पर जन्म नागपुर में और परवरिश जयपुर में हुई । आपने हिंदी, अंग्रेजी के साथ-साथ उर्दू भाषा भी बाकायदा सीखी । आप हमेशा जगबीती को आपबीती बनाकर गजल लिखते हैं । आपने गजलों के साथ-साथ नाटक भी लिखे हैं । आप विविध भारती, मुंबई से भी जुड़े थे ।
प्रमुख कृतियाँ : 'उड़ान', 'आसमान से आगे', 'वजूद' (गजल संग्रह) आदि ।

पद्‌य संबंधी

यहाँ राजेश रेड्डी जी की दो गजलें दी गई हैं । प्रथम गजल के अधिकांश शेरों में गजलकार हम सभी से कह रहे हैं कि कोई भी कार्य करने के पहले हमें अपने-आपमें जोश, उत्साह, ज्ञान, आत्मविश्वास आदि पैदा करना चाहिए ।

दूसरी गजल के शेरों में उन्होंने बचपन की मासूमियत और बड़े होने पर दुनिया-समाज और उनके बीच में परेशान इनसान को बड़े ही मार्मिक ढंग से दर्शाया है ।

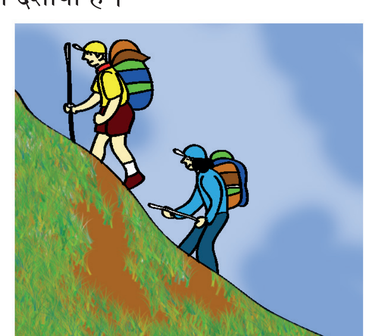

शब्द संसार

सब्र पुं.सं.(दे.) = सबर, संयम, धैर्य
इतमीनान पुं.सं.(अ.) = तसल्ली, ढाढ़स
जहान पुं.सं.(फा.) = संसार, जगत
जान स्त्री.सं.(फा.) = प्राण, जीवन
उम्मीद स्त्री.सं.(फा.) = आशा, भरोसा
सायबान पुं.सं.(फा.) = घर के आगे छाया हेतु बनाया हुआ छप्पर
काबू पुं.सं.(तु.) = वश, अधिकार

स्वाध्याय

✻ सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :-

(१) कृति पूर्ण कीजिए :

कवि ने इन्हें स्वयं निर्माण करने के लिए कहा है

(२) संजाल पूर्ण कीजिए :

डरता है

------ | खिलौना
मासूम बच्चा | ------
------ | खुदा होने से
------ | हादिसा होने से

(३) कृति में दिए गजल में प्रयुक्त शब्दों की उचित जोड़ियाँ क्रमशः अ और आ तालिका में लिखिए :

उम्मीद, ज्ञान, छाँव, पर, जिंदगानी, जान, उड़ान, अनुभव

अ	आ
------------	------------
------------	------------
------------	------------
------------	------------

(४) उचित शब्द का चयन करते हुए वाक्य पूर्ण कीजिए :
(मिट्टी, कैद, बंदी, रिहा, छूटना)

१. अजब ये जिंदगी की ------- है ।
२. रिहाई माँगता है और ------- होने से डरता है ।

(५) सूचना के अनुसार शब्द में परिवर्तन कीजिए :

बच्चा
विलोम ....
बहुवचन ....
लिंग ....
पर्यायवाची ....

(६) 'जीवन में डर की जगह सावधानी एवं साहस चाहिए' विषय पर अपने विचार व्यक्त कीजिए ।

भाषा बिंदु

(१) निम्नलिखित वाक्यों के रचना के अनुसार भेद लिखिए :

१. वह आदमी भी उस गाँव में रहने के लिए तैयार हो गया ।

२. स्टेशन मास्टर ने सिग्नल नहीं दिया और गाड़ी आउटर पर खड़ी रही ।

३. मजे की बात यह है कि एक समाचारपत्र के कितने उपयोग हो सकते हैं ।

४. वह पशु-पक्षियों के बीच बातें करता दिखाई देता ।

५. आप उस गाँव में जाएँगे तो आपको उस खोए हुए आदमी की वहाँ स्थापित मूर्ति दिख जाएगी ।

६. नींद आती रहती है, जाती रहती है और रह-रहकर टूटने के बावजूद उसमें लय बनी होती है ।

(२) पाठों में आए रचना के अनुसार वाक्यों के दो-दो उदाहरण लिखिए ।

(३) निम्नलिखित वाक्यों के अर्थ के अनुसार भेद लिखिए :

- सुबह उठता हूँ तो थोड़ी ताजगी महसूस होती है ।
- अरे, वहीं अटके रहोगे, मुझसे बात नहीं करोगे ?
- कई दिनों से मैं तुम्हारे चौके में नहीं गई ।
- ठीक है, मुकदमे की कार्यवाही शुरू करें ।
- अरे ! हवा रानी, नाराज मत हो ।
- इस बात के लिए ये गाँववाले ही जिम्मेदार हैं ।
- अधिक वर्षा के लिए कौन जिम्मेदार है ?
- अच्छा ! निकलती हूँ बस पाँच मिनट चाहिए मुझे तैयार होने के लिए ।
- हाँ राजीव, आओ बैठो ।
- यह एक भोले इनसान का विश्वास नहीं था ।

(४) पाठों में आए अर्थ के अनुसार वाक्यों के दो-दो उदाहरण लिखिए ।

उपयोजित लेखन

विज्ञापन :

अपने विद्यालय में आयोजित की जाने वाली
क्रीड़ा प्रतियोगिताओं का आयोजक के नाते
विज्ञापन तैयार कीजिए :

दिनांक, स्थल, समय | खेल, संपर्क

CJK12K

५. चार हाथ चाँदना

(पठनार्थ)

–अमृता प्रीतम

(पंजाब के प्रसिद्‌ध चित्रकार श्री शोभा सिंह से प्रसिद्‌ध साहित्यकार अमृता प्रीतम की बातचीत)

अमृता प्रीतम : शोभा सिंह जी ! चित्रकला में तकनीकी और रूहानी पहलू से जितना अनुभव आपका है– वर्षों के हिसाब से भी और चिंतन की गहराई के हिसाब से भी उतना इस समय हमारे और किसी कलाकार का नहीं है । कलाकार के कर्म की व्याख्या करनी हो तो आप किन शब्दों में करेंगे ?

शोभा सिंह : सबसे पहले सत्यम शिवम और सुंदरम का क्रम बदलना होगा । मैं इसे सुंदरम, शिवम और सत्यम का क्रम देता हूँ। सुंदरता के लिए नजर सबसे पहली अवस्था है और सत्य उसकी तीसरी अवस्था । यह विकास की क्रिया है– जिसकी पहली मंजिल सुंदरता की कल्पना है । उसी कल्पना को जिसे आप अक्षरों के माध्यम से कागज पर उतारती हैं... चित्रकार रंगों और लकीरों के माध्यम से कैनवस पर उतारता है ।

अमृता प्रीतम : चित्रकला का माध्यम आपने कैसे चुना ?

शोभा सिंह : इस सवाल का जवाब ढूँढ़ने के लिए मैंने कई बार एकांत में बैठकर अपनी आयु के सब वर्षों को टटोला है, वर्षों की निचली तहों को भी । मुझे लगता है कि लोगों को भी यह पक्का भुलावा हो गया है कि मैं चित्रकार हूँ और मैं खुद भी अपने आपको यही भुलावा-सा देता हूँ । इस भुलावे की बुनियाद एक घर था जिसकी मुझे जन्म से तलाश थी। मुझे याद है, मैं मुश्किल से कोई आठ बरस का रहा हूँगा, जब आँगन की रसोई पर जो परछत्ती बनी हुई थी, मुश्किल से साढ़े तीन फुट की रही होगी, मैंने उसे धो-पोंछकर अपना 'घर' बनाया था और उस परछत्ती के साथ जो कुछ हाथ खुली जगह थी, वहाँ दो टूटी हुई हँड़ियाँ रखकर, उनमें मिट्‌टी भरकर, चंपा के पौधे लगा लिए थे । मुझे तब पढ़ना भी नहीं आता था, पर एक सुंदर-सी जिल्दवाली 'पंज ग्रंथी' लेकर मैंने 'घर' में सजा

परिचय

जन्म : १९१९, गुजरांवाला (पंजाब)
मृत्यु : २००५, (नई दिल्ली)
परिचय : अमृता प्रीतम पंजाबी की प्रतिष्ठित साहित्यकार हैं । आपने पंजाबी तथा हिंदी में प्रचुर लेखन किया है। इनमें उपन्यास, आत्मकथा, संस्मरण, कहानियाँ, कविताएँ आदि शामिल हैं । आपका लेखन पाठक की संवेदना को झकझोरकर रख देता है । आपको ज्ञानपीठ से सम्मानित किया गया है।
प्रमुख कृतियाँ : 'पिंजर', 'कोरे कागज', 'सागर और सीपियाँ' (उपन्यास), 'रसीदी टिकट' (आत्मकथा), 'कच्चा आँगन', 'एक थी सारा' (संस्मरण), 'हीरे दी कनी', 'इक शहर दी मौत', 'तीसरी औरत' (कहानी संग्रह) आदि हिंदी में अनूदित ।

गद्‌य संबंधी

प्रस्तुत साक्षात्कार में अमृता प्रीतम जी ने चित्रकार शोभा सिंह से उनके अनुभव, चित्रकला चुनने के कारण, चित्रकला के विषय आदि पर प्रश्न किए हैं । शोभा सिंह ने इन प्रश्नों के उत्तर विस्तार से दिए हैं ।

ली थी। उसके लिए एक चँवर भी ढूँढ़ लिया था जो दीमक का खाया हुआ था । साथ ही साढ़े तीन फुट की परछत्ती की दीवारों पर, जो भी कागजों की तस्वीरें मिली थीं, लगा ली थीं और 'घर' सजा लिया था । वह घर कभी न बना और मैं खयाली घर की दीवारें सजाने के लिए तस्वीरें बनाने लगा ।

अमृता प्रीतम : आप औरत को औरत के तौर पर महत्त्व नहीं देते? केवल माँ के तौर पर महत्त्व देते हैं?

शोभा सिंह : मैं रचनात्मक शक्ति के संबंध में कह रहा हूँ । जैसे अमृता का महत्त्व उसके लेखिका होने के कारण है, शोभा सिंह का चित्रकार होने के कारण, उसी तरह औरत का महत्त्व उसके माँ होने के कारण है । उसकी रचनात्मक शक्ति उसके माँ होने में है। अपने अस्तित्व की धरती में वह एक बीज को धारण करने के लिए माँ-बाप, बहन-भाई, घर-सहेलियाँ, सब कुछ छोड़कर वह एक नई और ऊपरी धरती पर चली जाती है, यह कितनी बड़ी साधना है । यही उसकी कला है, उसकी दैवी शक्ति, उसका ज्ञान, इसी जगह वह 'जीनियस' है ।

अमृता प्रीतम : कलाकार का कर्म समूची दुनिया के होने में कोई फर्क डाल सकता है?

शोभा सिंह : मैं एक सच्चे कलाकार का कर्म एक छोटी-सी जलती हुई मोमबत्ती समझता हूँ, जो दूर तक उजाला नहीं कर सकती, पर अपने इर्द-गिर्द, दो-चार हाथ धरती को जरूर चाँदना दे सकती है । यही दो-दो, चार-चार हाथ का चाँदना पूरी सभ्यता को प्रभावित कर सकता है ।

अमृता प्रीतम : हमारी धरती का यथार्थ बहुत भयानक है, क्या आप कभी वह यथार्थ चित्रित करना चाहेंगे ?

शोभा सिंह : नहीं । वह यथार्थ जगह-जगह पर, सड़कों की पटरियों पर भी चित्रित हुआ पड़ा है । भयानक गरीबी और अंतहीन दुखों का इतिहास । उसे मैं दोबारा कागजों पर क्यों चित्रित करूँ? जिंदगी की खूबसूरती और जिंदगी की अच्छाई जो दिनोंदिन लोप होती जा रही है, मैं उसे कागज पर चित्रित करना चाहता हूँ, ताकि वह मिटते-मिटते कभी हमारी कल्पना से भी न मिट जाए । विलियम ब्लेक की एक पंक्ति है कि 'सुंदर ईश्वर को गुलाब का एक फूल बनाने

आपको देशभक्ति पर आधारित गीतों का कार्यक्रम प्रस्तुत करना है । इसकी रूपरेखा बनाने हेतु रेडियो पर गीतों का कोई कार्यक्रम सुनिए ।

'रंगों का जीवन में बड़ा महत्त्व है' उदाहरण सहित स्पष्ट लिखिए ।

में पचास हजार बरस लगे थे ।' अगर हम 'स्वयं' को बड़ा कर लें तो जो कुछ दुनिया में से खोता जा रहा है, वह किसी हद तक खो जाने से बच जाए। गुरुओं के चित्र भी मैं इसीलिए बनाता हूँ क्योंकि उनके 'स्वयं' महान थे । अगर कभी कोई गुरु के हाथ से या किसी महान व्यक्तित्व के हाथ से अमृत छक लेता था-वह सचमुच एक शक्ति को धारण कर लेता था । यह केवल एक भोले इन्सान का विश्वास नहीं था जो उसे शक्ति देता था, यह उस व्यक्तित्व का प्रभाव था जिसके हाथ से वह शक्ति ग्रहण करता था । कलाकार का कर्म भी एक व्यक्तित्व बनना है, तभी कला में उसका प्रभाव आ सकता है । कला जब कला के लिए होती है तब उसका कोई प्रभाव नहीं होता ।

अमृता प्रीतम : सो कलाकार की शक्ति उसके चिंतन में है, और चिंतन के अमल में । इसमें आप दर्शक का कर्म क्या समझते हैं ?

शोभा सिंह : कई दर्शक ऐसे भी होते हैं, जो बगल में लगे हुए चित्र को देखने के लिए पूरी तरह गरदन भी नहीं घुमाते या सरसरी नजर से सब चित्रों को देखकर पूछेंगे-बस..., और तस्वीरें नहीं हैं ? पर कलाकार का कर्म किसी हद तक दर्शक को वह आँख देना भी है - जिससे वह देख-समझ सके । कुछ दिन हुए एक अमीर-सी औरत आई । बड़े आदर से चित्रों को देखती रही, बैठी रही, फिर बोली, ''आपने मुझे प्रसाद नहीं दिया ।'' मैंने पूछा, ''आपने इतनी देर इस पहाड़ी हवा में साँस ली-फिर क्या यह सुख प्रसाद नहीं है ? क्या प्रसाद सिर्फ बूँदी होता है ?'' यही सोच और सूझ होती है जिसे कलाकार को अपने दर्शक को देना होता है ।

('शौक सुराही' से)

— ० —

पठनीय

'कला अभिव्यक्ति का माध्यम है' अंतरजाल की सहायता से इसकी जानकारी इकट्‌ठा कर पढ़िए ।

संभाषणीय

'कलादीर्घा (आर्ट गैलरी) में बिताए हुए समय' का अपना अनुभव अपने मित्रों को बताइए ।

शब्द संसार

चाँदना पुं.सं.(हिं.) = प्रकाश, उजाला, चाँदनी
परछत्ती स्त्री.सं.(हि.)= घास-फूस का बना छप्पर
यथार्थ पुं.सं.(सं.)= सत्य

मुहावरा

भुलावा हो जाना = भ्रम हो जाना

स्वाध्याय

✲ सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :–

(१) विधानों के सामने सही अथवा गलत लिखिए :

१. शोभा सिंह ने 'सत्यम्, शिवम्, सुंदरम्' का क्रम बदला है । ☐

२. प्रश्नकर्ता के अनुसार हमारी धरती का यथार्थ बहुत भयानक नहीं है । ☐

३. कलाकार की शक्ति उसके चिंतन में है । ☐

४. शोभा सिंह कलाकार का कर्म एक छोटी-सी जलती हुई मोमबत्ती नहीं समझते । ☐

(२) कृति पूर्ण कीजिए :

माँ का महत्त्व

☐ ☐ ☐ ☐ ☐

(३) उचित जोड़ियाँ मिलाइए :

अ	उत्तर	आ
चित्रकार	-------	माँ
लेखक	-------	शोभा सिंह
ईश्वर	-------	अमृता प्रीतम
जीनियस	-------	बेगाना पुत्र
		कलाकार

(४) उचित विकल्प चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

१. सुंदरता के लिए ------- सबसे पहली अवस्था है ।(नजर, दृष्टि, नजरिया)

२. हमारी धरती का ------- बहुत भयानक है ।(सत्य, यथार्थ, वास्तव)

३. कलाकार की शक्ति उसके ------- में है ।(चिंतन, मनन, साधना)

४. मैं रचनात्मक ------- के संबंध में कह रहा हूँ । (युक्ति, कृति, शक्ति)

(५) पाठ में प्रयुक्त ऐसे शब्द ढूँढ़कर लिखिए जिनका वचन परिवर्तन नहीं होता ।

जैसे : वृक्ष = वृक्ष

______, ______, ______, ______,

______, ______, ______, ______,

अभिव्यक्ति

'कला जीवन को आनंदित करने का साधन है,' विषय पर अपना मत स्पष्ट कीजिए ।

भाषा बिंदु

वर्तनी के नियमों के अनुसार शुद्ध शब्द छाँटकर लिखिए :

- मुश्कील/मुशकील/मुश्किल/मुष्कील = ________
- परसिद्ध/प्रसिद्ध/प्रसीध्द/प्रसिध्ध = ________
- मिट्टी/मिट्यी/मिठ्टी/मीट्ठी = ________
- रूतूएँ/ऋतुएँ/ऋतूए/ऋतूयें = ________

CVY9I5

उपयोजित लेखन

'पुस्तक मेले में दो घंटे' विषय पर अस्सी से सौ शब्दों में निबंध लिखिए ।

६. अति सोहत स्याम जू

– रसखान

मानुष हौं तो वही 'रसखान', बसौं मिलि गोकुल गाँव के ग्वारन ।
जो पसु हौं तो कहा बस मेरो, चरौं नित नंद की धेनु मँझारन ।।
पाहन हौं तो वही गिरि को, जो धर्‌यो कर छत्र पुरंदर कारन ।
जो खग हौं तो बसेरो करौं मिलि कालिंदी कूल कदंब की डारन ।।

धूरि भरे अति सोहत स्याम जू, तैसी बनी सिर सुंदर चोटी ।
खेलत खात फिरैं अँगना, पग पैंजनि बाजति, पीरी कछोटी ।।
वा छबि को 'रसखान' बिलोकत, वारत काम कला निधि कोटी ।
काग के भाग कहा कहिए, हरि हाथ सों लै गयो माखन रोटी ।।

सोहत है चँदवा सिर मोर को, तैसिय सुंदर पाग कसी है ।
वैसिय गोरज भाल बिराजत, जैसी हिये बनमाल लसी है ।।
'रसखान' बिलोकत बौरी भई, दृग मूँदि कै ग्वालि पुकार हँसी है ।
खोलि री घूँघट, खोलौं कहा, वह मूरति नैननि माँझ बसी है ।।

सेस, गनेस, महेस, दिनेस, सुरेसहु जाहि निरंतर गावैं ।
जाहि अनादि, अनंत, अखंड, अछेद, अभेद, सुबेद बतावैं ।।
नारद से सुक व्यास रटें, पचिहारे तऊ पुनि पार न पावैं ।।
ताहि अहीर की छोहरियाँ, छछिया भरि छाछ पै नाच नचावैं ।।

परिचय

जन्म : १५९० के लगभग, पिहानी
मृत्यु : मथुरा (उ.प्र.)
परिचय : रसखान जी का मूलनाम सैयद इब्राहिम था । आपकी अधिकांश रचनाएँ भगवान कृष्ण को समर्पित हैं । आपके काव्य में भक्ति, शृंगार रस की प्रधानता मिलती है ।
प्रमुख कृतियाँ : 'प्रेमवाटिका' (दोहे) 'सुजान रसखान' (कवित्त, सवैया) आदि ।

पद्‍य संबंधी

सवैया : यह छंद का एक प्रकार है । इसमें चार चरण होते हैं । प्रत्येक चरण में २२ से २६ वर्ण होते हैं ।

यहाँ चयनित सभी रचनाएँ सवैया छंद में हैं । इन सभी सवैयों में उनका कृष्ण प्रेम छलकता है । यहाँ पर रसखान जी ने कृष्ण के बालरूप, अपनी इच्छा और श्रीकृष्ण की व्यापकता का वर्णन किया है ।

शब्द संसार

मँझारन–मँझार क्रि.वि.(सं. दे.)= बीच में
पाहन पुं.सं.(दे.) = पत्थर
डारन स्त्री.सं.(हिं.दे.) = डाली
धूरि स्त्री.(दे.)= धूल
जू वि.(दे.) = जी
पीरी स्त्री.वि.(हिं.दे.) = पीले रंग की
कछोटी स्त्री.सं.(हिं.दे.)= कमर में लपेटी जाने वाली धोती
बिलोकत क्रि.(दे.)= देखना
वारत क्रि.(दे.)= निछावर करना
पाग स्त्री.सं.(हिं.दे.) = पगड़ी
भाल पुं.सं.(सं.)= मस्तक
हिय पुं.सं.(दे.)= हृदय
लसी क्रि.(दे.)= सुशोभित होना
दृग पुं.सं.(सं.)= आँख
पचिहारे क्रि.(दे.)= हार जाना
अहीर पुं.सं.(सं.) = ग्वाला, आभीर
छछिया सं.स्त्री.(दे.)= छाछ रखने का छोटा पात्र

स्वाध्याय

* सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :–

(१) संजाल पूर्ण कीजिए :

वेदों में श्रीकृष्ण को कहा है

(२) कृति पूर्ण कीजिए :

श्री कृष्ण की महिमा का निरंतर गायन करने वाले

----

(३) कवि यहाँ और यह बनकर रहना चाहता है -----

- ---
- ---
- ---
- ---

(४) अ) पद्‌य में उल्लिखित पक्षी ---------, ---------

आ) कृष्ण द्‌वारा पहने हुए वस्त्र ---------, ---------

(५) पद्‌य में इस अर्थ में आए शब्द :

१. शोभा देता है = ______
२. ग्वाल-बालाएँ = ______
३. गोरस देने वाली = ______
४. शुक मुनि = ______

(६) १. निम्न शब्दों के भिन्न-भिन्न अर्थ लिखिए :

चोटी = ---------, =---------

व्यास = ---------, =---------

२. शब्द समूह के लिए एक शब्द लिखिए :

१. जिसके कोई खंड नहीं होते – ....
२. छाछ रखने का छोटा पात्र – ....
३. जिसका कोई अंत नहीं होता – ....
४. जो सदैव चलता रहता है – ....

(७) कृदंत, तद्‌धित शब्दों के मूल शब्द पहचानकर लिखिए :

झगड़ालू, मुस्कान, सांस्कृतिक, रसीला, खिलाड़ी, कहानी, जगमगाहट, सुखी

कृदंत-मूलशब्द	तद्‌धित-मूलशब्द

CH85JS

(८) किसी एक पद का सरल अर्थ लिखिए ।

७. प्रकृति संवाद

– रामदरश मिश्र

कुछ नहीं हो पा रहा है । समय ऐसे ही गुजरा जा रहा है । कभी गरदन का तनाव बेहद पीड़ित करता है, कभी दोनों कलाइयों में दर्द होने लगता है तो प्रकृतिस्थ नहीं रह पाता ।

रात भर दर्दों का आपस में संवाद होता रहता है, फिर भी न जाने किसकी दुआ है कि सो जाता हूँ । नींद आती रहती है, जाती रहती है और रह-रहकर टूटने के बावजूद उसमें लय बनी होती है ।

सुबह उठता हूँ तो थोड़ी ताजगी महसूस होती है । यदि सुबह को ठंडी हवा चल रही होती है तो तन-मन में ताजगी का स्पंदन महसूस होने लगता है । उठता हूँ तो सरस्वती जी घर के अनेक प्रभाती कार्य निपटा चुकी होती हैं और मुझे देखते ही चाय हाजिर कर देती हैं ।

नित्य कर्म से निवृत्त होकर और चाय पीकर आँगन और गैलरी में टहलने लगता हूँ । आज भी यही क्रम शुरू हुआ । सामने के बड़े गमले में गुंबद का आकार ग्रहण किए दवनों ने अपनी महक और हरीतिमा से मेरा मन अपनी ओर खींच लिया । मैंने उन्हें अपनी बाँहों में भर लिया । हथेलियाँ महक से गमगमा गईं । साँसों में महक गुनगुनाने लगी । शीतला माई के स्वागत में गाया जो गीत मैं बचपन में सुनता रहता था, वह मेरी यादों में जाग उठा, 'हमरे दुवरवाँ मइया दवना तरुववा हो'...एकाएक देखा कि पास के गमले में काली तुलसी जी मुसकरा रही हैं । 'प्रणाम माते' कहकर मैं उनके पास चला गया । कुछ देर उन्हें निहारता रहा और महसूस करता रहा कि मेरी रगों में उनका रस दौड़ रहा है । मेरी ही रगों में क्यों, पूरे परिवार की रगों में । 'ले लो' आवाज आई और मैंने आज की दवा के लिए कुछ पत्तियाँ उनसे माँग लीं । आँगन में स्थित पार्क की दुनिया बड़ी छोटी है । उसी में एक के बाद एक परस्पर पेड़-पौधे आलिंगित-से खड़े हैं । तुलसी से बतिया ही रहा था कि मीठी नीम ने हलके-से आवाज दी । उसने देखा, उसकी हरी-हरी पत्तियाँ हवा में हलके-हलके फरफरा रही थीं और वह फरफराहट मेरे भीतर उतर रही थी । उसने कहा, ''कई दिनों से मैं तुम्हारे चौके में नहीं गई । कढ़ी खानी छोड़ दी है, क्यों ?'' मैं हँसा-''नहीं-नहीं ऐसी बात नहीं है । हर चीज का अपना समय होता है न । तुम तो वैसे ही मुझे बहुत अच्छी लगती हो । पेट की बात छोड़ो, आँखों में तो तुम हरदम मोहक हरियाली बनकर छाई रहती हो ।''

चिड़ियाँ चहचहा उठीं । फिर समूह में फुर्र से उड़ीं और आकाश में पंखों व स्वरों की एक लय बन गईं, फिर वे लौट आईं । हाँ, उनके आश्रय की तरह

परिचय

जन्म : १९२४, गोरखपुर (उ.प्र.)
परिचय : डॉ. रामदरश मिश्र हिंदी के प्रतिष्ठित साहित्यकार हैं । आपकी साहित्यिक प्रतिभा बहुआयामी है । आपने कविता, कहानी, उपन्यास, आलोचना और निबंध जैसी प्रमुख विधाओं में लेखनी चलाई है । साथ-साथ आत्मकथा, यात्रावृत्त तथा संस्मरण भी लिखे हैं ।
प्रमुख कृतियाँ : 'पथ के गीत', 'पक गई है धूप', 'कंधे पर सूरज' (कविता संग्रह), 'हँसी ओठ पर आँखें नम हैं', 'तू ही बताए जिंदगी' (गजल संग्रह), 'स्मृतियों के छंद' (संस्मरण), 'पानी के प्राचीर', (उपन्यास), 'खाली घर', (कहानी संग्रह), 'बबूल और कैक्टस' (ललित निबंध) आदि ।

गद्य संबंधी

प्रस्तुत ललित निबंध में रामदरश मिश्र जी ने अपने घर के आँगन में स्थित पेड़-पौधों से बातचीत की है । पाठ में लेखक का पेड़-पौधों से लगाव, उनके प्रति अपनापन और अटूट रिश्ता दिखाया गया है ।

यह हरसिंगार का पेड़ कितना खुश हो रहा है । जैसे कह रहा हो,''आओ चिड़ियो, मेरी डाल-डाल पर फुदको और गाओ । आओ चिड़ियो, अपने मीठे-मीठे स्वरों से मुझे नहलाओ ।'' मैंने देखा, हरसिंगार नये पत्तों और टहनियों से लद गया है । जाड़े में खंखड़-सा हो जाता है और कभी-कभी डर लगता है कि यह सूख तो नहीं रहा है, लेकिन वसंत आते ही इसके भीतर सोई ऊर्जा जागने लगती है, प्राणरस छलकने लगता है और क्रमशः नई टहनियों तथा नये पत्तों के सौंदर्य से लद जाता है । मैं उसे देख रहा हूँ और लगता है, अब इसमें फूल आया, तब इसमें फूल आया । हाँ, यह हरसिंगार बहुत मस्त है । आषाढ़ में ही हलकी-हलकी हँसी उसमें फूटने लगती है, फिर शरद में तो कहना ही क्या ! तारों भरा आसमान बन जाता है । रात भर जगमग-जगमग करता रहता है और सुबह को अनंत फूलों के रूप में धरती पर बिछ जाता है । रात भर उसकी महक घर में टहलती रहती है । घर में ही क्यों, पास की गलियों और सड़कों पर भी वह घूमती-फिरती है और न जाने कितने लोगों की साँसों में बस जाती है । उसने अपनी महक से सबको खबर दे रखी है कि वह है, यहाँ है; यानी मेरे घर के आँगन में ।

''अरे वहीं अटके रहोगे, मुझसे बात नहीं करोगे ? चिड़ियाँ तो मेरे ऊपर भी खेलती हैं, गाती-चहचहाती हैं । फिर मेरी उपेक्षा क्यों ?'' ''नहीं-नहीं, अमरूद भाई, तुम्हारी उपेक्षा मैं कैसे कर सकता हूँ । तुम तो इस आँगन में हरसिंगार से पहले के नागरिक हो । दरअसल, तुम दोनों ने मिलकर जो रूप मंडप बनाया है, वह चिड़ियों का क्रीड़ा धाम है । तुम दोनों तो सटे हुए हो । चिड़ियाँ तुम्हारे ऊपर से उसके ऊपर, उसके ऊपर से तुम्हारे ऊपर आया-जाया करती हैं । उन्होंने तुम दोनों में कोई बँटवारा नहीं किया है और मैंने भी कहाँ किया है ? तुम दोनों का अस्तित्व हम सबके लिए कुछ अधिक महत्त्वपूर्ण है । वसंत आते ही तुम्हारी भी विरल डालियाँ नई पत्तियों और टहनियाँ से सघन होने लगती हैं और हरसिंगार तो पावस में फूलना शुरू करता है न । तुम तो चैत लगते ही बौराने लगते हो । महकते हुए नन्हे-नन्हे, सफेद-सफेद फूलों से तुम्हारा वजूद जगमगा उठता है और छोटे-छोटे फल, फूलों के भीतर से बढ़ने-झाँकने लगते हैं । धीरे-धीरे तुम्हारे फलों में मिठास आने लगती है और आषाढ़ आते-आते चिड़ियों की चहचहाहट में तुम्हारे फलों की मिठास भर जाती है । वे तुम्हारी डाल-डाल पर नाच-नाचकर भोज महोत्सव मनाने लगती हैं और हम लोग भी तो तुम्हारे फलों का प्रसाद पाते रहते हैं । कितने बड़े-बड़े और मिठास भरे होते हैं तुम्हारे फल ।''

''अरे महाशय, मैं भी तो हूँ । इस पेड़ के नीचे हूँ तो क्या हुआ, हूँ तो ।'' ''अरे-अरे अड़हुल प्यारे, मैं तुम्हें कैसे भूल सकता हूँ ? लाल-लाल फूलों का मंगल कलश उठाए मेरे समय को रँगते रहते हो और मुझे एक प्यारी-प्यारी

पठनीय

फूलों से बनने वाली औषधियों की जानकारी अंतरजाल पर पढ़िए ।

लेखनीय

'बढ़ती आबादी, कटते वन, प्रदूषण से प्रभावित होता जन जीवन' पर अपने विचार लिखिए ।

सुबह मिले, इसमें अपनी प्यारी भूमिका निभाते हो । आभारी हूँ दोस्त !'

देखा, कुछ दूर पर सहिजन झूम रहा था । जैसे बुला रहा है । 'आता हूँ भाई ! कहो कैसे हो ? तुम तो सदाबहार हो भाई ! और पेड़ तो वसंत में फूलते हैं, तुम तो बारहों मास सुगंध भरे फूलों से लदे रहते हो और उन फूलों पर मधुमक्खियाँ व भौंरे गुनगुनाया करते हैं । जाड़ों में जब मैं तुम्हारे पास धूप में बैठता हूँ, तब तुम्हारी मतवाली सुरभि से नहाता रहता हूँ । भीतर कविता गुनगुनाती है, बाहर तुम्हारे फूल और बारहों मास तुम फलियों से लदे होते हो। वे फलियाँ मेरे घर से लेकर पड़ोस तक अपना स्वाद बाँटती रहती हैं ।'

''आप ऊँचे लोगों को ही देखते रहेंगे ? हम छोटे हैं तो क्या,हम भी तो हैं ?''

देखो, बेला के फूल मुझे उलाहना दे रहे हैं और उनकी पंक्ति में कई-कई गमलों में तरह-तरह के फूल और पौधे विराजमान हैं । वे सभी मेरी ओर देख रहे हैं और जैसे संवाद को आतुर हैं । मैंने कहा, ''नहीं मेरे प्यारे फूलो, मैं तो स्वयं छोटा आदमी हूँ और छोटे लोगों के बीच ही जीवन यात्रा की है । उन्हें भरपूर प्यार दिया है और पाया है । तुम लोग तो मेरे परिवार के सदस्य हो । तुम्हारी आँखों में आँखें डालकर तुमसे हार्दिक संवाद करता रहता हूँ ।'' तीन गमलों में बेला के पौधे विराजमान हैं । वे सफेद-सफेद फूलों से जगमगा रहे हैं । फूलों से मादक सुगंध की हलकी-हलकी धारा बह रही है और मेरी साँसों में समा रही है । बेला इसी मौसम में फूलता है । एक साथ न जाने कितने फूल उसके भीतर से फूट पड़ते हैं । लेकिन क्या विडंबना है कि शाम होते-होते फूल मुरझा जाते हैं । रात को फिर दूसरे फूल खिलते हैं । इसलिए जब मैं सुबह-सुबह इनको नेत्रों में भर लेता हूँ । देर तक इनके पास खड़ा होता कि एक मुक्तक मेरे भीतर रेंगने लगता है-

''गुंचे, तेरी जिंदगी पर दिल हिलता,
बस एक तबस्सुम के लिए खिलता है ।
हँस के गुंचे ने कहा-मेहरबाँ,
यह तबस्सुम भी किसे कहाँ मिलता है ?''

कुछ पौधे तो चुपचाप मुसकरा रहे थे । एक पौधा खिल-खिलाकर हँस रहा था । खिल-खिलाते हुए बोला, ''कैसे हो दोस्त ?' सहिजन के ऊपर से आवाज गिलोय लता की थी । ''मुझे ही भूल गए दोस्त ।'' नहीं मेरी गिलोय बहना, मैं आते-जाते देखता ही रहता हूँ और तुम्हारी हरी-हरी फलियाँ मेरी आँखों को सुख देती हैं । एक तुम्हीं तो हो जो कहती है -''शरीर में कोई भी विकार उत्पन्न हो, घबराना नहीं ।'' बातें करते-करते गेट आ गया । गिलोय ने कहा-''ठीक है, जाओ, घूम आओ ।'' जब मैं गेट से बाहर निकला तब मैं भरा-पूरा अनुभव कर रहा था ।

— ० —

श्रवणीय

'वनभोज' महोत्सव का आयोजन कब, क्यों और कहाँ किया जाता है, इसके बारे में बड़ों से सुनिए तथा कक्षा में सुनाइए।

संभाषणीय

'प्रकृति हर पल नया रूप धारण करती है' इससे संबंधित अपने आस-पास के उदाहरणों को देकर अपने मित्रों से संवाद कीजिए ।

शब्द संसार

स्पंदन पुं.सं. (सं.) = रह-रहकर धीरे-धीरे हिलना या काँपना, धड़कन
निवृत्त वि.(सं.)= अवकाश प्राप्त, मुक्त होकर
हरीतिमा स्त्री.सं.(सं.)= हरियाली
अस्तित्व पुं.सं.(सं.) = विद्‌यमानता, होने का भाव
सहिजन पुं.सं.(सं.) = एक वृक्ष; जिसकी लंबी फलियों की तरकारी बनती है ।
उलाहना स्त्री.सं.(सं.)= शिकायत
विडंबना स्त्री.सं.(सं.)= हँसी, उपहास
गुँचा पुं.सं.(फा.) = कली
मेहरबाँ वि.(फा.)= कृपालु
तबस्सुम स्त्री.सं(अ.)= मुस्कान
विकार पुं.सं.(सं.) = दोष, प्रकृति, मनोवेग

मुहावरे

यादों में जाग उठना = पुरानी यादें ताजा हो जाना
भरा-पूरा अनुभव करना = संतुष्ट हो जाना

स्वाध्याय

*** सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :-**

(१) संजाल पूर्ण कीजिए :

दवनों के दर्शन से लेखक की प्रसन्नता के लक्षण

(२) पाठ में आई वनस्पतियों का वर्गीकरण कीजिए :

अ.क्र	लताएँ	पौधे	वृक्ष

(३) कृति पूर्ण कीजिए :

हरसिंगार में ऋतुओं के अनुसार होने वाले बदलाव

वसंत	
शरद	

(४) उपसर्ग, प्रत्यय लगाकर नये शब्द बनाइए :

उपसर्ग	शब्द	प्रत्यय युक्त
--------	समय	--------
--------	बल	--------
--------	प्रभाव	--------
--------	ज्ञान	--------

(५) कृति पूर्ण कीजिए :

अड़हुल की विशेषताएँ

(६) क्रमानुसार ऋतुओं के नाम लिखिए :

१	वसंत
२	
३	
४	
५	
६	

CHH1LF

८. ऐसा वसंत कब आएगा ?

–जगन्नाथ प्रसाद 'मिलिंद'

ऐसा वसंत कब आएगा ?
जब मानवता के वन-उपवन का
हर प्रसून खिल पाएगा ?
ऐसा वसंत कब आएगा ?
लड़कर अभाव के पतझड़ से,
नव सर्जन रण में विजयी बन,
सुख-सुविधा रस के सम वितरण का
पा नवयौवनमय जीवन,
हर मनुज-कुसुम संतोषमयी
मुस्कान मधुर बरसाएगा
ऐसा वसंत कब आएगा ?
ऐसे वसंत कुछ चले गए,
प्रासादों ही का नहीं, कुटी का
आँगन भी तो है आँगन,
सुख-दुख पर होता है समान
हर मानव के उर में स्पंदन;
सबके प्राणों का पुलक बने,
ऐसा क्षण कौन बुलाएगा ?
ऐसा वसंत कब आएगा ?
कवि के मानस में स्वप्न बना
छाया था जो सीमित वसंत,
होगा जन-जन के जीवन में
साकार, विपुल जब वह अनंत,
जब मनुजों का जग, भू पर ही
अभिनव 'नंदन' बन जाएगा
ऐसा वसंत कब आएगा ?
सबका समान रवि है, शशि है,
सबका समान है मुक्त पवन;
सारे मानव यदि मानव हैं;
सबके समान हों भूमि-गगन
कब नवयुग ऐसी नव संस्कृति,
नव विश्व व्यवस्था लाएगा ?
ऐसा वसंत कब आएगा ?

परिचय

जन्म : १९०७, ग्वालियर (म.प्र.)
मृत्यु : १९८६
परिचय : जगन्नाथ प्रसाद 'मिलिंद' जी हिंदी, उर्दू, बांग्ला, मराठी, गुजराती और अंग्रेजी के ज्ञाता थे । आपने शांति निकेतन तथा महिला आश्रम वर्धा में अध्यापन के साथ-साथ भारत के स्वतंत्रता आंदोलन तथा राजनीति में भी भाग लिया ।
प्रमुख कृतियाँ : 'अंतिमा', 'पूर्णा', 'बलिपथ के गीत', 'नवयुग के गान', 'मुक्ति के स्वर' (काव्य संग्रह) आदि ।

पद्य संबंधी

प्रस्तुत गीत में 'मिलिंद' जी का कहना है कि सुख-सुविधाओं पर अमीर-गरीब सबका समान अधिकार है । जब सुख-दुख का सभी पर समान प्रभाव पड़ता है तो राष्ट्र-समाज के सुखों में भी महलों एवं कुटियों का समान अधिकार होना चाहिए । कवि का मानना है कि जिस दिन ऐसा होगा; उसी दिन वास्तविक वसंत आ सकेगा ।

सबको दे भोजन, वसन, भवन
जिससे जीवन में रस छाए,
खिल जाएँ अधर, हँस दें आँखें,
ऐसा वसंत जग में आए !
ऐसा वसंत तो ग्रीष्म-शिशिर
में भी वसंत कहलाएगा !
ऐसा वसंत कब आएगा ?

—— ० ——

शब्द संसार

प्रसून पुं.सं.(सं.) = फूल
सर्जन पुं.सं.(सं.) = निर्मिति, रचना
रण पुं.सं.(सं.) = लड़ाई, युद्ध
पुलक पुं.सं.(सं.) = प्रेम, हर्ष

* सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :-

(१) संजाल पूर्ण कीजिए :

कवि ऐसा वसंत चाहता है ।

(२) पर्यायवाची शब्द लिखिए :

१. अधर
२. आँखें

(३) अंतिम सात पंक्तियों का भावार्थ लिखिए ।

स्वाध्याय

* सूचनानुसार कृतियाँ कीजिए :-

(१) तुलना कीजिए :

प्राकृतिक वसंत	कवि मन की कल्पना का वसंत

(२) उत्तर लिखिए :

क. वसंत के अलावा पद्य में प्रयुक्त दो ऋतुएँ = ________ , ________
ख. सबके लिए समान है = ________ , ________

(३) निम्न शब्दों के लिए कविता में प्रयुक्त समानार्थी शब्द चुनकर लिखिए :

कमी = ________ मनुष्य = ________
हँसी = ________ चाँद = ________
फूल = ________ वस्त्र = ________
महल = ________ मन = ________

(४) शब्द समूह के लिए एक शब्द लिखिए :

१. जिसकी कोई निश्चित सीमा है ☐
२. जिसका शोषण किया जाता है ☐
३. बिना थके ☐
४. जिसका अंत नहीं ☐

भाषा बिंदु

(१) निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ लिखकर सार्थक वाक्यों में प्रयोग कीजिए ।

१. खाली हाथ लौटना = ----------------------------
वाक्य : = ____

२. बिना सिर-पैर की बातें करना = ----------------------------
वाक्य : = ____

३. यादों में जाग उठना = ----------------------------
वाक्य : = ____

४. भरापूरा अनुभव करना = ----------------------------
वाक्य : = ____

५. खाली हाथ लौटना = ----------------------------
वाक्य : = ____

(२) निम्नलिखित वाक्यों के अधोरेखांकित शब्दसमूह के लिए कोष्ठक में दिए मुहावरों में से उचित मुहावरे का चयन करके वाक्य फिर से लिखिए :

[चौपट हो जाना, निछावर करना, नाक-भौं सिकोड़ना, मन मारना, फूला न समाना, दंग रह जाना]

- सरकस की गुड़ियों के करतब देखकर दर्शक <u>आश्चर्य चकित हो</u> गए ।
  ....
- अचानक पिता जी द्‍वारा पर्यटन पर जाने का निर्णय सुनकर बच्चे <u>बहुत आनंदित हुए</u> ।
  ....

(३) पाठों में आए सभी प्रकार के अव्ययों को ढूँढ़कर उनसे प्रत्येक प्रकार के दस-दस वाक्य लिखिए ।

उपयोजित लेखन

मुद्दों के आधार पर कहानी लेखन :-

CHQHN3

एक युवक → गलत संगति के चलते बुरी आदतों का शिकार होना → पुलिस के छापे में गिरफ्तार होना

पूछताछ में पुलिस अधिकारी का सच्चाई जानना → समुपदेशन कर उचित सलाह देना → रिहा होकर युवक का पुरानी संगति छोड़कर छोटा-मोटा व्यवसाय शुरू करना

धीरे-धीरे बड़ा व्यवसायी बनना → अपने जैसे युवकों को नौकरी देना → शीर्षक

व्याकरण विभाग

शब्द भेद

(१) विकारी शब्द और उनके भेद

संज्ञा	सर्वनाम	विशेषण	क्रिया
जातिवाचक	पुरुषवाचक	गुणवाचक	सकर्मक
व्यक्तिवाचक	निश्चयवाचक अनिश्चयवाचक	परिमाणवाचक १.निश्चित २.अनिश्चित	अकर्मक
भाववाचक	निजवाचक	संख्यावाचक १. निश्चित २. अनिश्चित	संयुक्त
द्रव्यवाचक	प्रश्नवाचक	सार्वनामिक	प्रेरणार्थक
समूहवाचक	संबंधवाचक	-	सहायक

(२) अविकारी शब्द(अव्यय)

- क्रियाविशेषण अव्यय
- संबंधसूचक अव्यय
- समुच्चयबोधक अव्यय
- विस्मयादिबोधक अव्यय

(३) क्रिया के काल

- वर्तमान काल
  - सामान्य
  - अपूर्ण
  - पूर्ण
- भूतकाल
  - सामान्य
  - अपूर्ण
  - पूर्ण
- भविष्य काल
  - सामान्य
  - अपूर्ण
  - पूर्ण

(४) संधि

- स्वर संधि
- व्यंजन संधि
- विसर्ग संधि

(५) वाक्य के प्रकार

रचना की दृष्टि से

१. साधारण
२. मिश्र
३. संयुक्त

अर्थ की दृष्टि से

१. विधानार्थक
२. निषेधार्थक
३. प्रश्नार्थक
४. आज्ञार्थक
५. विस्मयादिबोधक
६. संदेशसूचक

(६) मुहावरों का प्रयोग/चयन करना

(७) शब्दों का शुद्धीकरण

शब्द संपदा – (पाँचवीं से नौवीं तक)

शब्दों के लिंग, वचन, विलोमार्थक, समानार्थी, पर्यायवाची, शब्दयुग्म, अनेक शब्दों के लिए एक शब्द, समोच्चारित मराठी-हिंदी शब्द, भिन्नार्थक शब्द, कठिन शब्दों के अर्थ, उपसर्ग-प्रत्यय पहचानना/अलग करना, कृदंत-तद्धित बनाना, मूल शब्द अलग करना ।

पत्रलेखन

अपने विचारों, भावों को शब्दों के द्‌वारा लिखित रूप में अपेक्षित व्यक्ति तक पहुँचा देने वाला साधन है पत्र ! हम सभी 'पत्रलेखन' से परिचित हैं ही । आज-कल हम नई-नई तकनीक को अपना रहे हैं । संगणक, भ्रमण ध्वनि, अंतरजाल, ई-मेल, वीडियो कॉलिंग जैसी तकनीक को अपने दैनिक जीवन से जोड़ने का प्रयास कर रहे हैं । दूरध्वनि, भ्रमणध्वनि के आविष्कार के बाद पत्र लिखने की आवश्यकता कम महसूस होने लगी है फिर भी अपने रिश्तेदार, आत्मीय व्यक्ति, मित्र/सहेली तक अपनी भावनाएँ प्रभावी ढंग से पहुँचाने के लिए पत्र एक सशक्त माध्यम है । पत्रलेखन की कला को आत्मसात करने के लिए अभ्यास की आवश्यकता होती है । अपना कहना (माँग/शिकायत/अनुमति/विनती/आवेदन) उचित तथा कम-से-कम शब्दों में संबंधित व्यक्ति तक पहुँचाना, अनुरूप भाषा का प्रयोग करना एक कौशल है । अब तक हम जिस पद्‌धति से पत्रलेखन करते आए हैं, उसमें नई तकनीक के अनुसार अपेक्षित परिवर्तन करना आवश्यक हो गया है । ।

पत्रलेखन में भी आधुनिक तंत्रज्ञान/तकनीक का उपयोग करना समय की माँग है । आने वाले समय में आपको ई-मेल भेजने के तरीके से भी अवगत होना है । अतः इस वर्ष से पत्र के नये प्रारूप के अनुरूप ई-मेल की पद्‌धति अपनाना अपेक्षित है ।

❊ पत्र लेखन के मुख्य दो प्रकार हैं, औपचारिक और अनौपचारिक । (पृष्ठ क्र. २३, ४१)

औपचारिक पत्र

• प्रति लिखने के बाद पत्र प्राप्तकर्ता का पद और पता लिखना आवश्यक है । • पत्र के विषय तथा संदर्भ का उल्लेख करना आवश्यक है । • इसमें महोदय/महोदया शब्द द्‌वारा आदर प्रकट किया जाता है । • निश्चित तथा सही शब्दों में आशय की प्रस्तुति करना अपेक्षित है । • पत्र का समापन करते समय बायीं ओर पत्र भेजने वाले का नाम, पता लिखना चाहिए। •ई-मेल आईडी देना आवश्यक है ।

अनौपचारिक पत्र

• संबोधन तथा अभिवादन रिश्तों के अनुसार आदर के साथ करना चाहिए । • प्रारंभ में जिसको पत्र लिखा है उसका कुशलक्षेम पूछना चाहिए । • लेखन स्नेह सम्मान सहित प्रभावी शब्दों और विषय विवेचन के साथ होना चाहिए। • रिश्ते के अनुसार विषय विवेचन में परिवर्तन अपेक्षित है। • इस पत्र में विषय उल्लेख आवश्यक नहीं है । • पत्र का समापन करते समय बायीं ओर पत्र भेजने वाले के हस्ताक्षर, नाम तथा पता लिखना है ।

टिप्पणी : पत्रलेखन में अब तक लिफाफे पर पत्र भेजने वाले (प्रेषक) का पता लिखने की प्रथा है । ई-मेल में लिफाफा नहीं होता है । अब पत्र में ही पता लिखना अपेक्षित है ।

पत्र का प्रारूप
(औपचारिक पत्र)

दिनांक :
प्रति,
....
....

विषय ....
संदर्भ : ....

महोदय,

विषय विवेचन ....
....
....

भवदीय/भवदीया,
नाम : ....
पता : ....
....

ई-मेल आईडी : ....

गद्य आकलन (प्रश्न निर्मिति)

• भाषा सीखकर प्रश्नों की निर्मिति करना एक महत्त्वपूर्ण भाषाई कौशल है । पाठ्यक्रम में भाषा कौशल को प्राप्त करने के लिए प्रश्ननिर्मिति घटक का समावेश किया गया है । • दिए गए परिच्छेद (गद्यांश) को पढ़कर उसी के आधार पर पाँच प्रश्नों की निर्मिति करनी है । प्रश्नों के उत्तर एक वाक्य में हों ऐसे ही प्रश्न बनाए जाएँ ।

✲ **प्रश्न ऐसे हों :** • तैयार प्रश्न सार्थक एवं प्रश्न के प्रारूप में हों । • प्रश्नों के उत्तर दिए गए निर्मित गद्यांश में हों । • रचित प्रश्न के अंत में प्रश्नचिह्न लगाना आवश्यक है । • प्रश्न रचना का कौशल प्राप्त करने के लिए अधिकाधिक अभ्यास की आवश्यकता है । • प्रश्न का उत्तर नहीं लिखना है । • प्रश्न रचना पूरे गद्यांश पर होनी आवश्यक है ।

✲ **प्रश्न निर्मिति के लिए आवश्यक प्रश्नवाचक शब्द निम्नानुसार हैं :**

उपयुक्त प्रश्नवाचक शब्द → कौन, कितना, किसका, कब, कौन-सा/से/सी, कहाँ, क्या, क्यों, कैसे

निबंध लेखन

निबंध लेखन एक कला है । निबंध का शाब्दिक अर्थ होता है 'सुगठित अथवा 'सुव्यवस्थित रूप में बँधा हुआ' । साधारण गद्य रचना की अपेक्षा निबंध में रोचकता और सजीवता पाई जाती है । निबंध गद्य में लिखी हुई रचना होती है, जिसका आकार सीमित होता है । उसमें किसी विषय का प्रतिपादन अधिक स्वतंत्रतापूर्वक और विशेष अपनेपन और सजीवता के साथ किया जाता है । एकसूत्रता, व्यक्तित्व का प्रतिबिंब, आत्मीयता, कलात्मकता निबंध के तत्त्व माने जाते हैं । इन तत्त्वों के आधार पर निबंध की रचना की जाती है ।

निबंध लिखते समय निम्नलिखित बातों की ओर ध्यान दें : • प्रारंभ, विषय विस्तार, समापन इस क्रम से निबंध लेखन करें । • विषयानुरूप भाषा का प्रयोग करें । • भाषा प्रवाही, रोचक और मुहावरेदार हो । • कहावतों, सुवचनों का यथास्थान प्रयोग करें । • शुद्ध, सुवाच्य और मानक वर्तनी के अनुसार निबंध लेखन आवश्यक है । • सहज, स्वाभाविक और स्वतंत्र शैली में निबंध की रचना हो । • विचार स्पष्ट तथा क्रमबद्ध होने आवश्यक हैं। • निबंध की रचना करते समय शब्द चयन, वाक्य-विन्यास की ओर ध्यान आवश्यक देना है । • निबंध लेखन में विषय को प्रतिपादित करने की पद्धति के साथ ही कम-से-कम चार अनुच्छेदों की रचना हो । • निबंध का प्रारंभ आकर्षक और जिज्ञासावर्धक हो । • निबंध के मध्यभाग में विषय का प्रतिपादन हो । निबंध का मध्यभाग महत्त्वपूर्ण होता है इसलिए उसमें नीरसता न हो । • निबंध का समापन विषय से संबंधित, सुसंगत, उचित, सार्थक विचार तक ले जाने वाला हो ।

आत्मकथनात्मक निबंध लिखते समय आवश्यक तथा महत्त्वपूर्ण बातें : • आत्मकथन अर्थात एक तरह का परकाया प्रवेश है । • किसी वस्तु, प्राणी, पक्षी, व्यक्ति की जगह पर स्वयं को स्थापित/आरोपित करना होता है । • आत्मकथनात्मक लेखन की भाषा प्रथमपुरुष, एकवचन में हो । जैसे - मैं .... बोल रहा/रही हूँ । • प्रारंभ में विषय से संबंधित उचित प्रस्तावना, सुवचन, घटना, प्रसंग संक्षेप में लिख सकते हैं सीधे 'मैं... हूँ' से भी प्रारंभ किया जा सकता है ।

वैचारिक निबंध लिखते समय आवश्यक बातें : • वैचारिक निबंध लेखन में विषय से संबंधित में जो विचार होते हैं, उनको प्रधानता दी जाती है । • वर्णन, कथन, कल्पना से बढ़कर विचार महत्त्वपूर्ण होते हैं । • विचार के पक्ष-विपक्ष में लिखना आवश्यक होता है । • विषय के संबंध में विचार, मुद्दे, मतों की तार्किक प्रस्तुति महत्त्वपूर्ण होती है । • पूरक पठन, शब्दसंपदा, विचारों की संपन्नता जितनी अधिक होती है उतना ही वैचारिक निबंध लिखना हमारे लिए सहज होता है ।

उदा. :

निबंध लेखन प्रकार

- आत्मकथनात्मक
  - १.फटी पुस्तक की आत्मकथा
  - २. मैं हिमालय बोल रहा हूँ...
- वैचारिक
  - १. समाचार पत्र
  - २. विज्ञान के चमत्कार
- वर्णनात्मक
  - १. ऐतिहासिक स्थल की सैर
  - २. नदी किनारे दो घंटे
- चरित्रात्मक
  - १. मेरा प्रिय गायक
  - २. मेरा प्रिय खिलाड़ी
- कल्पनाप्रधान
  - १. यदि मोबाइल न होता तो...
  - २. यदि ऐनक न होती तो ...

कहानी लेखन

कहानी सुनना-सुनाना आबाल वृद्धों के लिए रुचि और आनंद का विषय होता है । कहानी लेखन विद्यार्थियों की कल्पनाशक्ति, नवनिर्मिति व सृजनशीलता को प्रेरणा देता है । इसके पूर्व की कक्षाओं में आपने कहानी लेखन का अभ्यास किया है । कहानी अपनी कल्पना और सृजनशीलता से रची जाती है । कहानी का मूलकथ्य (कथाबीज) उसके प्राण होते हैं । मूल कथ्य के विस्तार के लिए विषय को पात्र, घटना, तर्कसंगत विचारों से परिपोषित करना लेखन कौशल है । इसी लेखन कौशल का विकास करना कहानी लेखन का उद्देश्य है । कहानी लेखन का मनोरंजन तथा आनंदप्राप्ति भी उद्देश्य है ।

कहानी लेखन में निम्न बातों की ओर विशेष ध्यान दें : • शीर्षक, कहानी के मुद्दों का विस्तार और कहानी से प्राप्त सीख, प्रेरणा, संदेश ये कहानी लेखन के अंग हैं । • कोई भी कहानी घटना घटने के बाद लिखी जाती है, अतः कहानी भूतकाल में लिखी जाए । कहानी के संवाद प्रसंगानुकूल वर्तमान या भविष्यकाल में हो सकते हैं । संवाद अवतरण चिह्न में लिखना अपेक्षित है । • कहानी लेखन की शब्दसीमा सौ शब्दों तक हो । • कहानी के आरंभ में शीर्षक लिखना आवश्यक होता है । शीर्षक छोटा, आकर्षक, अर्थपूर्ण और सारगर्भित होना चाहिए । • कहानी में कालानुक्रम, घटनाक्रम और प्रवाह होना आवश्यक है । प्रत्येक मुद्दे या शब्द का अपेक्षित विस्तार आवश्यक है । • घटनाएँ धाराप्रवाह अर्थात एक दूसरे से शृंखलाबद्ध होनी चाहिए । • कहानी के प्रसंगानुसार वातावरण निर्मिति होनी चाहिए । उदा. यदि जंगल में कहानी घटती है तो जंगल का रोचक, आकर्षक तथा सही वर्णन अपेक्षित है । • कहानी के मूलकथ्य/विषय (कथाबीज) के अनुसार पात्र व उनके संवाद, भाषा पात्रानुसार प्रसंगानुकूल होने चाहिए । • प्रत्येक परिसर/क्षेत्र की भाषा एवं भाषा शैली में भिन्नता/विविधता होती है । इसकी जानकारी होनी चाहिए । • अन्य भाषाओं के उद्धरण, सुवचनों आदि के प्रयोग से यथासंभव बचे । • कहानी लेखन में आवश्यक विरामचिह्नों का प्रयोग करना न भूलें । • कहानी लेखन करते समय अनुच्छेद बनाएँ । जहाँ तक विचार, एक घटना समाप्त हो, वहाँ परिच्छेद समाप्त करें । • कहानी का विस्तार करने के लिए उचित मुहावरे, कहावतें, सुवचन, पर्यायवाची शब्द आदि का प्रयोग करें ।

कहानी लेखन–[शब्द सीमा अस्सी से सौ तक]

कहानी लेखन के प्रकार

(१) शब्दों के आधार पर
(२) मुद्दों के आधार पर
(३) सुवचन/कहावत के आधार पर

विज्ञापन

वर्तमान युग स्पर्धा का है और विज्ञापन इस युग का महत्वपूर्ण अंग है । उत्कृष्ट विज्ञापन पर उत्पाद की बिक्री का आँकड़ा निर्भर करता है । आज संगणक तथा सूचना प्रौद्योगिकी के युग में, अंतरजाल (इंटरनेट) एवं भ्रमणध्वनि (मोबाइल) क्रांति के काल में विज्ञापन का क्षेत्र विस्तृत होता जा रहा है । विज्ञापनों के कारण किसी वस्तु, समारोह, शिविर आदि के बारे में पूरी जानकारी आसानी से समाज तक पहुँच जाती है । लोगों के मन में रुचि निर्माण करना, ध्यान आकर्षित करना विज्ञापन का मुख्य उद्देश्य होता है ।

विज्ञापन लेखन करते समय निम्न मुद्दों की ओर ध्यान दें : • कम-से-कम शब्दों में अधिकाधिक आशय व्यक्त हों । • विज्ञापन की ओर सभी का ध्यान आकर्षित हो, अतः शब्दरचना, भाषा शुद्ध हो । • जिसका विज्ञापन करना है उसका नाम स्पष्ट और आकर्षक ढंग से अंकित हो । • विषय के अनुरूप रोचक शैली हो । आलंकारिक, काव्यमय, प्रभावी शब्दों का उपयोग करते हुए विज्ञापन अधिक आकर्षक बनाएँ । • ग्राहकों की बदलती रुचि, पसंद, आदत, फैशन एवं आवश्यकताओं का प्रतिबिंब विज्ञापन में परिलक्षित होना चाहिए । • विज्ञापन में उत्पाद की गुणवत्ता महत्वपूर्ण होती है, अतः छूट का उल्लेख करना हर समय आवश्यक नहीं है । • विज्ञापन में संपर्क स्थल का पता, संपर्क (मोबाइल नंबर, ई-मेल आईडी) का स्पष्ट उल्लेख करना आवश्यक है । • विज्ञापन केवल पेन से लिखें । • पेन्सिल, स्केच पेन का उपयोग न करें । • चित्र, डिजाइन बनाने की आवश्यकता नहीं है । • विज्ञापन की शब्द मर्यादा पचास से साठ शब्दों तक अपेक्षित है । विज्ञापन में आवश्यक सभी मुद्दों का समावेश हो ।

निम्नलिखित जानकारी के आधार पर आकर्षक विज्ञापन तैयार कीजिए :

ATM के लिए सुरक्षा रक्षक की आवश्यकता
- कालावधि
- शैक्षिक योग्यता
- आयु सीमा
- संपर्क

भावार्थः पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. १४ : पहली इकाई, पाठ– साखी – संत कबीर

- केवल शरीर से बड़ा होना पर्याप्त नहीं है, खजूर का पेड़ भी बहुत ऊँचा होता है पर न तो राहगीरों को उसकी छाया का लाभ मिलता है और न ही उसके फल वे चख पाते हैं क्योंकि वे बहुत ऊपर लगे होते हैं । बड़प्पन तो इसमें है कि आपके बड़े होने का औरों को लाभ मिले ।
- गुरु और शिष्य की मनोवृत्ति पर संत कबीर का कहना है कि शिष्य ऐसा होना चाहिए जिसमें गुरु दक्षिणा के रूप में गुरु को अपना सर्वस्व देने की मनोवृत्ति हो । इसी प्रकार गुरु ऐसा होना चाहिए जिसमें शिष्य से कुछ भी न लेने की मनोवृत्ति हो ।
- संत कबीर कहते हैं कि सज्जन व्यक्ति की संगति इत्र बेचने वाले की सुगंध की तरह होती है । इत्र बेचने वाला हमें कुछ दे या न दे, फिर भी उसके पास रहने से सुगंध मिलती ही है ।
- कमजोर व्यक्ति को नहीं सताना चाहिए उनकी बददुआ बड़ी असरदार होती है । जैसे लुहार की धौंकनी भले ही निर्जीव हो पर उससे निकलने वाली हवा रूपी श्वास से लोहा भी पिघल जाता है ।
- गुरु कुम्हार की तरह होता है और शिष्य घड़े के समान होता है । जिस प्रकार कुम्हार घड़े को भीतर से एक हाथ से सहारा और बाहर दूसरे हाथ से थपथपाकर घड़े को सही आकार देता है उसी प्रकार गुरु भी शिष्य को सहारा और चोट देकर आकार देता है ।
- जिसपर सर्वशक्तिमान की कृपा हो उसको कोई क्षति नहीं पहुँचा सकता । सारा संसार भी यदि बैरी हो जाए तो भी उसका बाल भी बाँका नहीं हो सकता ।
- हे प्रभु ! तू मेरी आँखों में आकर बस जा । मैं तुझे आँखों में बंद कर लूँगा । न मैं किसी और को देखूँगा न तुझे किसी और को देखने दूँगा ।
- मुझे मेरे ईश्वर की महिमा हर जगह दिखाई देती है, उस अद्‌भुत महिमा को देखने जब मैं गया तो मैं भी उसी में विलीन हो गया ।
- जिस प्रकार कस्तूरी हिरण की नाभि में ही होती है और उसकी सुगंध से मस्त होकर हिरण पूरे वन प्रांत में उसे खोजता फिरता है, उसी प्रकार हमारा ईश्वर तो हमारे ही भीतर बसा है और हम उसे न जाने कहाँ–कहाँ ढूँढ़ते फिरते हैं ।
- अनमोल रत्न पाने के लिए पानी की गहराई में जाना ही पड़ता है । जो व्यक्ति डूबने से डरता है, वह किनारे ही बैठा रह जाता है ।
- जो तेरे लिए काँटे बोता है उसके लिए तू फूल बो । तेरे बोए फूल से तो तुम्हारा आँगन महक उठेगा पर उसको काँटो के बदले त्रिशूल का कष्ट मिलेगा ।

०

भावार्थः पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. ४९ : दूसरी इकाई, पाठ– अति सोहत स्याम जू–रसखान

- कृष्ण प्रेम में सराबोर होकर कवि रसखान अपने आराध्य से प्रार्थना करते हुए कहते हैं कि अगले जन्म में यदि मुझे मनुष्य बनाएँ तो गोकुल गाँव का ग्वाला ही बनाना । यदि पशु बनाएँ तो सदा नंद की गायों के बीच चरने वाला पशु बनाना । पत्थर के रूप में जन्म देना हो तो उसी पर्वत का पत्थर बनाना जिसे इंद्र के कारण कृष्ण ने अपनी उँगली पर धारण कर लिया था और यदि पंछी बनाएँ तो यमुना के किनारे कदंब की डाली पर मेरा बसेरा हो ।
- धूल से सने हुए श्याम सलोने के सिर पर सुंदर चोटी शोभायमान हो रही है । पीला वस्त्र धारण कर वे पूरे आँगन में खाते–खेलते घूम रहे हैं । उनके पैरों में पड़ी पैंजनिया बज रही है । कवि रसखान कहते हैं कि उनकी छवि को निहारकर उनके अनुपम सौंदर्य पर करोड़ों की निधि निछावर है । वह कौआ कितना भाग्यशाली है जो प्रभु के हाथ से माखन–रोटी को ले उड़ा है ।
- प्रभु के सिर पर मोर मुकुट शोभायमान है उसी तरह सिर पर बड़ी सुंदर पगड़ी लपेट रखी है । मस्तक पर गोरज और हृदय पर वनमाला शोभित हो रही है । कवि रसखान कहते हैं कि प्रभु के इस सुंदर रूप को निहारकर आँखें बौरा गई हैं । मुँदी हुई आँखों को देखकर ग्वाले पुकारकर हँस रहे हैं । कह रहे हैं पलकों के घूँघट खोल दे, पर पलकें कैसे खोल दें उन आँखों में तो प्रभु की मूर्ति बस गई है ।
- शेषनाग, गणेश, महेश, दिनेश और सुरेश जिनका निरंतर गुणगान करते हुए जिन्हें अनादि व अनंत बताते हैं । साथ ही जिन्हें अखंड, अछेद, अभेद व सुबेद बताते हैं । नारद मुनि से लेकर शुक व्यास तक सभी उनके नाम का निरंतर जाप करते रहते हैं फिर भी कोई उनका पार नहीं पा सका है । ऐसे मेरे प्रभु अपने बाल रूप में इतने सरल हो गए हैं कि ग्वालिनें उन्हें पात्र भर छाछ का प्रलोभन देकर मन मोहक नाच नचवा लेती हैं ।

०

महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ, पुणे– ४११००४.

हिंदी लोकवाणी, इयत्ता दहावी (हिंदी भाषा)

₹ 42.00